16, III

त्रैमासिक

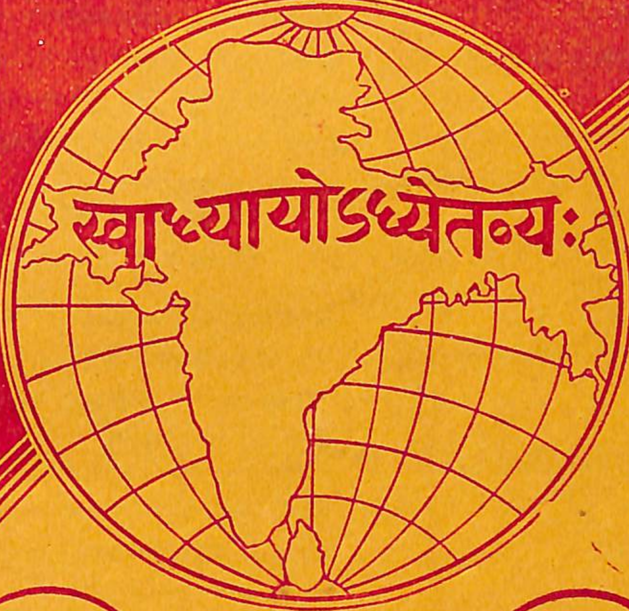
श्रीः

श्रीस्वाध्याय

वसन्ताङ्क

वर्ष १६
सं० २०१४

संख्या २
चैत्र



वार्षिक मूल्य ४)

इस अङ्कका मूल्य १।-)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

ग्राहकोंको आवश्यक सूचना

जिन सज्जनोंने गत वर्ष इन्हीं दिनों चैत्रमास अप्रैल १९५६ ई० में वार्षिक मूल्य भेजकर वर्ष १५ अङ्क ३ वसन्ताङ्कसे 'श्रीस्वाध्याय' की ग्राहक श्रेणिमें नामाङ्कित करवाया था, उनका मूल्य गत 'हेमन्ताङ्क' में समाप्त हो चुका है। अतः इस अङ्कको प्राप्त करनेके लिए वे वार्षिक मूल्य ४।) चार रुपये चार आने अथवा ४.२५ नये पैसे मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज दें। अन्यथा उन्हें यह अंक नहीं भेजा जायेगा और न उनकी बिना स्वीकृतिके वी० पी० ही भेजी जावेगी। वी० पी० में ७५ नये पैसे या बारह आने अधिक लगेंगे इस प्रकार वी० पी० पांच रुपयेमें पड़ेगी इसलिए ४।) मनीआर्डरसे भेजकर मंगाना ही ग्राहकोंको लाभदायक है। आगामी १७वें वर्षसे सम्भवतः वार्षिक मूल्य भी कुछ बढ़ा दिया जावे। परन्तु अभी जो वार्षिक मूल्य भेज देंगे उन्हें तो इसी मूल्य ४।) में ही वर्ष भरके चारों अंक मिलेंगे।

—व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (हिमाचल प्रदेश)

❁ श्रीः ❁

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन।
श्रीमान् रायबहादुर सेठ तोलारामजी गजराजजी जैन, लाडनूं [राजस्थान]

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा [सिरमौरीजी] बघाटराज्य।
श्रीमती सरस्वतीदेवीजी गाडोदिया, दिल्ली।
आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर।
श्रीमान् पं० खुशीरामजी शर्मा ठेकेदार, कुराली (पंजाब)
श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूीज लिमिटेड सोलन ब्रूरी।
श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)
श्रीमान् पं० लक्ष्मीकान्तजी शर्मा, चीफ रेवेन्यू अकाउण्टेण्ट, भरतपुर।
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर।
श्रीमान् सेठ गयाप्रसादजी खण्डेलवाल, सिल्चर (आसाम)
श्रीमान् ला० रामरत्नदास श्रीकृष्णदासजी, रुईकी मण्डी, दिल्ली।
श्रीमान् ला० बनवारीलाल ओंकारनाथजी, कूचा महाजनी दिल्ली।
श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर [उत्तरप्रदेश]

सम्पादक और व्यवस्थापक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

उपसम्पादक—

आचार्य श्री पं० रमानन्द शास्त्री सारस्वत साहित्यरत्न

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'श्रीस्वाध्याय' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक—

जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौषशुक्ला १०, चैत्रशुक्ला १०, और आषाढ़शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४।) चार रु० पच्चीस नये पैसे और १ प्रतिका १।≈) एक रुपया ३६ नये पैसे हैं।

(३) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओर से प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथा समय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(४) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएँ सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पते से भेजने चाहिएँ।

(५) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(६) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटाने का सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमास की विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं। चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समय से ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४।) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तकके शेष अङ्कों का मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३।।) रु० और एक अङ्कका मूल्य १.३६ मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगवाने पर उक्त मूल्यमें तेरह आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्चके अधिक बैठ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिये। वार्षिक मूल्य वा एक अंकके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अंक न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्याय

[वसन्ताङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति —श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १६ | सोलन, चैत्र शु० १० बुधवार सं० २०१४ वि० | संख्या ३

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

निवेदनम्

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

महार्थं पूर्णार्थाः स्वरसपरिपुष्टाः स्वहृदये
स्वरूपं स्वाच्छन्द्यं सममनुभवन्तः स्वविलये ।
सदा ये स्वाधीनस्वललनकलाः कामकलया
महासन्ध्या वन्ध्यासुतपरिणयं ते विदधतु ॥ १ ॥
अये ! मुग्धे ! स्निग्धे ! भवति!मृगतृष्णे ! सति कया
प्रलब्धुं सामर्थ्यं वहसि कलया हन्त सकलम् ।
अपार श्रीकान्तं कमपि चिदकूपारमतुलं
महान्तं स्वात्मानं सपदि विरमास्माच्छ्रमभरात् ॥२॥

सम्पादकीय विचार

'कस्मै देवाय हविषा विधेम ?'

"सन्ध्यानतौ नतपुरन्ध्रितनोस्सरोष-
मुत्सारिते गिरिजया निजपाणिपद्मे ।
उत्सर्पकङ्कणफणीन्द्रफणार्पणेन
पूर्णोञ्जलिर्जयति बालमृगाङ्कमौलेः ॥"

प्रस्तुत 'वसन्ताङ्क' पाठकोंके कर कमलोंमें समुपहृत होते समय तक राष्ट्र-व्यापी निर्वाचन-झंझावात शान्त हो चुकेगा। नये नये निर्वाचित सदस्य नवीन उमङ्गों, आकांक्षाओं, एवं कामनाओंके साथ शिशिर-पल्लवोंसे पुराने सदस्योंको चुनाव-समीरणमें बहा, अभिनव वासन्तिक सुषमा की भाँति संसद राज्यसभा एवं विधान-परिषदोंमें स्थान-ग्रहण कर चुकेंगे। नव निर्वाचित मंत्रिमण्डलोंके नये-पुराने सदस्य सोत्साह नई नई आशाओंसे भारतीय राष्ट्रको स्वकल्पित-चित्रानुकूल समुन्नत, सुसमृद्ध तथा गौरवपूर्ण बनाने हेतु विविध नव योजना-निर्माण एवं प्रचलित योजना सम्पूर्त्यर्थ प्रयत्नशील हो रहे होंगे। सर्वत्र अभिनव हर्षोल्लास तथा आनन्दका एक अनुपम सुहावना ऋतुराज सा बन रहा होगा। जो सदस्य पराजित हो गये हैं उनके उच्छ्वासोंकी उष्णता निदाघकी प्रथम-पुलक सी सुख-वर्द्धक प्रतीत होते हुए भी विश्वकी क्षण-भङ्गुरताका मौन-सन्देश दे रही होगी—ऐसे विलक्षण समयमें हम भी अपने नव-निर्वाचित राष्ट्रिय वरद-पुत्रों, लोकनायकोंका अभिनन्दन करते हुए उन्हें कुछ सामयिक सन्देश देना चाहेंगे। हमारे नव-राष्ट्र नायक चाहे किसी भी शिक्षा दीक्षा एवं संस्कारोंमें जन्मे, पले, पनपे हों किन्तु उन्हें सर्वप्रथम यह न भूलना चाहिए कि वे भारतीय हैं—उनके एक एक शब्द और इंगितका व्यापक प्रभाव पड़ेगा, इसलिये सिद्धान्तोंमें ही नहीं अपने निजी व्यक्तिगत जीवनमें भी उन्हें भारतीय बनना पड़ेगा। भारतवर्ष एक अपनी अलग संस्कृति है, और उसका मूल आधार त्याग, सत्य, सहिष्णुता और सत्य ही हैं। भौतिक जीवनके चाकचिक्यसे भारतीय सदैव ऊपर उठते रहे हैं, आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञानके पावन प्रकाशमें उन्होंने विश्वको नया मार्ग युगों पूर्व बतलाकर 'जगद्गुरुत्व' प्राप्त किया है, उसी लक्ष्यकी ओर भारतीय राष्ट्रको आगे बढ़ाना राष्ट्र नायकोंका कर्तव्य है। यह ठीक है कि आजकी परिस्थितियोंमें भौतिक साधनोंसे मुँह मोड़ कर अलग नहीं रहा जा सकता और अन्तराष्ट्रिय गतिविधियों पर ध्यान भी देना पड़ेगा एवं इसके सहायक आडम्बरोंका अंशतः पालन भी करना पड़ेगा, किन्तु ये सब आनुषङ्गिक या गौण ही रहने चाहिए। जिस प्रकार कोई कुशल अभिनेता कुछ समयके लिये राजा, विट, या विदूषक बन कर अर्थ-संग्रह कर फिर अपने असली स्वरूपमें आ जाता है उसी प्रकार बाह्य साधनोंको उतना ही अपनाना चाहिये जो आन्तरिक स्वरूप संरक्षणके विरुद्ध न पड़ते हों। हो सकता है, इस आशयको समझनेमें कुछ भ्रांति हो जाय अतः हम कतिपय उदाहरणों द्वारा इस बातको भी और स्पष्ट कर देना चाहते हैं।

भारतीय राष्ट्रको स्वतन्त्र हुए दश वर्ष हो चुके हैं, इन गत दस वर्षोंमें हमने अपना विधान बनाकर विदेशोंमें जो ख्याति अर्जित की है, वह निःसन्देह गर्वका विषय है। पंचवर्षीय योजनाओंके अन्तर्गत बहुत सी सड़कें, नहरें, बांध एवं कारखाने बने हैं, अवश्य ही ये हमारे राष्ट्रीय अभ्युदयमें सहायक होंगे और इनकी सामयिक अनिवार्यताको अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता—इस दृष्टिसे विदेशों, वैदेशिकोंकी दृष्टिमें जहाँ भारत एक ख्यातिके शिखर पर पहुँच रहा है वह सब ठीक है, किन्तु इसका एक पक्ष और भी है जो इससे कम महत्वपूर्ण नहीं है। और वह इन दश वर्षोंमें

बढ़ी हुई बेकारी, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार और सभी क्षेत्रोंमें व्यापक सर्वोपरि अनैतिकता ! आज नौकरी, ठेके, और उन्नति उसे मिलती है जो रिश्वत और सिफारिश जुटा सकनेकी योग्यता, क्षमता रखता है। बाजारमें कोई भी वस्तु क्यों न हो मिट्टीसे सोना तक, अनाज, मसालेसे लेकर रोगियोंकी औषधियों तक जीवनोपयोगी किसी भी वस्तुका शुद्ध मिलना असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य है। बाजारोंमें किसी भी वस्तुका एक भाव, एक तोल एवं एक नमूना कहीं भी नहीं मिलता। फैशन परस्ती, सिनेमा एवं नग्न नृत्योंकी बाहुलता भरे तथाकथित सभ्य जीवन अपनानेकी पारस्परिक प्रतिस्पर्धा सभी वर्गों, एवं क्षेत्रोंमें व्याप्त दिखलाई देती है। इस सबके परिणाम स्वरूप पारस्परिक स्नेह, गुरुजनोंमें श्रद्धा, वाणीमें विश्वास उदारता और परोपकार वृत्तिका सर्वथा सर्वत्र अभाव-सा प्रतीत होने लगा है। दश वर्ष पहले जो लोगोंमें स्नेह, प्रीति और विश्वास एवं वचन पालनमें दृढ़ता देखी जाती थी, उसके स्थान पर व्यापकरूपमें स्वार्थ, मक्कारी और उदासीनताका कसमसाहट भरा जीवन चारों ओर लहरें मारने लगा है। झूठे वायदे, झूठा प्रेम और झूठा व्यापार जिस राष्ट्रमें विगत ५-१० वर्षोंमें इस भयङ्कर तेजीसे बढ़ रहा हो उसकी इस स्थिति को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। हम अपने नव राष्ट्र नायकोंसे अनुरोध करते हैं कि वे इस स्थितिको देखें, समझें और अनुभव करें कि क्या वर्तमान स्थितिमें भारतीय राष्ट्र का मङ्गल हो सकता है? जिस राष्ट्रकी नैतिकता, संस्कृति और मूल प्रवृत्ति कलुषित होने लगती है वह राष्ट्र एवं उस राष्ट्रके निवासी सच्चा सुख, सन्तोष और शांति कभी प्राप्त नहीं कर सकते। यही कारण है कि भौतिक दृष्टिसे समुन्नत समृद्ध अन्यान्य राष्ट्र आज भी अशांत भ्रांत एवं दिङ् मूढ़से बने हुए हैं—उनकी पिपासा और लिप्सा विश्व युद्धोंकी भीषण आहुतियोंसे भी तृप्त नहीं होती! इन सबका उपाय केवल भारतीय संस्कृतिके पालन एवं उसके मूलभूत गुणों सत्य, क्षमा, दया, त्याग, अहिंसा आदिके धारण करनेमें ही निहित है। आज हम सर्वत्र 'पंचशील' की दुहाई देते हुए भी अपने घरमें इतने क्यों अशान्त हैं—इसका मूल कारण हम ऊपर मीमांसित कर चुके हैं। यदि और भी स्पष्ट शब्दोंमें इस भावको कहा जाय तो 'धर्म निरपेक्षताकी आड़में धर्मकी जड़ काटना ही हमारी इस अशांतिका मूल कारण है।' पिछले दिनों आगरा विश्व विद्यालयका दीक्षान्त भाषण करते हुए श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यने इसी महत्वपूर्ण विषयकी ओर संकेत करते हुए शिक्षा संस्थाओंमें दैनिक धर्म शिक्षाकी आवश्यकता पर जोर देते हुए वर्तमान शिक्षा-प्रणालीमें क्रान्तिकारी परिवर्तनको अनिवार्य बतलाया था। राजाजी राष्ट्रके उन गिने चुने तपस्वी वयोवृद्ध नेताओंमेंसे हैं जिनके सामयिक एवं मौलिक विचारोंको महात्मा गांधीजी तक महत्त्वपूर्ण माना करते थे। गांधी-युगके वे एक अप्रतिम स्तंभ हैं, उनके इन विचारोंसे राष्ट्र नायकोंको अवश्य लाभ उठाना चाहिए। इसी प्रकार जैसे केवल धर्म निरपेक्षताकी आड़में पल रही अधार्मिकताको मिटानेकी आवश्यकता है वैसे ही अनैतिकता और तथाकथित 'सभ्य संस्कृति' के प्रचार प्रसारको भी रोकनेकी अत्यन्त आवश्यकता है। 'शिक्षा' और 'आचार' का समन्वय जब तक न हो, शिक्षा सुशिक्षा नहीं बन सकती। अंग्रेजी और 'अंग्रेजियत' का मोह जब तक हमारे मानस-मन्दिरमें सुप्रतिष्ठित रहेगा वह निरन्तर घुनकी भांति हमारे विचारोंको क्षीण, गलित और जर्जर बनाता रहेगा। संस्कृत भाषामें निहित ज्ञान और पावन-प्रेरणा-प्रद-प्राचीन तपः पूत महर्षियोंके दिव्य सन्देश पानेके लिये अपेक्षित परिश्रम करना ही पड़ेगा। जिस प्रकार सर्व सुलभ सस्ती तमाखूके होने पर भी आयास-साध्य केसरकी खेतीका महत्त्व निर्विवाद सिद्ध है उसी प्रकार विश्वमें व्याप्त अंग्रेजी और अंग्रेजियतके होने पर भी भारतीय-संस्कृत संस्कृतिके संरक्षणको भुलाया नहीं जा सकता। सच्चे ज्ञानकी प्रतीकरूपा सरस्वती ही समृद्धि एवं शक्ति रूपा महालक्ष्मी और महाकालीके आह्वानमें समर्थ हो सकती है। श्रीराष्ट्रालोक में इसी भावका अभिव्यञ्जन इस कारिकामें किया है।

"राष्ट्रकाली राष्ट्रलक्ष्मीस्तथा राष्ट्रसरस्वती ॥
सेवनीया प्रयत्नेन भोगमोक्ष प्रदायिनी ॥"
(रा० लो० ८३)

किन्तु, इन श्रीशक्ति और बुद्धिकी सम्पूर्ण रूपमें प्राप्ति तभी हो सकती है जब हमारे राष्ट्र-नेता निजी जीवनमें, अपने व्यक्तित्वमें वह गरिमा और वैसा आदर्श प्राप्त करें,

लिखा है—

"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ॥
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनु वर्तते ॥"
(श्रीभगवतद्गीता)

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं वैसा ही लोगों पर प्रभाव पड़ता है। आज नेहरूजी जैसे हंसते, बोलते, चलते हैं, हजारों व्यक्ति वैसे ही बोलना, चलना और सोचना चाहते हैं। इसलिये राष्ट्र नेताओंको अपने पदका महत्त्व, दायित्व और गुरुत्व मान, समझ और विचार कर ही वैसा आचरण करना चाहिए। इसी भावको महामहिम आचार्य श्री अमृतवाग्भवजी महाराजने एक जगह श्रीराष्ट्रालोकमें इस रूपमें व्यक्त किया है—

'निग्रहानुग्रहाभ्यां ये निर्लोभाः समदर्शिनः।
समुन्नयन्ति संसारं त एवार्याः स्मृता बुधैः॥
(रा० लो० ८७)

अर्थात् किसीको दण्ड या पुरस्कार देनेमें जिनका कोई राग या ममत्व न हो, केवल कर्तव्य कर्म मानकर ही जो अपना कर्म-व्यापार चलाते हों और 'समदर्शी' हों–विषय, वस्तु स्थितिको यथा योग्य समझते हों, जिसको जितना, जो, और जैसा मिलना चाहिए उसको उतना, वह, और वैसा ही प्राप्त करानेमें जो प्रयत्नशील रहते हों ऐसे ही आर्य वा भारतीय संसारको समुन्नतिकी ओर ले जाते हैं। बस, इसी कसौटी पर खुले हृदयसे प्रत्येक राष्ट्रनायक को सोचना चाहिए, इसीसे उनका हित, मंगल और कल्याण होनेके साथ वे जनताके स्नेह एवं विश्वासके भाजन बन सकेंगे। कभी कभी कर्तव्य-पालनमें ऐसे भी क्षण आते हैं जब श्रेय और प्रेय परस्पर टकरा जाते हैं–ऐसी अवस्था में प्रेयको ठुकरा कर श्रेयका साधन करना ही प्राचीन भारतीय आदर्श रहा है। भारतीय साहित्य ऐसे महापुरुषों की कीर्ति-कथाओंसे भरा पड़ा है। साथ ही, जिन महानुभावोंने इन आदर्शोंका परित्याग कर श्रेयको ठुकरा कर प्रेयको अपनाया है, उनके पतन और पराभवकी कलुषित कथाओंकी भी कमी नहीं है। इस जन-सेवा-परीक्षा-पथ-के पथिकों (उन सभी नये पुरानों) से जो अपने भाग्य, पैसा, चालाकी, सेवा अथवा योग्यताके बल पर चुने गये हैं उनके इस पथ पर नये रूपमें प्रथम-पद-विन्यास क्षण पर हम उन्हें कहना चाहेंगे कि हे बालारूप! सन्ध्या और निशीथके अनिवार्य आगमनकी ओर ध्यान देते हुए इस पथ पर बढ़ो और श्रेय और प्रेय दोनों वीथियोंमेंसे चाहो जिस वीथीसे अपना पथ पूरा करो!! अनन्त काल तक कवि कोकिल कण्ठ काकलीके किस स्वरमें तुम्हारा कैसा वास रहेगा यह कौन कह सकता है??? अभी तो केवल यही कहेंगे—

'कस्मै देवाय हविषा विधेम???'

कुरुक्षेत्र संस्कृत विश्वविद्यालय

सरस्वती और दृषद्वती नदियोंके बीचके देशकी बड़ी महिमा है। आर्योंकी दृष्टिसे यह प्रदेश सदासे परम पवित्र और यज्ञीय देश रहा है। उपनिषदोंके गम्भीर ज्ञान और वेदकी ऋचाओंसे इस प्रदेशकी दिशाएं प्रतिध्वनित रहती थीं। भगवान् मनुने इस कारण इस प्रदेशके विषयमें कहा है—

"सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् ।
तं देवं निर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते ॥१॥
तस्मिन्देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः ।
वर्णानां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते ॥२॥
कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पञ्चालाः शूरसेनकाः ।
एष ब्रह्मर्षि देशो वै ब्रह्मावर्त्तादनन्तरः ॥३॥
एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥४॥

ऐतिहासिक दृष्टिसे यह प्रदेश भारतका भाग्य विधायक रहा है। भारतीय इतिहासका प्रसिद्ध महाभारत युद्ध कुरुक्षेत्रमें ही हुआ था। इसके समीप ही पानीपत है जहां भारतीय इतिहासके तीन प्रसिद्ध युद्ध हुए और भारतीय इतिहासकी धारा ही बदल गई। ऐसे भाग्य निर्णायक प्रदेशमें संस्कृत विश्व-विद्यालयकी स्थापना भारतीय इतिहासकी एक महत्त्वपूर्ण घटना है।

गत पौष शुक्ला ११ दि.११जनवरीको राष्ट्रपतिके हाथों कुरुक्षेत्रमें संस्कृत विश्व-विद्यालयका शिलान्यास किया गया। राष्ट्रपति डा० श्री राजेन्द्रप्रसाद संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी, कानून, अर्थशास्त्र आदि अनेक विषयोंके विद्वान् हैं। सरस्वतीके आप वरद पुत्र हैं। आप विनम्रता और सरलता

की प्रतिमूर्ति हैं । भारतीय संस्कृतिकी सात्विक प्रतिमूर्त्तिके दर्शन यदि करने हों, तो डा० राजेन्द्रप्रसादके दर्शन करने चाहिए । ऐसे महापुरुषके करकमलों द्वारा जिस विश्व-विद्यालयका शिलान्यास किया गया है, वह भारतके गौरव और राष्ट्रपतिके यशके अनुरूप होगा, यह आशा करना क्या उचित न होगा ?

इस विश्वविद्यालयकी स्थापनाके लिए मार्ग प्रशस्त करनेमें पंजाबके राज्यपाल श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायणसिंह का नाम उल्लेख योग्य है। आप पहले पटना विश्व-विद्यालयके उप-कुलपति रह चुके हैं। नेपालमें भारतके आप जब राजदूत थे उन्हीं दिनों नेपालमें राणाशाहीका अंत करने वाली राज्य क्रांति हुई और स्व० नरेश त्रिभुवनसिंहको आपने दूतावासमें आश्रय देकर क्रांतिको सफल बनानेमें जो योग दिया वह अविस्मरणीय है । राष्ट्रपतिके समान आप भी बिहार (तिर्हुत डिविजन) के हैं। ऐसे उच्च पुरुषके तत्त्वावधानमें इस विश्वविद्यालयका संचालन होगा यह विश्वविद्यालयके निरन्तर विकास और शुभ श्रीगणेशकी सूचना है।

संस्कृत विश्वविद्यालयकी स्थापनाका विचार नया नहीं है। महामना मालवीयजीके जीवनका यह एक स्वप्न रहा है। संस्कृतके उद्भट विद्वान् लो०अणेने भी इसकी एक योजना तैयार की थी। उत्तर प्रदेशकी सरकार भी संस्कृत विश्वविद्यालयकी स्थापनाका निश्चय कर चुकी है। वाराणसीको इसके लिए चुना गया है किन्तु अभी तक यह विचार मूर्त्त रूप नहीं धारण कर सका है। कुरुक्षेत्रमें संस्कृत विश्व-विद्यालयका शिलान्यास कर राष्ट्रपतिने उस पुरातन विचारको ही मूर्त्त रूप दिया है।

भारतीय संस्कृतिका मूल संस्कृतमें निहित है। यह भाषा देववाणी और गीर्वाणीके नामसे प्रसिद्ध है। विश्व-साहित्यकी ज्ञात प्रथम पुस्तक इसी भाषामें है । हमारे दैनिक जीवन, हमारे पर्वों, हमारे तीर्थोंका मूल संस्कृत भाषा में निहित है। भारतीय राष्ट्रका गौरव, यश, पराक्रम और जीवनकी पुण्य-गाथा इसी भाषामें विद्यमान है । हमारे जीवन-प्रेरणा, हमारे आराध्योंकी पूजाकामूल स्रोत इसी भाषामें विद्यमान है । भारतीय संस्कृति और सभ्यताका मूल स्रोत यही है। अतः संस्कृत विश्व-विद्यालयकी स्थापना का शुभ प्रयत्न वस्तुतः भारतीय संस्कृति और सभ्यताकी रक्षा और वृद्धिकी दिशामें एक महत्वपूर्ण पग है और इसका हम हार्दिक अभिनन्दन करते हैं ।

इस विश्वविद्यालयका जो रूप अभी तक ज्ञात हुआ है, वह आशाजनक और विश्वासोत्पादक है । इसमें एशियाई संस्कृति ज्ञान-विज्ञानकी विभिन्न शाखाओं और आयुर्वेदकी शिक्षा दी जायगी और इनके पृथक्-पृथक् पीठ होंगे। अनुसंधान विभाग भी रहेगा । यह विश्व-विद्यालय शिक्षा देने वाला होगा । किन्तु भारत भरमें फैले संस्कृत विद्यालय इसके साथ सम्बद्ध हो सकेंगे और उनमें पढ़ने वाले छात्र इस विश्वविद्यालयकी प्रवेशिका परीक्षा दे सकेंगे। इस विश्वविद्यालयकी उपाधियों, सनदों, और प्रमाणपत्रोंको सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होगी। अतः इस विश्वविद्यालय के विद्वान् स्नातकोंको आजीविकाके लिए भटकना न होगा। इस कारण आशा करनी चाहिए कि इस विश्वविद्यालयमें अन्यून दश सहस्र छात्रोंको शिक्षा देनेकी व्यवस्था होगी।

किन्तु हम एक अभावकी ओर विश्वविद्यालयके संचालकोंका ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं। वेद-वेदाङ्गों और उपाङ्गोंमें ज्योतिर्वेद और धनुर्वेदका महत्वपूर्ण स्थान है। इस विश्वविद्यालयके प्रकाशित साहित्यमें हमें इन विषयोंका कहीं भी उल्लेख नहीं दिखाई दिया। यह अभाव खटकने वाला है। इसके अभावमें भारतीय संस्कृति और सभ्यताका ज्ञान अधूरा ही रहेगा और भारतीय जीवन-धाराके विकासका पूर्ण ज्ञान न हो सकेगा। अतः संचालकोंसे हमारा यह आग्रह पूर्ण अनुरोध है कि भारतीय जीवनको नियंत्रित करने वाले हमारे दैनिक जीवनके दिग्-दर्शक ज्योतिर्विज्ञान शिक्षाकी समुचित व्यवस्था की जाय। हमें विश्वास है कि आयुर्वेदके समान ज्योतिर्विज्ञान एवं अन्तरिक्ष विज्ञानके लिए पृथक् पीठ विश्व-विद्यालयके अन्तर्गत स्थापित किया जायगा । इसका प्रारम्भ वेधशालाके निर्माण से किया जाय। ग्रीनविचकी वेधशाला के समान विश्व भरको काल-निर्णय करनेमें यह सहायक हो ऐसी यह वेधशाला हो, यह हमारी हार्दिक इच्छा है। हमें विश्वास है कि इस विश्वविद्यालयके संचालक और पंजाबके राज्यपाल हमारे इस नम्र निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे।

———

कलाप्रेमी एक कर्मठ विद्वान्का निधन

अभी २६ मार्चके दैनिक पत्रोंमें सूचना एवं प्रसार-मंत्रालयके मुख्य सचिव श्री पुरुषोत्तम मंगेश लाडके आकस्मिक निधनका समाचार पढ़ कर हम सहसा अवाक् रह गये। हमें ऐसा धक्का लगा कि संस्कृत-साहित्य और ज्योतिर्विज्ञानका एक महान् हितैषी हमारा कोई आत्मीयजन आज हमसे बिछुड़ गया। श्री लाड असाधारण प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति थे। उनकी प्रतिभा प्रशासकीय एवं साहित्य क्षेत्रमें अपना समानाधिपत्य रखती थी। केन्द्रीय सूचना-विभागके सचिवपद पर आनेसे पूर्व आप वर्षों बम्बई सरकारके मुख्य सचिव एवं वैधानिक सलाहकारके पद पर पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त कर चुके थे। संस्कृत पाली और वैष्णव साहित्यके असाधारण पण्डितोंमें आपकी गणना थी। सरकारी कामसे शेष समयमें वे साहित्य जगत्की सेवा किया करते थे। मराठीमें अनेक ग्रन्थोंका प्रणयन उन्होंने किया है। भारतीय संस्कृतिकी अमिट छाप उनके हृदय-पटल पर थी। उनके मातामह महाराष्ट्रके प्रसिद्ध दैवज्ञ थे। श्री लाडको स्वयं भी ग्रहगणितका पर्याप्त अनुभव था। दृक्पक्षीय शुद्ध पंचांगके आप समर्थक थे। ज्योतिर्विज्ञानके प्रति निष्ठा और संस्कृत-साहित्य काव्य कलामें अनन्य अभिरुचि, निरभिमानिता गुणज्ञतादि अनेक अद्भुत गुणोंके कारण ही हम उनके निकट सम्पर्कमें पहुँच पाये थे। ५२ वर्षकी स्वल्पायुःमें ही उनका अवसान जहां केन्द्रीय शासनके लिए एक अनुभवी कर्मठ प्रशासकके अभावरूपमें खटक रहा है वहां संस्कृत साहित्य और ज्योतिर्विज्ञानकी भी—एक परम हितैषी ममज्ञ विद्वान्के उठ जानेसे—महान् क्षति हुई है। विगत श्रावण मासमें जब स्व० गुरुवर श्री केदारनाथजी महाराज अ० भा० ज्योतिष-सम्मेलनकी अध्यक्षताके लिए दिल्ली पधारे थे तब हमारे आमन्त्रण पर अत्यधिक कार्य-व्यस्त रहते हुए भी श्री लाड महोदय वेधशाला (जन्तर-मन्तर) में आये और गुरुवरके साथ हमें भी अपने निवास स्थान ३४ औरंगजेब रोड ले जाकर दो बार पर्याप्त समय तक शास्त्रीय चर्चा पर विचार विमर्श किया। आपकी सर्वतोमुखी प्रतिभा एवं ज्योतिर्विज्ञान और दिल्लीकी वेधशालाके प्रति हार्दिक अभिरुचिसे गुरुवरको भी बहुत प्रसन्नता हुई थी। यह दैवदुर्विपाक ही है कि गुरुवरके बाद अब आप जैसे हितैषी कर्तव्यनिष्ठ विद्वान् भी हमसे सदाके लिए पृथक् हो गये। श्री लाड जैसे सहृदय कर्तव्यपरायण—

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणं चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति॥''

इस उक्तिको चरितार्थ करने वाले उच्चाधिकार सम्पन्न पुरुषरत्न बहुत कम मिलेंगे। यद्यपि—

''जातस्य हि ध्रुवं मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च''

यह श्रीमद्भगवदुक्ति सर्वत्र घटित होती है तथापि ऐसे अद्भुत प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तिके असामयिक निधन पर कौन साहित्य एवं कला-पारखी ऐसा होगा जिसे हार्दिक दुःख अनुभव न हो रहा हो। आशा है शासन तन्त्रके अन्य छोटे बड़े अधिकारी और उनके पद पर प्रतिष्ठित होने वाले महानुभाव भी श्री लाडके आदर्श गुणोंसे प्रेरणा प्राप्त करेंगे। वे वास्तवमें (यथानाम तथा गुण) पुरुषोत्तम (पुरुष श्रेष्ठ) ही थे।

अनन्यसाधारणधीः कार्यभारोद्वहत्तमः।
कलाकलापमर्मज्ञो ह्यासीत्स 'पुरुषोतमः'॥

ईश्वर उनकी दिवंगतात्माको शाश्वत शान्ति और पारिवारिक जनोंको यह दारुण दुःख सहन करनेकी शक्ति प्रदान करे।

—

आचार्याभिनन्दनम्

[कविरत्न श्रीतेजभानुः]

आचार्योऽमृतवाग्भवोऽतिविदितः श्रीमान् महत्तामहान्
विप्रोद्यान्वयनीरधिप्रकटित ज्योत्स्नाढ्य जैवातृकः।
विद्यामार्मिकधैर्यधर्म सदलं कर्मीणता भूषणः
त्यक्ताऽशेषपरिग्रहो भगवदाशंसानुकूलव्रतः
साहित्ये कवि संमुदे कवयतां पीयूष पूषात्मगीः
मर्यादा निरतो जनादुपरतस्सौम्यस्वभावाहतः।
रागद्वेषपराङ्मुखः स्थिरमतिर्नित्यं प्रसन्नाननः
ईदृक् श्रीनरसंभवोऽपि भविनां भूत्यै भवे संभवेत्॥

अनुग्रहात् संस्कृतसत्कृतानां
सर्वायुषा संस्कृत संस्कृतस्य।
परिष्कृताविष्कृत भारतीयं
श्रीतेजभानोर्महतां स्तवाय॥

राष्ट्रपतिका आचरण क्या राष्ट्रिय भावनाके प्रतिकूल है ?

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

कलकत्ताके 'नया समाज' मासिक पत्र जनवरी १९५७ के अङ्कमें श्रीसत्यदेव विद्यालंकारका "धर्म निरपेक्षताके विपरीत आचरण" शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है। लेखक ने कल्पनाके आवेशमें यह लेख लिखा है, विचार और विवेकसे काम नहीं लिया। दीखता है कि मुस्लिम-लीगी और उनके समर्थकोंके—यद्यपि मुस्लिम लीग अब भारतके एक बड़े भागमें जीवित नहीं है तथापि लीगी मनोवृत्ति आज भी विद्यमान है—प्रभावसे प्रभावित होकर यह लेख लिखा गया है। क्योंकि लेखमें जिस प्रकारके विचार प्रकट किए गए हैं वे ठीक उसी प्रकारके हैं जैसे देश-विभाजनसे पूर्व मियां फजलुल हकने 'वन्देमातरम्' गीत पर आक्षेप किया था और कलकत्ता विश्वविद्यालयके आदर्श वाक्यको हटानेका आन्दोलन किया था। कट्टरता सनातनपंथी हो वा सुधारपंथी हो, मुल्लाँपंथ दोनों हानिकर हैं और परित्याग के योग्य हैं। उक्त लेखमें कट्टरताकी भावना है, इससे नकार नहीं किया जा सकता। एक प्रसिद्ध पत्रकार द्वारा भारतीय संस्कृति पर ही आक्षेप नहीं अपितु भारतके आदर्श महा-महिम राष्ट्रपतिके लिए भी जनसाधारणमें बुद्धिभेद (भ्रम) उत्पन्न करनेका प्रयास किया है। इसी बुद्धिभेदको दूर करने के लिए हमें यहां कुछ लिखना आवश्यक जान पड़ा।

पहली बात यह है कि 'सेक्युलर स्टेट' का अर्थ 'धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र' नहीं है। यदि यह होता तो राज्यके रुपयोंसे कुम्भके मेलेका प्रबन्ध न किया जाता, अजमेरके अन्दर मुस्लिम उर्सोंका आयोजन न किया जाता और रेल किराया न घटाया जाता और न प्रधानमंत्री निजामुद्दीन (दिल्लीके पास) के औलियाकी दरगाहमें जाकर भेंट स्वीकार करते, न रामलीलाके मैदानमें जाकर रावणका जलना देखते और न माथे पर तिलक ही लगवाते। 'सेक्युलर स्टेट' का अर्थ यही है कि राज्य किसी एक धर्म-विशेषके सिद्धान्तोंका प्रचार करनेमें सहायता नहीं देगा, अपने कार्य शपथ आदि किसी धर्मके अनुसार न करेगा और न किसी धर्मको महत्व देगा। इससे भिन्न अर्थ लगाना इस शब्दका दुरुपयोग करना होगा।

सम्राट् अशोकके राज्य-चिन्होंको सर्वत्र हमने अपनाया है। बुद्धके दो शिष्योंके भस्मोंकी डिबियाको साँचीमें पुनः स्थापित किया गया और बौद्ध धर्मकी रीतिसे यह सब किया गया, एवं प्रधानमंत्री श्री नेहरूने यह सब समा-रम्भ किया। यही क्यों, जब वह भस्म दिल्लीके बौद्ध मन्दिरमें रक्खी गई तो अन्य श्रद्धालुओंके समान प्रधान-मंत्री भी उसके दर्शन करने गए और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। यदि हमारा राष्ट्र वस्तुतः धर्मनिरपेक्ष राज्य है तो उसके प्रधानमंत्रीको इन सब कार्योंसे सर्वथा पृथक् रहना चाहिए था। लेखकने राष्ट्रपति और अन्यान्य मंत्रियों को तो अपने मन्तव्यानुसार तथाकथित-धर्मनिरपेक्षताके विरुद्ध आचरण करनेके लिए दोषी ठहराया है पर प्रधान-मंत्रीका कहीं नाम नहीं। क्या लेखक प्रधानमंत्रीके उक्त कार्योंको धर्मनिरपेक्षताके अनुकूल मानते हैं ?

बुद्ध भारतके एक महान् सपूत थे। पर भगवान् श्रीकृष्ण उनसे भी अधिक महान् थे। किन्तु श्रीकृष्ण-जन्माष्टमीका उत्सव सरकार कहीं नहीं मनाती, अपितु बुद्ध जयन्ती सरकार द्वारा मनाई गई और सरकारी कोषका रुपया व्यय किया गया और 'बुद्धं शरणं गच्छामि' 'संघं शरणं गच्छामि' 'धम्मं शरणं गच्छामि' की ध्वनिसे दिल्ली ही नहीं सारा देश वर्ष भर गूंजता रहा। बौद्ध धर्मके विभिन्न रूपों पर साहित्य सरकारकी ओरसे प्रकाशित किया गया। भारत सरकारके फिल्मडीविजनने बुद्ध पर एक सुन्दर फिल्म भी बनाई। यह सब किया गया उस धर्मके लिए जिसके अनुयायी इस देशमें मुट्ठीभर भी नहीं हैं और इस प्रकार उस धर्मको पुनरुज्जीवित करनेका प्रयत्न किया गया। सरकारी कोषके लाखों रुपयोंसे व्ययसाध्य यह कार्य तो लेखकको 'धर्मनिरपेक्षताके विरुद्ध' नहीं लगा, पर राष्ट्रपतिके धार्मिक विश्वास और ज्योतिर्विज्ञान पर श्रद्धामें उन्हें धर्मनिरपेक्षताके विरुद्धाचरणसे राष्ट्रकी महान् हानि दिखाई दे रही है! अधिकांश ऐतिहासिकोंका कथन है कि भारतकी पराधीनताके लिए बौद्ध धर्म जिम्मेदार है। बख्तियार खिलजीने बिहार बंगालको जिस सरलतासे विजय किया वह इसका एक प्रमाण है। यही नहीं जब कभी भारत पर बाहरी शत्रुओंने आक्रमण किया तब बौद्ध

भिक्षुओंने शत्रुका साथ दिया। हूणोंने भारत पर जब आक्रमण किया तब भी बौद्ध भिक्षुओंने शत्रुओंका साथ दिया और जब अरबोंने सिन्ध पर आक्रमण किया तब भी बौद्ध भिक्षुओंने नगरके दरवाजे व फाटक खोल दिए। (देखिए डा० अम्बेडकरका भाषण, विधान परिषद्में संविधानके तृतीय वाचन पर)

हमारे देशके ६५ प्रतिशत लोगोंका आचार-विचार हिन्दू धर्मके विभिन्न रूपोंसे प्रभावित होता है। इस सचाई से कोई राज्य और कोई भी सरकार नकार नहीं कर सकती। सरकारका काम किन्हीं विशेष विचारके मुट्ठीभर लोगोंकी इच्छाके अनुसार काम करना नहीं है। यदि मूर्त्ति पूजा विरोधियोंकी बात मानी जाए तो गांधीजीकी समाधि पर पुष्पाञ्जलि चढ़ानेकी प्रथाका अंत कर देना चाहिए। प्रसंग वश यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि सऊदी अरबियाके शासकने वहाबी धर्मका होने के कारण गांधीजीकी समाधि पर पुष्पमाला अर्पित नहीं की थी। क्योंकि मूर्तिपूजाके विरोधियोंकी दृष्टिसे यह उचित नहीं है। किन्तु इसी कारण कोई व्यक्ति क्या यह कहेगा कि गांधीजीकी समाधि पर पुष्पमाला भेंट न की जाए।

किसी एक व्यक्ति या व्यक्ति समूहके विचारोंके अनुकूल राष्ट्रपतिके धार्मिक कृत्य नहीं हैं, इसी कारण वे कृत्य धर्म निरपेक्ष राज्यके प्रतिकूल नहीं कहे जा सकते। हम आज से ५० या १०० वर्ष पश्चात् जिस प्रकारके राष्ट्रकी कल्पना करते हैं या जिन विचारोंको फैलते हुए देखना चाहते हैं, उनके अनुकूल राष्ट्रपतिके धार्मिक विश्वास नहीं हैं, इसी कारण वे कार्य धर्म-निरपेक्ष राज्यके प्रतिकूल नहीं कहे जा सकते। राज्य वर्तमानकालकी भावनाओंका आदर करनेके लिए बाध्य है। वह भविष्यकी कल्पना कर वर्तमान भावनाकी उपेक्षा और उसका तिरस्कार नहीं कर सकता। न कोई जानराज्य ६५ प्रतिशत जनताकी हार्दिक भावनाका अनादर करनेका साहस कर सकता है। अधिनायक तंत्रमें यह संभव है कि जनताके मत और विश्वासकी उपेक्षा की जाए, पर लोकतंत्रमें यह संभव नहीं। ऋग्वेदसे लेकर परमहंस रामकृष्णहंस तक इस देशमें जो धर्म-भावनाका प्रवाह प्रवाहित हुआ है इसके कारण शतियोंसे हमारी जनताका मन और हृदय जिन संचित संस्कारोंसे बना है उनकी उपेक्षा भारत-राष्ट्रका प्रतीक और प्रमुख नहीं कर सकता, और कोई व्यक्ति चाहे भले ही करे। संविधानने राष्ट्रपति पर एक महान् उत्तरदायित्व डाला है। उसको इस देशमें मिली-जुली (कम्पोजिट) संस्कृतिका विकास करना है। इसके साथ ही भारतके चालीस कोटि जनताकी मानस-भावनाका प्रतीक अपनेको बनाना है, न कि कुछ कल्पनाशील सुधारकोंका, जिनका आचरण अपने विचारोंके अनुसार नहीं। जो सभामंच (प्लेटफार्म) पर कुछ कहते हैं, पत्रोंमें कुछ लिखते हैं, और आचरण सर्वथा उसके विपरीत करते हैं। राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्रप्रसादका आचरण भारत की कोटि-कोटि जनताकी भावनाका आदर करता है। लोक-राज्यके लिए इसके विपरीत आचरण करना वस्तुतः आपत्तिजनक होगा। राष्ट्रपति किसी पक्षविशेषके विचारों का प्रचारक नहीं हो सकता। यदि अणुव्रती तेरहपंथी वहां जाते हैं तो वे उनका भी उपदेश उसी प्रकार सुनते हैं, जिस प्रकार एक शास्त्रमर्मज्ञ ज्योतिषीकी बात। क्योंकि भारतीय जनतामें उन दोनोंका स्थान है और वे दोनों राष्ट्रके प्रमुखके लिए मान्य होने चाहिएं।

भगवान् श्रीकृष्णने अर्जुनसे एक बात कही थी जिसकी कोई शासक उपेक्षा नहीं कर सकता। वह बात यह थी—

"न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसंगिनाम्।
जोषयेत् सर्वकर्माणि विद्वान् युक्तः समाचरन्॥"
(गी. ३–२६)

कहना न होगा कि राष्ट्रपतिका धार्मिक आचरण सर्वथा इसके अनुकूल है और सब प्रकारसे स्तुत्य, प्रशंसनीय एवं भावी राष्ट्रपतियोंके लिए अनुकरणीय है।

राजेन्द्रबाबू कोटिकोटि धर्मप्राण भारतीय जनताके प्रतिनिधि हैं, वे किसी अनीश्वरवादी नास्तिक राष्ट्रके राष्ट्रपति नहीं। भारतीय संस्कृति और सदाचार उनके रोमरोममें व्याप्त है, इसी कारण वे अजातशत्रु और भारतके सर्वप्रिय महान् नेता माने जाते हैं। राष्ट्रने उन्हें सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित करके गौरवका अनुभव किया है और वे अपने इन्हीं आदर्श गुणोंके कारण अब तीसरी बार पुनः राष्ट्रपति पद पर अभिषिक्त होंगे इसमें सन्देह नहीं। ऐसे प्रियदर्शी महापुरुषके आचरणको 'धर्म-निरपेक्षताके विपरीत आचरण' बताकर राष्ट्रपति पर व्यर्थ दोषारोपण करके लेखकने अपनी बुद्धि और पत्रकारिताका दुरुपयोग किया है। राष्ट्रपतिके

द्वारा सोमनाथ मंदिरके शिलान्यास, काशीमें ब्राह्मणोंके पाद प्रक्षालन और ज्योतिर्विज्ञान तथा कीर्तनमें विश्वास करनेको लेखक महाशय अप्रिय प्रतिक्रिया मानते हुए लिखते हैं कि—"………… जनताको गुमराह करने वाले धार्मिक प्रपंच तो धर्मनिरपेक्षराष्ट्र और उसके राष्ट्रपतिको शोभा नहीं देते।"

लेखक हिन्दीके सुप्रसिद्ध पत्रकार हैं 'हिन्दुस्तान' 'नवभारत' और सनातनधर्म-प्रतिनिधि-सभाके दैनिक 'अमरभारत' के वर्षों तक प्रधान सम्पादक रहे हैं। सनातन भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानके आप प्रशंसक रहे हैं, पर अब आपने उसी सनातन-संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानको इतना हेय मानकर राष्ट्रपति पर बरसनेका साहस किया इसमें हमें तो किसी राष्ट्रद्रोही तत्त्वका ही हाथ दिखाई देता है। ज्योतिश्शास्त्र एक महान् विज्ञान है। यदि राष्ट्रपति इस विज्ञान और इसके मर्मज्ञ विद्वानों पर आस्था रखते हैं तो इसमें कोई हानि नहीं। प्रत्येक विज्ञान की उन्नति करना और उससे लाभ उठाना राष्ट्रका परम कर्तव्य है। यवनादि म्लेच्छ जातिके लोग भी इस ज्योतिर्विज्ञानको भली प्रकार जानने वाले विशेषज्ञ विद्वान् हुए हैं उनकी भी हमने ऋषियोंकी भांति पूजा की है, फिर यदि कोई द्विज इस विज्ञानका विशेषज्ञ हो तो उसका राष्ट्रपति क्यों न सम्मान करें ?

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते किं पुनर्दैवविद्द्विजः॥

हां, जो इस शास्त्रके जानकार नहीं हैं, व्यर्थ ही प्रपंच फैलाकर ज्योतिषके नाम पर जनताको ठगते हैं, ऐसे नक्षत्र सूचियोंकी तो हमारे यहां पहले ही पर्याप्त भर्त्सना की गई है। जहां सिद्धान्तवेत्ता दैवज्ञके दर्शनसे दश दिनके किये हुए पापोंकी निवृत्ति बतलाई है (दशदिन कृत पापं हन्ति सिद्धान्तवेत्ता) वहां नक्षत्रसूची (मूर्ख ज्योतिषी) के बतलाये उपवास (व्रत) मात्रसे अन्धतामिश्र नामक नरककी प्राप्ति बतलाई है और प्रपंची ज्योतिषीको तो वाणीमात्रसे आदर देना भी निषेध किया है। यथा—

आघ्राय गन्धान् परवृत्त जातान्
सन्धाय लोकान् बहुधा प्रपञ्चैः।
प्रवर्तते यः फलिताभिमानी
स साधुवाचापि न पूजनीयः।
नक्षत्रसूचकोद्दिष्टमुपवासं करोति यः।
स व्रजेत्यन्धतामिश्र सार्धमृक्षविडम्बिना॥

पंजाबके एक भूतपूर्व मुख्य मंत्रीके पास ऐसे ही कोई नक्षत्रसूची रहते थे उनके विषयमें श्री सत्यदेवजीने लिखा है कि—"…… परन्तु वे ज्योतिषी अपनी विद्या और तिकड़मका सारा बल लगाकर भी उनको मुख्य मंत्रीके पद पर आसीन न रख सके।" लेखकके शब्दोंसे ही ध्वनित होता है कि वे ज्योतिषी नहीं तिकड़मबाज वा भूत सिद्धिका चमत्कार दिखाने वाले कोई जादूगर थे। जिन विद्वान् दैवज्ञोंकी अनेक भविष्यवाणियां अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई हैं और अनेक लोगोंको अपनी विद्याका चमत्कार दिखा चुके हैं उनका लेखकने यहां कहीं उल्लेख नहीं किया। किन्तु लेखकके ही शब्द हम यहां उद्धृत करेंगे— जिसमें उन्होंने 'ज्योतिषको भारतके मनीषियोंकी सहस्रों वर्षोंकी साधना एवं अनुभूतिका सुन्दर परिणाम' माना है।

विगत कई वर्षोंसे 'हिन्दुस्तान' 'नवभारत' 'अमरभारत' आदि पत्रोंमें नये वर्ष और ग्रहणादि पर हमारे लेख और भविष्यवाणियां प्रकाशित होती रही हैं। उनकी वैज्ञानिकता और सत्यताको लेखकने स्वयं स्वीकार किया है। कई बार लेखकने आग्रह करके हमसे ज्योतिष-सम्बन्धी लेख अपने पत्रके लिए लिखवाये थे। १३ अप्रैल १९४७ के 'नवभारत' में "सं० २००४ का नया वर्ष" शीर्षक हमारा एक विस्तृत लेख प्रकाशित हुआ था। इसमें हमने ज्योतिषशास्त्रीय ग्रहगणनाके आधार पर स्पष्ट लिखा था कि—

"इस वर्ष सूर्य स्वयं मृत्युघरका अधिपति बना हुआ है और मन (चन्द्रमा) लग्नमें शत्रुराशिका शनि से दृष्ट है अतः इस वर्षमें सामान्यतः समस्त संसार और विशेषकर भारतीय जनताका मन और आत्मा अत्यन्त अशान्त सशंक और किंकर्तव्य मूढ़ जैसी स्थितिमें रहेगा। कर्क राशिमें शनिके कारण अनार्य-पुरुषों (यवनों) की मानसिक स्थिति बहुत विकृत होकर भयंकर कुकृत्यों और षडयंत्रोंकी ओर प्रेरित होगी। आर्य अनार्य जनतामें या कांग्रेस और लीगमें समझौता नहीं हो सकेगा।…ये सब भयानक योग आने वाली भीषण आपत्तियोंकी पूर्व सूचना है…

मंगल राहु योगके कारण वहाँसे भयंकर रक्तपात विस्फोट अग्निकाण्ड अपमृत्यु आदि उत्पातोंका उपक्रम प्रारम्भ होगा''' इस वर्ष संसारमें गृहयुद्ध अधिक होंगे। अधिक श्रावणमें जब पंचग्रह एकत्र होते हैं वहांसे (१६ अगस्त १६४७ से) आगे भयानक क्रांति काल ही समझना चाहिए'''सर्वत्र उत्पात होंगे। स्थान-स्थान पर रोग दुर्भिक्ष गृहयुद्ध और अग्निभय होंगे। असंख्य प्राणि अकाल मृत्युके शिकार होंगे।" इत्यादि।

१५ अगस्तको भारतीय स्वतन्त्रताके साथ ही पाकिस्तान से जो भयंकर लोमहर्षण हत्याकाण्ड लूटमार और अत्याचार की आंधी भारतमें आई वह विश्वविदित घटना है। एक वर्ष पूर्व लिखी गई सं० २००४ के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' में और ४ मासपूर्व 'नवभारत' में प्रकाशित यह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्यसिद्ध हुई थी। दिल्लीके 'नवभारत-टाइम्स' का उस समय सन् १६४७ में केवल 'नवभारत' नाम था और उसके सम्पादक श्रीसत्यदेव विद्यालङ्कार थे। १३ अप्रैल १६४७ के 'नवभारत' में प्रकाशित हमारी उस भविष्यवाणी पर श्रीसत्यदेव विद्यालङ्कारने जो सम्पादकीय टिप्पणी लिखी थी वह अक्षरशः इस प्रकार है—

["ज्योतिष भारतके मनीषियोंकी सहस्रों वर्षोंकी साधना एवं अनुभूतिका सुन्दर परिणाम है। सूर्य एक दर्पण है, जिसमें सारे ब्रह्माण्डका भूत, वर्तमान और भविष्य छाया रूपमें अङ्कित रहता है। उसको जान सकनेकी साधना-दृष्टि रखने वाले हमारे ऋषि कभी त्रिकालदर्शी कहे जाते थे। आज तो इस देश में सभी प्राचीन चीजोंके केवल खण्डहर शेष रह गये हैं। हमारे विज्ञान कला संस्कृति, साहित्य तथा शास्त्रोंका भी यही हाल है। ज्योतिष शास्त्र भी अपने असली रूपमें कहीं रह नहीं गया है। फिर भी जिन विद्वानोंने उसको बचा रखनेका प्रयत्न किया है, उनमें एक सुज्ञ विद्वान्की अधिकारपूर्ण लेखनीसे लिखा हुआ यह लेख हम यहां दे रहे हैं। पण्डितजी हर वर्षके शुरूमें उसका भविष्य लिखते हैं। लार्ड माउण्टबेटनके समान आपने लार्ड वावेलके शासन-काल पर भी इसी प्रकार अपने विचार प्रकट किए थे।"]

इससे विज्ञ पाठक समझ सकते हैं कि ज्योतिर्विज्ञान के प्रति लेखककी धारणा कैसी रही है। इतना ही नहीं अभी कुछ वर्ष पूर्व लेखकने इन्दौरके सुप्रसिद्ध सेठ सर हुकमचन्दजीके जीवनवृत्त (अभिनन्दन) ग्रन्थका सम्पादन किया उसमें भी ज्योतिर्विज्ञानकी सत्यताको स्वीकार किया है। फिर समझमें नहीं आता कि राष्ट्रपतिके ज्योतिष विश्वास पर आप इतने क्यों बिगड़े हैं ? और इसमें उन्हें राष्ट्रकी क्या हानि दिखाई दी ?

एक स्थान पर आपने लिखा है—

"एक 'महाराज' को यह भी अभिमान है कि उन्होंने प्रजातंत्र अथवा स्वाधीनताके समारम्भको १४ अगस्तसे बदलवाकर १५ अगस्तकी अर्धरात्रिके पुण्य मुहूर्तमें सम्पन्न करवाकर सारे राष्ट्रको उस अनिष्टसे बचा लिया, जिसका सामना १४ अगस्तकी अशुभ घड़ीके ही कारण पाकिस्तान को करना पड़ रहा है।"

लेखक एक प्रसिद्ध पत्रकार होते हुए भी इस ऐतिहासिक घटनाके सम्बन्धमें भूल कर रहे हैं। यह सब जानते हैं कि स्वाधीनता प्राप्ति समारम्भका दिन १४ अगस्त नहीं अपितु १५ अगस्त ही निश्चित हुआ था। परन्तु १५ अगस्तको सूर्योदयके बाद अशुभवार नक्षत्रादि होनेसे १४ अगस्तकी अर्धरात्रिमें १२ बजकर एक मिनट पर स्थिर (वृषभ) लग्न और अमृतसिद्धियोगमें सत्ताग्रहण करनेका सुमुहूर्त 'एक महाराज'ने ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर ही बताया था और वह हितकारक बात होनेसे राष्ट्रनायकोंने स्वीकार करके १५ अगस्तके प्रारम्भ होते ही (अर्धरात्रि १२–१ पर) सत्ताग्रहणका सुमुहूर्त साधा एवं ध्वजोत्तोलनादिके सब उत्सव १५ को प्रातः ही सम्पन्न हुए। इसमें उन 'महाराज' और राष्ट्रनायकोंने क्या अनर्थ किया यह लेखक ही जानें।

श्री महात्मा गांधीजीके सम्बन्धमें लेखक महाशयने लिखा है—

"महात्मा गांधीके नामसे कोई नया सम्प्रदाय तो अभी तक चल नहीं सका है, परन्तु उनकी समभाव दृष्टि एवं भावनाके सर्वथा विपरीत हमने उनके स्वर्गवासके बाद उनको कट्टर हिन्दू बनानेमें कोई कमी नहीं रहने दी है। तुलसीकी माला तुलसीके पत्र और गंगाजल आदिका प्रयोग करके हमने उनके दाह संस्कारकी सारी प्रक्रियाएँ

बिल्कुल हिन्दू रीति रिवाजों तथा रूढ़ियोंके अनुसार की और उनको सबसे अलग करके केवल हिन्दुओंका ही बना दिया।'

पाठकगण ! देखा आपने लेखक महाशयकी बुद्धिका चमत्कार। जो गांधीजी कट्टर हिन्दू सनातनी परिवारमें जन्मे, जिन्होंने आयुपर्यन्त 'रघुपति राघव राजाराम' की रट लगाई; जो गीता रामायणका नित्य पाठ करते रहे और रामराज्यका स्वप्न देखते रहे तथा अन्तिमक्षणमें भी जिनके मुखसे "हा ! राम !" शब्द निकला, उनके देह त्याग पर शवका हिन्दू रीतिके अनुसार दाह संस्कार करने मात्रसे ही लेखक महाशयको कट्टर हिन्दूपनकी गन्ध आ रही है। गंगाजल और तुलसीको आधुनिक वैज्ञानिकोंने भी पवित्र एवं उपयोगी माना है और हिन्दुओंकी शवदाह-क्रियाको भी वैज्ञानिक माना है। कई अंग्रेजोंने अपने शवकी दाह-क्रियाकी अनुमति दी है। किन्तु, 'धर्मनिरपेक्षताके विपरीत आचरण' लेखके विद्वान् लेखक महाशयको गांधीजीके चिता-धूमसे कट्टर साम्प्रदायिकताकी दुर्गन्ध आ रही है ! क्या हम लेखक महाशयसे पूछ सकते हैं कि उस समय गंगाजल और तुलसीके स्थानमें किस पवित्र वस्तुका प्रयोग किया जाता ? और यदि गांधीजीके शवको किसी कब्रमें दफना दिया जाता तो फिर उसमेंसे आपकी ही भांति किसीको कट्टर इस्लामियतकी दुर्गन्ध नहीं आती क्या ? हां, यदि गांधीजीके शवके दो भाग करके एक भागको दफना दिया जाता और एक भागका दाह संस्कार कर दिया जाता तब आपकी तथाकथित 'समभाव दृष्टि' ठीक रहती, परन्तु यह युक्ति उस समय किसीने नहीं सुझाई।

पाठक इन एक दो उद्धरणोंसे ही सम्यक्तया समझ सकते हैं कि इस लेखके प्रारम्भमें ही हमने जो लिखा है कि—'लेखकने मुस्लिम-लीगी और उनके समर्थकोंके प्रभावसे प्रभावित होकर यह सब कुछ लिखा है, विचार और विवेकसे काम नहीं लिया।' यह हमारा अनुमान सर्वथा सत्य है। लेख बहुत बढ़ गया है अतः अभी हम यहीं विश्राम करते हैं, यदि आवश्यकता हुई तो लेखककी अन्यान्य बातोंकी भी कभी समीक्षा की जायेगी।



नये सिक्के

प्रथम अप्रैल १९५७ से चालू

	वर्तमान सिक्कों में ठीक ठीक समान मूल्य
१० नये पैसे—(एक रुपये का १/१० वां भाग)—	१ आना ७.२ पाइयां
५ नये पैसे—(एक रुपये का १/२० वां भाग)—	९.६ पाइयां
२ नये पैसे—(एक रुपये का १/५० वां भाग)—	३.८४ पाइयां
१ नया पैसा—(एक रुपये का १/१०० वां भाग)—	१.९२ पाइयां

पुराने सिक्के जैसे कि एक पैसा या १/४ आना, २ पैसा या १/२ आना, इकन्नी, दुअन्नी, चवन्नी और अठन्नी भी नये सिक्कों के साथ साथ चालू रहेंगे। चवन्नियां और अठन्नियां क्रमशः २५ नये पैसे और ५० नये पैसे के ठीक ठीक बराबर हैं और सभी प्रकार के उपयोग में लाई जा सकती हैं। नये और पुराने दोनों ही सिक्के भुगतान अथवा हिसाब किताब करते समय कानूनी रूप से मान्य होंगे।

परिवर्तन की सुविधाएं

परिवर्तन की सुविधायें रिजर्व बैंक कार्यालयों, स्टेट बैंक आफ इंडिया की शाखाओं और अन्य एजेंसी बैंकों, ट्रेजरियों और सब-ट्रेजरियों में प्रदान की जाएंगी।

नये सिक्के, वर्तमान सिक्के चार आने अथवा उसके गुणक संख्याओं जैसे कि आठ आने, बारह आने, एक रुपया आदि के बदले में दिये जाएंगे।

परिवर्तन तालिका

परिवर्तन तालिका आने पाई के सिक्कों का नये पैसे में विनिमय मूल्य बताती है (जैसा कि हाल में संशोधित भारतीय सिक्के एक्ट १९०६ के १४(२) वीं धारा के अनुसार पूर्णांकित किया गया है)। कुल राशि के मूल्य का ठीक सही नया पैसा निकालते समय १/२ नया पैसा या उससे कम को छोड़ देते हैं और १/२ नये पैसे से अधिक को एक नया पैसा मान लेते हैं।

एक ही भुगतान में दी जाने वाली राशि के आने पाइयों का नये पैसों में समान मूल्य

वर्तमान सिक्कों में राशि		समान मूल्य के	वर्तमान सिक्कों में राशि		समान मूल्य के	वर्तमान सिक्कों में राशि		समान मूल्य के	वर्तमान सिक्कों में राशि		समान मूल्य के
आने	पाइयां	नये पैसे	आने	पाइयां	नये पैसे	आने	पाइयां	नये पैसे	आने	पाइयां	नये पैसे
०	३	२	४	३	२७	८	३	५२	१२	३	७७
०	६	३	४	६	२८	८	६	५३	१२	६	७८
०	९	५	४	९	३०	८	९	५५	१२	९	८०
१ आना		६	५ आने		३१	९ आने		५६	१३ आने		८१
१	३	८	५	३	३३	९	३	५८	१३	३	८३
१	६	९	५	६	३४	९	६	५९	१३	६	८४
१	९	११	५	९	३६	९	९	६१	१३	९	८६
२ आने		१२	६ आने		३७	१० आने		६२	१४ आने		८७
२	३	१४	६	३	३९	१०	३	६४	१४	३	८९
२	६	१६	६	६	४१	१०	६	६६	१४	६	९१
२	९	१७	६	९	४२	१०	९	६७	१४	९	९२
३ आने		१९	७ आने		४४	११ आने		६९	१५ आने		९४
३	३	२०	७	३	४५	११	३	७०	१५	३	९५
३	६	२२	७	६	४७	११	६	७२	१५	६	९७
३	९	२३	७	९	४८	११	९	७३	१५	९	९८
४ आने		२५	८ आने		५०	१२ आने		७५	१६ आने		१००

तालिका में दी हुई रीति के अनुसार नये पैसों में पूर्णांकन करना केवल तभी आवश्यक है जब कि लेन देन के अंत में आने पाइयों को नये पैसों में परिवर्तित करना हो।

आप सारे नये सिक्कों में या सारे पुराने सिक्कों या कुछ नये पैसे और कुछ पुराने सिक्कों दोनों को मिला कर, जैसे भी आप के पास सिक्के हों, भुगतान कर सकते हैं।

परिवर्तन तालिका का प्रयोग केवल लेन देन के अंत में भुगतान करते समय अथवा खेरीज देते-लेते समय करना चाहिए। जैसा कि निम्न उदाहरणों में समझाया गया है।

उदाहरण : (जहां राशि आने पाइयों में दी हुई है)

मान लीजिए आपको १२ वस्तुएं डेढ़ आने प्रत्येक के हिसाब से खरीदनी हैं। आपको कुल १ रुपया २ आने देना है। खरीदार चाहे तो १ रु० २ आ० पुराने सिक्कों में दे।

अथवा

१ रुपया और १२ नये पैसे दे (तालिका के अनुसार २ आने का समान मूल्य है १२ नये पैसे)

ऊपर के उदाहरण में खरीदार २ रुपये पुराने सिक्कों में दे सकता है और बाकी पैसे मांग सकता है। उसे १४ आने वापस मिलने चाहिएं। १४ आने पूरे उसे पुराने सिक्कों में दिये जा सकते हैं *अथवा* कुल नये सिक्कों में *अथवा* कुछ पुराने सिक्कों और कुछ नये सिक्कों में। मान लीजिए आठ आने पुराने सिक्कों में दिये गये और ६ आने नये सिक्कों में। ६ आने का नये सिक्कों में समान मूल्य निकालने के लिए तालिका का प्रयोग कीजिए जो कि ३७ नये पैसे आता है।

उदाहरण : (जहां राशि नये पैसों में दी हुई है)

मान लीजिए एक वस्तु की कीमत ११ नये पैसे है। कोई भी व्यक्ति यह राशि नये पैसों में दे सकता है अथवा पुराने सिक्कों में १ आना ६ पाई दे सकता है। (तालिका के अनुसार १ आना ६ पाई का नये पैसों में समान मूल्य ११ नये पैसे है)

अगर एक व्यक्ति ११ नये पैसों के लिए २० नये पैसे देता है तो उसे ९ नये पैसे वापस देने चाहिएं अथवा समान मूल्य के पुराने सिक्के दिये जाएं जो कि १ आना ६ पाई होते हैं।

११ नये पैसों का भुगतान करने के लिए कोई व्यक्ति चवन्नी दे कर खेरीज वापस मांग सकता है। चार आने २५ नये पैसों के बराबर हैं, बाकी १४ नये पैसे लौटाने हैं। ये बाकी पैसे पूरे ही नये सिक्कों या पुराने सिक्कों में दिये जा सकते हैं। तालिका के अनुसार २ आने ३ पाई बराबर होते हैं १४ नये पैसों के। कोई भी व्यक्ति इकन्नी (यानी ६ नये पैसे) और ८ नये पैसे नये सिक्कों में लोटा दे।

दरों या लागत की इकाइयों को जो कि आने-पाई में हों, कुल मूल्य या राशि निकालने के पूर्व नये पैसों में बदलना आवश्यक नहीं है।

उदाहरण :

(१) अगर ३ आने प्रत्येक वस्तु के हिसाब से ५० वस्तुएं खरीदनी हों तो पहले कुल राशि रुपये आनों में निकालिये। आपको ९ रुपये ६ आने देने हैं।

(२) अगर आपके पास केवल नये पैसे हैं तो आप मालूम करते हैं कि ६ आने ३७ नये पैसों के बराबर हैं। इस प्रकार आप ९ रुपये और ३७ नये पैसे चुकाते हैं।

अगर आप ३ आनों का ठीक ठीक समान मूल्य यानी १८$\frac{३}{४}$ नये पैसों को लेते और ५० से गुणा करते तो भी परिणाम यही निकलता, पर यदि आप ३ आने का निर्धारित समान मूल्य परिवर्तन तालिका से यानी १९ नये पैसे लेते और ५० से गुणा करके निकालते तो यह गलत होता।

इसी प्रकार यदि आप विभिन्न दरों की कई वस्तुएं एक साथ खरीदते हैं और वे दरें रुपये-आनों में हैं। पहले आप कुल राशि रुपये आने पाई में निकाल लीजिए। अगर आप नये सिक्कों में मूल्य चुकाना चाहते हैं तो कुल राशि के आने पाइयों को परिवर्तन तालिका के जरिये नये पैसों में बदल लीजिए।

आप परिवर्तन को यह याद रखकर सरल बना सकते हैं कि—

४ आने	बराबर	२५ नये पैसे
८ आने	बराबर	५० नये पैसे
१२ आने	बराबर	७५ नये पैसे
१ रुपया	बराबर	१०० नये पैसे

उदाहरण :

(१) मान लीजिए आपको १०$\frac{१}{२}$ आने चुकाने हैं। पहले आप ८ आने या ५० नये पैसे दीजिए। शेष ढाई आने जो कि १६ नये पैसों के बराबर हैं, दे दीजिए।

(२) ३६ नये पैसों का अपको भुगतान करना है। पहले आप ४ आने या २५ नये पैसे दीजिए। शेष ११ नये पैसों के लिए १ आना ६ पाई दे दीजिए।

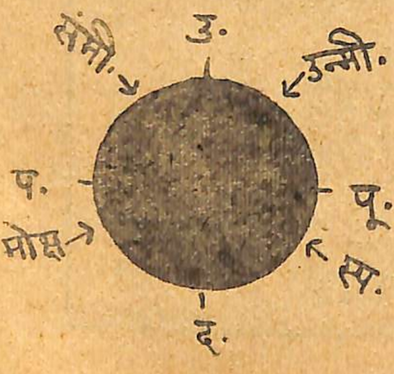
DA 56/250

खग्रास चन्द्रग्रहण

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

वैशाख शु० १५ सोमवारको अर्धरात्रिके उपरान्त ता० १४ मई १९५७ मंगलवारको सूर्योदयसे पहिले पश्चिम क्षितिजकी ओर खग्रास चन्द्र ग्रहण दिखाई देगा। पूर्वी भारत असम उड़ीसा बंगाल बिहार उत्तरप्रदेश पू. पंजाब दिल्ली ग्वालियर झांसी नागपुर जब्बलपुर धौलपुर भरतपुर और विन्ध्यप्रदेशमें यह ग्रहण ग्रस्तास्त होगा, अर्थात् ता० १४ मई मंगलवारको प्रातः सूर्योदयके समय कुछ ग्रहण लगा हुआ चन्द्रमा (मोक्षसे पहले) पश्चिममें अस्त हो जावेगा। उज्जैन इन्दौर जयपुर कोटा अजमेर उदयपुर जोधपुर बीकानेर हिसार रोहतक भटिण्डा फिरोजपुर बम्बई पूना सौराष्ट्र मैसूर मद्रास हैदराबाद अमरावती और पश्चिमी पाकिस्तानमें ग्रस्तास्त नहीं है अर्थात् वहां ग्रहण मोक्षके बाद (प्रातः ५ बजकर ४७ मिनटके बाद) चन्द्रमा अस्त होगा। सोमवारकी रात्रिमें चन्द्र ग्रहण होनेसे चूड़ामणी नामक योग बन गया है, इस योगमें गंगादि पुण्य तीर्थ पर स्नान दानादिका विशेष महात्म्य है। इस चन्द्रग्रहणका भारतमें सर्वत्र स्टेण्डर्ड टाइमके अनुसार स्पर्शादिकाल निम्नाङ्कित है—

अर्धरात्रोत्तर स्टेण्डर्ड टाइम	घं०	मि०
स्पर्श (ग्रहणप्रारम्भ)	२	१५
सम्मीलन	३	२१
मध्य	४	१
उन्मीलन	४	४१
मोक्ष (ग्रहण समाप्ति)	५	४७



रात्रिके ३ बजकर २१ मिनटसे ४ बजकर ४१ मिनट तक इस चित्रके समान पूर्ण ग्रहण सर्वत्र दिखाई देगा। सर्वग्रहण वा पर्वकाल ३ घण्टे ३२ मिनटका है।

इस ग्रहणका वेध(सूतक) ता० १३ मई सोमवारको सायंकाल ५।१५ पर प्रारम्भ होगा। बाल वृद्ध रोगी और अशक्त व्यक्तियोंके अतिरिक्त धार्मिक जनोंको ग्रहण वेधमें भोजनादि करना निषेध है।

राशिफल—यह ग्रहण तुला वृश्चिक राशि और विशाखा नक्षत्रमें हो रहा है, मध्यकालके समय मेष लग्न है अतः मेष तुला वृश्चिक मीन कर्क मिथुन कन्या और कुम्भ राशि वाले प्राणियों तथा राष्ट्रोंको कष्ट भय चिन्ता अपव्यय हानि आदि अशुभ फल कारक है, अतः ये लोग ग्रहणका दर्शन न करें, कल्याणार्थ जप पाठ हवन दानादि करें। वृषभ सिंह धनुः मकरराशि वालोंके लिए शुभ है। इस ग्रहणका विशेषफल आगे "दैवज्ञकीदृष्टिमें संसार चक्र" में पृष्ठ ४९-५० पर दिया गया है वहां देखें।

कंकण सूर्यग्रहण

वैशाख कृष्णामावस्या सोमवार अर्धरात्रोत्तर ता० ३० अप्रैल १९५७ ई० को सूर्यग्रहण होगा। यह ग्रहण साइबेरियासे उत्तरकी ओर ही कंकणाकृति दिखाई देगा। उत्तरी अमेरिका केनाडा ग्रीनलैंड साइबेरियाके दक्षिणी भाग, चीन जापान कोरिया आदिमें खण्डग्रास दिखाई देगा। उत्तरी ब्रह्मदेश उत्तरी थाईलैंड दक्षिणी चीन भूतान लाओस आदि प्रदेशोंमें ग्रस्तोदय खण्डग्रास होगा। ता० ३० अप्रैल मंगलवारको प्रातः सूर्योदयके समय भारतके सुदूरपूर्वी प्रदेश असम गोहाटी सिलचर मणिपुरमें मोक्ष होता हुआ केवल दो तीन मिनटका सूर्यग्रहण दिखाई देगा। पूर्वी असममें यह सूर्यग्रहण केवल ३ मिनटके लिए ग्रस्तोदय होकर मोक्ष हो जायेगा, वहां भी सूर्योदयके समय दूरवीक्षण यंत्र (दूरबीन) से ही सूक्ष्मरूपमें दिखाई देगा। भारतमें अन्यत्र कहीं भी यह ग्रहण नहीं है अतः भारतमें इसका पर्वकाल वेधादि माननेकी आवश्यकता नहीं।

—

भगवती आदि शक्तिकी उपासनाका महापर्व

[लेखक—श्री भनुभाई दवे]

[ब्रह्मासे लेकर कीटपर्यन्त समग्र विश्वका जो सृजन, पालन और संहार करती है, उसी महाशक्तिकी आराधना, अभ्यर्चनाका महामांगलिक पर्व नवरात्र है। उपासकोंके लिये नवरात्रोंका बहुत बड़ा महत्त्व है। वे नवरात्रोंका समस्त समय माताके स्मरणमें ही व्यतीत करते हैं और उस अपरा शक्तिकी झलक उपलब्ध करनेके प्रयासमें अहर्निश दत्तचित्त रहते हैं। माताके दर्शन पानेकी महत्वाकांक्षासे अभिभूत उपासकको उनकी झांकी अवश्य होती है। शक्तिके अनेक रूप हैं। भक्तजन विभिन्न रूपोंमें उनका भजन-अभ्यर्चन करते हैं। यदि पवित्र भावसे, गद्गद् कण्ठसे जगदम्बाकी प्रार्थना की जाये, तो अवश्य वे अनुकम्पा करती हैं। मानव निरन्तर भूलें करता रहता है, कुछ भी क्यों न हो, फिर भी माताका तो पुत्र ही है। महान् अपराधी पुत्र भी माताकी शरणमें आकर गिड़गिड़ाता है, तो पतितपावनी जगन्माता उसे भी गोदमें भर लेती है और उसके समग्र पापोंको क्षमा कर देती है। "कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।" विद्वान् लेखकने इस लेखमें महाशक्ति स्वरूपिणी जगदम्बाकी आराधना महत्ता और उसके विभिन्न रूपों पर प्रकाश डाला है यह जिज्ञासूजनोंके लिए उपयोगी होगा।
—सम्पादक]

शक्तिका अर्थ क्या है ? यह प्रश्न स्वभावतः उठ खड़ा होता है। यह शक्ति कौन-सा पदार्थ है ? इसका उत्तर यह है कि प्रत्येककी आदिभूता और प्रकाशरूपा कहनेका तात्पर्य यह है कि ब्रह्मा, विष्णु और रुद्रकी भी यह आदि है, इसका आदि कोई नहीं।

शक्ति विश्वसिद्धि-मूलक अर्थात् जगत्की उत्पत्ति, स्थिति, संहारकी कार्य-कारणस्वरूपा है। ब्रह्मासे लेकर कीट-पतंगपर्यन्त समग्र जगत्का निर्माण-पालन और संहार यही महाशक्ति करती है। शक्तिकी आराधना और अर्चना करनेसे देवों और मानवोंको धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये चारों पदार्थ प्राप्त होते हैं। दुर्गा सप्तशतीमें कहा गया है:—

आराधिता सैव नृणां भोग-स्वर्गापवर्गदा

अर्थात् आराधना करनेसे भगवती शक्ति मानवको ऐश्वर्य-भोग, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करती है। इस महान् शक्तिकी उपासनासे विविध विषयोपभोगपरायण जीव-विशेषको पुनः गर्भमें निवास करना नहीं पड़ता। जगद्गुरु शंकराचार्यने कहा है कि एकमात्र कुण्डलिनी शक्ति ही इस विश्व-सृजनके व्यापारमें प्रयत्नशील है—उद्यम कर रही है, यह जान लेने पर मानव पुनः माताके गर्भमें बाल-भावको प्राप्त नहीं होता।

महाशक्तिका आराधन

शास्त्रीय सिद्धान्तसे यह प्रतिपादित होता है कि जगदम्बा ही एकमात्र अखिल भूमण्डलमें समस्त कार्य करनेके लिये शक्तिमान् है—स्वतन्त्र है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव और अन्य देवगण इस महाशक्तिके नेतृत्वमें ही अपने-अपने कार्यका सुयोजित सम्पादन कर रहे हैं। ब्रह्माण्डपुराणमें कहा गया है:—

स्वतन्त्राहं सदा देवा स्वेच्छाचार विहारिणी।

इसी प्रकार श्रुति-स्मृति आदिसे यह सिद्ध होता है कि यह शक्ति ही प्रत्येक स्थान पर परिव्याप्त है। देवी भागवत में लिखा है:—

वर्तते सर्वभूतेषु शक्तिः सर्वात्मना नृप !
शववच्छक्तिहीनस्तु प्राणी भवति सर्वदा॥

अर्थात् हे राजन् ! सम्पूर्ण भूतोंमें सर्वरूपसे शक्ति वर्तमान है। शक्तिहीन मानव तो शवके समान हो जाता है। इस प्रकार समग्र सृष्टिकी उत्पत्ति शक्तिकी इच्छाकी ही परिणति है।

नवरात्रका माहात्म्य

ऐसी महान् अद्वितीय शक्तिका महापर्व—उसकी आरा-

धना-अर्चनाका पुनीत पर्व—उसकी उपासनाके पवित्र नव दिन 'नवरात्र' कहलाते हैं। शक्तिका संचार प्रत्येक प्राणीमें होता है। साधु पुरुष और दुष्टमें भी शक्ति होती है। किन्तु दोनोंकी शक्तिमें अन्तर इतना ही है कि साधु पुरुष अपनी शक्तिका सदुपयोग दूसरेकी रक्षाके लिये दूसरोंके कल्याणके लिये करता है और दुष्ट मनुष्य अन्य लोगोंको पीड़ा पहुँचा कर अपनी शक्तिका अशुभमूलक दुरुपयोग करता है। इस प्रकार मानवकी प्रकृतिके अनुसार शक्तिका उपयोग होता है। शक्तिके उपयोगको कल्याणमय बनानेके लिये यह उचित है कि हम इस महाशक्तिका सदुपयोग करना सीखें।

शक्तिका उपयोग कैसे किया जाय

माता दुर्गा स्वयं शक्ति-स्वरूपिणी हैं—जगन्माता हैं। इन्ही माता दुर्गाने अपनी संतानको शक्ति प्रदान की है और यह भी बताया है कि इस शक्तिका उपयोग कैसे किया जाये। शक्तिका प्रादुर्भाव केवल पुरुषोंके लिये ही नहीं, अपितु स्त्रियोंके लिये भी महत्त्वपूर्ण है। विश्वइतिहासमें माता दुर्गाजगदम्बा भगवतीकी पुण्य पुत्रियोंने अपनी शारीरिक शक्ति और बुद्धि-शक्तिसे जगत्को चकित कर दिया है। किन्तु ऐसी अवस्था तभी आती है, जब पुरुष हार मान कर बैठ जाता है अथवा अपनी शक्तिके सिवा उसका अन्य कोई सहायक नहीं होता।

स्त्री-शक्तिकी महत्ता

यह स्मरण रखना अत्यावश्यक है कि स्त्रीमात्र भगवती जगदम्बाकी पवित्र प्रतिमा है। (स्त्रियः समस्ता सकला जगत्सु) वे आदिकालसे जगत्को पवित्र करनेके लिये पुत्र और पुत्रियोंके रूपमें शक्तियोंका अवतरण करती आ रही हैं; किन्तु अवतरण या उत्पादन करने मात्रसे ही काम नहीं चलता। माताको—उस महाशक्तिको अपने बालकोंको शैशवकालसे ही उदाहरण, उपदेश और शिक्षा द्वारा ऐसे सामर्थ्यसे भरपूर बना देना चाहिये कि ये बालक श्रीराम और लव-कुशके समान तेजस्वी हों, प्राणवान् हों, निर्भीक हों, सदाचारी हों और उनमें अन्याय और अत्याचारोंको दमन करनेकी सम्पूर्ण शक्ति विद्यमान हो। जिस माताके पुत्रने सर्वतोभद्रभावनासे प्रेरित होकर अपने जीवनका उत्सर्ग नहीं कर दिया; वह माता व्यर्थ ही माता बनी। आज लोग यह कहते पाये जाते हैं कि भीम, अर्जुन, प्रताप और शिवाजी जैसे पुत्र-रत्न तथा सीता, दमयन्ती, शकुन्तला-जैसी सुपुत्रियोंका जन्म आजकी मातायें दे नहीं रही हैं। किन्तु यह बात माननेके लिये हम उद्यत नहीं।

राष्ट्रिय गौरवका भान करायें

आज भी ऐसे ही महान् और प्रभावशाली मानवोंका जन्म होता है, किन्तु मातायें अपने कर्तव्यका पालन वस्तुतः करती नहीं। शक्ति सच्चे मार्ग पर अग्रसर नहीं होती। माता बालकको जन्म देना मात्र ही जानती है, किन्तु अपने बालकोंको वीर और पुरुषार्थी व्यक्तिके व्याख्यान नहीं सुनाती; फलतः बालक उच्चभावोंसे उद्बुद्ध नहीं होता और न समाज, देश तथा धर्मके लिए लाभकर ही सिद्ध होता है। अतः बालकको राष्ट्रगौरवका स्मरण कराना नितान्त आवश्यक है। इस प्रकार आज मातायें स्वयं ही शक्तिहीन हो गयी हैं। वह 'अबला' कहलाने लगी हैं। अब उन्हें अपने कर्तव्य-पथ पर कटिबद्ध होनेकी आवश्यकता है। शक्ति बिजलीकी भांति प्रवहमान् होगी, तभी सन्तान भी शक्ति और सामर्थ्यसे परिपूर्ण होगी।

मातृशक्तिकी महत्ता

हम आगे बढ़नेके प्रयासोंमें सच पूछा जाये, तो पीछे हटते जा रहे हैं। हमने यह विस्मरण कर दिया है कि देशकी शक्ति उसकी मातृ-शक्तिपर ही निर्भर करती है। यदि मातृशक्तिके यथार्थ स्वरूपका विकास हो जाये, तो हमारा देश पुनः महात्माओं, तपस्वियों, वीरों और विद्वानोंसे भरपूर हो जाये। देशकी माताओंमें अब भी महान् शक्ति वर्तमान है, किन्तु वे अपनी शक्तिका प्रयोग करना भूल गयी हैं। फिर भी नवरात्र-महोत्सव-जैसे अवसरों पर नारी शक्तिके गौरवका गान श्रद्धापूर्वक किया जाता है। राक्षसोंको अकेले मात्र अपनी शक्तिके बल पर मारने वाली महिषासुरमर्दिनी अम्बिका—दुर्गाकी अमोघ शक्तिका स्मरण एक बार फिर गूँज उठा है।

दिव्य शक्तिकी आराधना

इन दिनों विविध प्रकारसे भगवती जगदम्बाकी आराधनासे भारतके जन-गण ज्योतिर्मयी शक्तिको दीपककी ज्योतिमें प्रकाशित कर इस ज्योतिके प्रकाशमें नवशक्तिकी

पुण्य संस्मरण—

सरलताकी प्रतिमूर्ति, स्वाभिमानके अवतार, पाण्डित्यके प्रतिष्ठा-पुञ्ज

स्व० श्री पं० केदारनाथजी महाराज

[आचार्य श्री रसेन्द्र शास्त्री]

इस बात पर अब भी सहसा हृदयको विश्वास नहीं होता कि श्रीपण्डित केदारनाथजी महाराज दिवंगत-परिगणनीय हो गये। जो लोग भी उनके थोड़ेसे सम्पर्कमें आये होंगे वे जानते होंगे कि कालके इस कुटिल कराल प्रहारसे भारतीय खगोल विज्ञानकी कितनी अधिक क्षति हुई है। किंतु 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' इस गीतोक्त सिद्धान्तानुसार अब ऐसे प्रसंगों पर विवश होकर धैर्य धारण करना ही पड़ता है।

अभी थोड़े दिन पूर्व ही भारतकी राजधानी दिल्लीमें अखिल-भारतवर्षीय ज्योतिष-सम्मेलनके अध्यक्ष पदसे स्वर्गीय श्री पण्डितजी महाराजने जो अनुपम वैदुष्यपूर्ण सारगर्भित वक्तृता दी थी, उससे न केवल समुपस्थित विद्वद्वर्ग अपितु लोकसभाके अध्यक्ष स्वनामधन्य श्री अनन्तशयनम् आयंगर महोदय तक चकित हो उठे थे! कौन जानता था कि यह उनका अन्तिम भाषण ही होगा।

स्वर्गीय पण्डितजी महाराजमें कतिपय ऐसी विशेषताएँ थीं जिनके कारण उनका भूलना एक बड़े प्रयासका विषय बन गया है। आपने वरसों 'काव्य-माला' का सम्पादन किया, अनेक पुस्तकें स्वर्गीय रामकृष्ण भण्डारकरके साथ निकालीं, वर्षों तक 'रायल एशियाटिक सोसाइटी' के सदस्य रहे। जयपुर और दिल्लीकी वेधशालाओंका संस्कार कर खगोल विज्ञानको एक नई दिशा दी, किन्तु इन सब बातोंके होने पर भी आप शिशुसे सरल एवं अपनी साधारण वेष भूषामें ही आजीवन रहे। अभिमान या अहंमन्यता जो साधारणसे विद्वानोंको भी हो जाती है, आप उससे सदैव दूर रहे। दृढ़ता और स्वाभिमान आपके जीवनके मूल

उपलब्धि करते हैं। इस प्रकार शक्तिके समाराधनका महापर्व—अद्वितीय महोत्सव नवरात्रके नामसे अभिहित किया जाता है। इन नवरात्रोंमें नित्य मातायें और उनके पुत्र प्रचण्ड मातृशक्तिका गुणगान करते हैं। अपनी टूटी-फूटी भाषासे माताको प्रसन्न करनेका प्रयास करते हैं। माताका अनुग्रह-आशीर्वाद प्राप्त करनेकी महत्त्वाकांक्षा रखते हैं।

माताके विभिन्न रूप

मातृ-शक्तिके अनेकशः रूप हैं। उसके पुत्र-पुत्रिगण अनेकशः नामोंसे उस माता शक्तिको जानते मानते हैं और उसकी कृपा-करुणा-प्राप्तिके लिए प्रयत्नशील रहते हैं। कोई इस दिव्य शक्तिको चक्षुओंमें अवतीर्ण करनेके लिए ध्यानस्थ होकर माताके साथ आत्मिक तादात्म्य स्थापित करता है, तो कोई अनेक स्तोत्रों द्वारा उनके गुणगानमें ही तल्लीन रहता है। कोई मांकी विविध शक्तियोंके परिचायक कार्योंको संगीत-ध्वनिमें सुयोजित कर आनन्द मनाते हैं। इस प्रकार नवरात्र अर्थात् मातृ-शक्तिके गुणगान करने— उनकी विराट्व्यापिनी शक्तिका यत्किंचित् ज्ञान करने और उनकी भक्ति भावनापूर्ण पूजा-वन्दना करनेका यह पवित्र पर्व है।

जो हो, नवरात्रके पुनीत पर्व पर माता-शक्ति-ब्रह्मविद्या की प्रार्थना, पूजा, अर्चना, वन्दना, उपासना, आराधना आदि नित्य करना चाहिए और नवरात्रका समग्र समय निर्मल प्रेमसे, उमङ्गसे व्यतीत करना चाहिए। इसीलिए नवरात्रमें उपवास करने, ब्रह्मचर्य-पालन करने, मनको विशुद्ध, सुस्थिर बनाये रखने तथा अति भक्तिप्रेमसे गद्-गद् होकर माता विश्वम्भराका गुण-कीर्तन करनेका आदेश हमारे दूरदर्शी ऋषियोंने दिया है।

—

मन्त्र रहे।

श्री पण्डितजीका और मेरा सम्बन्ध विगत सात वर्षों से रहा। उन दिनों वे दिल्लीका सुप्रसिद्ध जन्तर मन्तर (वेधशाला) ठीक करा रहे थे।

स्वर्गीय श्री पंडितजी मूलतः अलवर राज्यके निवासी थे। आपके पितामह श्री पं० व्रजलालजी अपूर्व विद्वान् थे और काश्मीर नरेशसे सम्मानित होकर वहीं रहते थे। आपके पिता महामहोपाध्याय श्री पं० दुर्गाप्रसादजी भारतके इनेगिने विद्वानोंमें प्रमुख थे। राजस्थानसे सर्वप्रथम महा-महोपाध्यायका सम्मान उन्हें ही प्राप्त हुआ था। वे नैष्ठिक पंडित होनेके साथ-साथ अत्यन्त दानी एवं त्यागी तेजस्वी पुरुष थे। वे कश्मीरको छोड़कर जयपुर आ गये थे। उनके कश्मीर त्यागके बारेमें यह घटना अब किंवदन्तीका रूप धारण कर चुकी है :—

"वर्तमान सदरे रियासत काश्मीरके पितामह विद्वानों का बड़ा सत्कार सम्मान किया करते थे। उनके राज्यमें विशिष्ट विद्वानोंका सदैव तांता लगा रहता था। उन्हीं दरबारी पंडितोंमें श्री महामहोपाध्याय दुर्गाप्रसादजीका भी प्रमुख स्थान था। एक बार किसी शुभावसर पर काश्मीर नरेशने पंडितोंको कुछ दक्षिणा और नवीन शालोंसे सत्कृत किया। उक्त पंडितजीको भी वह नियमानुसार प्राप्त हुआ। मार्गमें लौटते समय कोई याचक उन्हें मिला जो सर्दीसे ठिठुर रहा था। पंडितजीने वह शाल और प्राप्त दक्षिणा द्रव्य सारा ही उस दीन याचकको दे दिया। जैसा कि प्रायः होता है जहां गुणी रहते हैं वहां कुछ दुर्जन भी रहते ही हैं। किसी व्यक्तिने उक्त दान कथाको महाराजसे अन्य रूपमें कह दिया कि यह तो आपके सत्कारकी अवहेलना की गई है। दूसरे दिन जब अन्य पंडित नवीन शालोंसे युक्त होकर गये जो उन्हें पहले दिन प्राप्त हुए थे और वे अपने पुराने ही वस्त्रोंमें गये तो महाराजने स्वभावतः उनसे पूछा कि 'आपने मेरी भेंट को स्वीकार नहीं किया क्या?' यद्यपि यह व्याजोक्ति थी फिर भी इसका मर्म न जानते हुए सरलता पूर्वक गूढ़ भाषामें पंडितजीने उसका उत्तर दिया कि—'राजन्! वह तो मैंने कल ही स्वीकार कर लिया था, किन्तु मैंने उसे सुन्दर रूपमें भविष्यके काम आनेके लिए एक सुरक्षित स्थान पर रख दिया है।' यद्यपि इसमें पंडितजीका गूढ़ आशय निहित था, और जब तक इस पर राजा विचारें तब तक किसी कुटिलमना वावदूक दरबारीने कह दिया कि 'महाराजके राज्यमें भी ऐसी कृपण-वृत्ति रखना कहां तक उचित है?' यद्यपि बात साधारण थी, किंतु उसमें निहित दुर्वृत्ति और कुटिलताको लक्ष्यकर पंडितजीने तुरन्त उस सभाका बहिष्कार कर दिया कि जिस राज्यमें ऐसे कुटिल वृत्ति वाले लोग हों वहां मेरे जैसे स्वाभिमानी का निर्वाह कठिन है। यद्यपि महाराज काश्मीरने काफी उनसे क्षमा-याचना भी की, किन्तु 'सदाभिमानैक धना हि मानिनः' के अनुसार एक बार जो निश्चय कर लिया तो उस पर हिमालयकी भांति अटल बने रहे और काफी बड़ी जागीरको छोड़कर अपने ग्राम हमजापुर तहसील बहरोड़ तत्कालीन राज्य अलवरमें चले आये। महाराज काश्मीर और जयपुरका पारस्परिक सम्बन्ध था। जब जयपुर महा-राजको इस घटनाका पता लगा तो उन्होंने साग्रह पंडितजी को अपने यहां बुला लिया और कुछ सत्कार निमित्त मासिक निर्धारित कर दिया।

इसी ग्राम हमजापुरमें पंडित केदारनाथजीका जन्म हुआ। इनकी माताका नाम म्हौराबाई था। बाल्यकाल आपका जयपुरमें ही व्यतीत हुआ। महामहोपाध्याय पं० दुर्गाप्रसादजीने सर्वप्रथम प्राचीन ग्रन्थोंकी शोधकर 'काव्य-माला' का प्रारंभ किया था—आज भी लोग अनुभव करते हैं यदि उस समय 'काव्य माला' का प्रारम्भ नहीं हुआ होता तो आज तक बहुतसे अलभ्य ग्रंथोंका पता तक विदित न होता। 'काव्यमाल' के संस्करणोंमें जितने भी ग्रन्थोंका प्रकाशन हुआ वे सब इतने उपयोगी प्रमाणित हुए कि उनका विदेशों तकमें खूब प्रचार हुआ। वह भी एक विशेष युग था—जब बहुत कम संस्कृत ग्रंथोंका प्रकाशन हुआ था—पुरातत्वकी शोधका नाममात्र लोग सुना करते थे—उनकी ही प्रेरणासे बादमें अनेक लोगोंने संस्कृत ग्रंथोंके प्रकाशनका कार्य आरम्भ किया। यदि महामहोपाध्याय श्री पं० दुर्गाप्रसादजी कुछ दिन और जीवित रहते तो 'काव्य-माला' की योजना और भी पूर्ण होती, किन्तु ४५ वर्षकी स्वल्प आयुमें ही उनका स्वर्गवास हो गया। उन दिनों श्री पंडित केदारनाथजी की आयु केवल १० वर्षकी थी।

श्री पंडित केदारनाथजी बाल्यकालसे ही प्रतिभाशाली

एवं व्युत्पन्न थे। बचपनमें ही उनके पांडित्यकी ख्याति विद्वद्वर्गमें पहुँच चुकी थी। महामहोपाध्याय जीके दिवंगत होने पर जयपुर महाराजने उनकी समस्त वृत्ति इन्हें सौंप दी और ज्योतिष विषयक गवेषणापूर्ण अध्ययनका परामर्श दिया। उक्त ज्योतिर्विषयक परामर्शदाताओंमें स्व० विद्यावाचस्पति श्री मधुसूदनजी ओझा प्रमुख थे। श्री पंडितजी ने उनके परामर्श पर पौरस्त्य और पाश्चात्य ज्योतिषका गहन मनन किया। उन्हीं दिनों जयपुरमें एक चीफ इंजीनियर गैरट नामक आये हुए थे—वे खगोल विज्ञानके अच्छे पंडित थे, उन्होंने यंत्रशालाके कुछ यंत्रोंका सुधार कराया था। जब पंडितजीने उन यंत्रोंको देखा तो उनमें कतिपय यंत्रोंको अशुद्ध पाया। बस इसी अवसर पर उन्होंने अपनी प्रतिभा और शास्त्राभ्यासका वह चमत्कार दिखलाया जिसने उन्हें ख्यातिके उच्च शिखर पर पहुँचा दिया। स्व० विद्यावाचस्पति मधुसूदनजी ओझाकी अध्यक्षता में नियुक्त एक विद्वानोंकी समितिमें पंडितजीने यंत्रोंकी इस अशुद्धिका रहस्योद्घाटन किया और ग्रहोंको प्रत्यक्ष साधित दिखलाकर यंत्रोंसे गणितमें जो अंतर रहता था वह भी बतला दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि महाराज जयपुर ने आपकी अध्यक्षतामें एक विभाग स्थापित किया और आपको यंत्रोंके संस्कारका कार्य सौंपा। श्री पंडितजीने अत्यन्त मनोयोग पूर्वक ग्यारह यंत्रोंको शुद्ध किया और उसी समय शुद्ध दृश्य गणितमें उपयोगी महत्वपूर्ण सारणियोंका निर्माण किया जो खगोल विज्ञानकी महत्वपूर्ण वस्तु है। पंडितजीकी इच्छा उन्हें अपने जीवनमें ही प्रकाशित करानेकी थी किंतु पंद्रह बीस हजार रुपयेका व्ययसाध्य कार्य वे अपने जीवनमें न करा सके। इधर 'काव्यमाला' भी अवरुद्ध हो गई थी, और निर्णय सागर बम्बईसे ग्रन्थोंके प्रकाशनमें असुविधा और विलम्ब भी होता था—अतः पंडित जीने जयपुरमें ही अपना एक प्रेस स्थापित कर 'काव्यमाला' का आरम्भ किया। किन्तु योग्य सहायकोंके अभावमें एवं इस दिशामें अनेक कठिनाइयोंसे यह प्रक्रम रुक ही गया। जयपुर वेधशालाका कार्य पूर्ण होने पर पंडितजीने देहलीकी वेधशालाके यंत्रोंका कुछ शोधन किया ही था कि राजस्थान राज्यकी स्थापना हो गई और वह कार्य अधूरा ही रह गया।

जैसा कि विद्वानोंमें प्रायः होता है, अपनी सरलता एवं त्यागवृत्तिके कारण उन्हें अनेक कठिनाइयोंका भी सामना करना पड़ता है, वैसे ही पंडितजी भी इसके अपवाद न रहे। समयके परिवर्तनके साथ-साथ इन्हें भी विविध कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कितने ही लोगोंने इनके साथ विश्वासघात किया; कितने ही अवसर इन्हें ऐसे आये यदि ये थोड़ा भी स्वाभिमान छोड़ देते तो काफी सुख सुविधाएँ प्राप्त कर सकते थे, किंतु अपनी इस विशेष वृत्तिके कारण जीवनके उत्तरार्धमें पंडितजीको काफी आर्थिक कष्ट सहना पड़ा। एक वह भी समय था—जब पंडितजीके यहां दो-दो कारें, बग्घियां तथा पच्चीसों नौकर रहा करते थे—किन्तु उत्तरार्ध कालमें वे सब वस्तुएं लोप-सी हो गई थीं "बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा।"

श्री पंडितजीने अनेक ग्रन्थ लिखे किन्तु कुछकी तो पाण्डुलिपियां लोग ले गये और कुछ अपूर्ण हैं। मृत्युसे कुछ मास पूर्व पंडितजी एक नवीन सिद्धान्त ग्रन्थ 'केदार सिद्धान्त' के नामसे लिख रहे थे, किन्तु वह बहुत थोड़ा ही लिखा जा सका। इसी प्रकार 'भरत नाट्यशास्त्र' और 'सरस्वती कण्ठाभरण' का ललित हिन्दी अनुवाद भी करने की उनकी कामना अपूर्ण ही रह गई। प्राप्य प्रकाशित साहित्यमें 'काव्यमाला' के कुछ खण्ड भण्डारकर इंस्टीट्यूट पूनासे सम्पादित कुछ पुस्तकें तथा हालमें ही 'राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर जयपुर' से प्रकाशित 'यन्त्र-राज रचना' उनकी सम्पादित कृतियां हैं। मौलिक कृतियोंमें ग्रहसारिणी तथा स्फुट श्लोक हैं जो अभी अप्रकाशित हैं। विद्वानोंको इन सारणियोंके प्रकाशनका उद्योग करना चाहिये।

पंडितजी खगोल वेत्ता तो भारत विख्यात थे ही, किन्तु उससे अधिक वे सहृदय साहित्यिक थे। आर्या उनका प्रिय वृत्त था। पंडितजी एक दिनमें 'आर्या पंचशती' (पांच सौ) का निर्माण करनेकी क्षमता रखते थे। वर्तमान कवियों एवं कविताओंमें उन्हें विशेष आनन्द नहीं आता था। श्री हर्ष, बिल्हण और कालिदास ही उनको विशेष प्रिय थे। वे कहते थे कि प्राचीन साहित्य ही इतना अगाध और अज्ञात कर्तृक एवं अप्रकाशित पड़ा है कि यदि उसे ही देखा जाय तो पर्याप्त है फिर नवीन साहित्य बढ़ाकर वृथा क्यों श्रम

किया जाय ? वे बहुत ही मस्त और मनमौजी तबियतके रहे। 'काव्य शास्त्र विनोद' ही एकमात्र उनका व्यसन था और जो व्यक्ति एकबार उनसे मिलता वह घंटों उनके पाससे उठनेकी इच्छा नहीं कर सकता था—ऐसा कुछ विलक्षण माधुर्य और रस उनकी वाणीमें था।

पंडितजीकी इच्छा थी कि प्राचीन पंडित स्थूल पक्षका आग्रह छोड़कर नवीन शुद्ध दृश्य गणितको ही कार्यमें लें। 'दादा वाक्यं प्रमाणम्' पर उनकी जरा भी श्रद्धा नहीं थी। अनेक बातोंमें उन्हें आंग्ल सभ्यता भी प्रिय थी। स्थूल गणित (ग्रहलाघव, मकरन्द, सूर्यसिद्धांतादि) की व्यर्थता को वह अनेक बार यंत्रों द्वारा प्रत्यक्ष सिद्ध कर चुके थे। वे इस विषयको अखिल भारतीय दृष्टिसे सर्वसम्मत मनानेके पक्षमें भी थे। इतना सब होते हुए भी भारतीयतासे रहित कोई भी व्यवहार उन्हें प्रिय नहीं था। केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारित 'कलेंडर कमेटी' ने जब उनसे अभिमत मांगा तो उन्होंने उसकी बुराइयोंकी कड़े शब्दोंमें समालोचना की।

गणितके साथ-साथ वे फलित एवं सामुद्रिकके भी प्रकाण्ड विद्वान् थे। बहुत कम लोगोंको वे फलित बतलाते थे और जिसे जो बतला दिया वह समय एवं तिथि तक ठीक रूपमें उसे मिला। फलितशास्त्र पर भी एक स्वतन्त्र ग्रन्थ 'राशिशील' विषयक निर्माणका उनका विचार था किंतु वह भी अपूर्ण ही रहा। अपने जीवनभर केवल जयपुर महाराज या उनके परिवार तथा कुछ विशेष आत्मीय लोगोंको छोड़कर किसीका भी कभी न तो उन्होंने जन्म-पत्र ही निर्माण किया न किसी भी अंशमें वृत्तिका पालन किया—केवल अध्ययन, शोध और शास्त्रानुशीलनमें ही उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया—इसी कारण वे अधिक ख्याति एवं धनका संचय न कर सके। यदि ऐसा महाविद्वान् किसी विदेशमें होता तो वहां न जाने कितना सम्मान मिलता, किंतु यह भारतवर्ष जिसके बारेमें किसी विदेशीने ठीक ही मत प्रकट किया है कि :—'यहांके लोग बुत परस्त हैं, मनुष्यको जीवित दशामें कुछ नहीं मानते किंतु मृत्युके पश्चात् उसकी पूजा करते हैं।

पंडितजी वैसे एक प्रच्छन्न साधक भी थे। जीवनके प्रारम्भमें उन्होंने उच्छिष्ट गणपतिकी उपासना की थी—जिसके फलस्वरूप उन्हें अपार ऐश्वर्य भी प्राप्त हुआ—किंतु उस साधनामें कुछ विघ्न हो गया, फलतः काफी कष्ट भी उन्हें उठाने पड़े। बादमें वाल्मिकीय रामायणके प्रयोगों से उनकी स्थिति कुछ ठीक हुई। मृत्युसे कुछ वर्षों पूर्व पंडितजी रसायन और यंत्र साधनामें निरत हुए थे—किंतु इसमें भी त्रुटियां होनेसे काफी क्लेश उठाना पड़ा।

सं० २०१३ की कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी दि० ३० अक्टूबर को पंडितजी अचानक हृद्रोगसे देवालयातिथि हो गये, यद्यपि वे गत कतिपय वर्षोंसे अस्वस्थ चल रहे थे किंतु सामान्यतः उनका स्वास्थ्य ठीक था। यह उनका ६१वां वर्ष था। कौन जानता था कि समस्त संसारको रोगजालसे मुक्त करने वाले, अमृत-पद, आरोग्यमूर्त्ति भगवान् धन्वन्तरि की प्रसविनी यह पुण्य तिथि इस बार एक कालज्ञ भास्कर के लिये कालमयी अमावस्या बनकर उतरी है। पराम्बा श्रीजगदम्बा पंडितजीकी आत्माको शाश्वतिक सद्गति प्रदान करें।

हर्शल और नेपचून—

सप्तम भाव पर हर्शलका प्रभाव

[लेखकः—ज्योतिषकलानिधि श्री पं० गोपेशकुमार ओझा M. A., LL. B.]

[हर्शल नेपचूनके फल पर हिन्दीमें कोई प्रामाणिक पुस्तक नहीं है। पाश्चात्य विद्वानोंने इस पर अपने विचार लिखे हैं परन्तु वे सब अंग्रेजीमें है। इन दोनों ग्रहोंका प्रभाव व्यक्तिगत जीवन और राष्ट्रिय गतिविधियों पर बड़े चमत्कारिक रूपमें देखा गया है। विशेष विचार विमर्श करने पर हर्शल नेपचूनके प्रभाव द्वारा भी ज्योतिर्विज्ञानके फलित विभागमें पर्याप्त प्रगति हो सकती है। हम चाहते हैं कि इस विषय पर हिन्दीमें एक स्वतन्त्र पुस्तक प्रकाशित की जावे. इस लेख के विद्वान् लेखक श्री ओझाजी हिन्दी संस्कृतके साथ आंग्लभाषाके भी प्रौढ़ विद्वान् हैं। आपके सहयोगसे इस विषय पर हम एक प्रामाणिक ग्रन्थ हिन्दीमें निर्माण करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। यदि कोई ज्योतिर्विज्ञानानुरागी सज्जन वा पुस्तकविक्रेता इस ग्रन्थको प्रकाशित करके लाभ उठाना चाहे तो हमसे पत्र-व्यवहार करें। हर्शलका सप्तमभाव पर क्या प्रभाव होता है इस सम्बन्धमें एक लेख 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके लाभार्थ यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

—सम्पादक]

भारतीय ज्योतिषमें सात या ९ ग्रहोंकी ही प्रधानता है। सात ग्रह तो प्रसिद्ध ही हैं। राहु केतुका प्रभाव—इन सात ग्रहों के पश्चात् ही—अध्ययनका विषय होता है। एक प्रकारसे इन्हें उपग्रह या छायाग्रह कह सकते हैं। "आत्म कारक" आदिमें राहुकी गणना विकल्पसे ही की जाती थी ऐसा महर्षि जैमिनिका मत है। पाश्चात्य ज्योतिषमें—यद्यपि पंचांगोंमें राहु स्पष्ट दिया रहता है किन्तु फलित ज्योतिषमें इनका उपयोग नहीं किया जाता है। इन दो राहु, केतुकी बजाय वहां दो नवीन ग्रह हर्शल तथा नेपचून का विचार किया जाता है। यह दो ग्रह वास्तवमें नवीन तो नहीं हैं क्योंकि 'ग्रह कोई बरसाती पौधा, नहीं जो थोड़ेसे समयमें उत्पन्न हो जावे, किन्तु नवीन इसलिये कहा कि इनका ज्ञान या इनके विषयमें 'ज्ञान' नवीन है। बहुतसे ज्यौतिषी हर्शलको प्रजापति, नेपचूनको वरुण आदि कहने लगे हैं, परन्तु इस प्रकारके नामसे उन दोनोंका उल्लेख करना भ्रमपूर्ण तथा अशुद्ध है। 'हर्शल' ग्रह के विषयमें सर्व प्रथम सर विलियम हर्शलने ज्ञान प्राप्त किया या पता लगाया इस कारण इसे 'हर्शल' कहते हैं। इसीका दूसरा नाम 'यूरेनस' भी है।

जिस प्रकार दक्षिण भारतमें "मान्दि" का बहुत सूक्ष्म विचार किया जाता है, उस प्रकार उत्तर भारतके ज्यौतिषी नहीं करते, करना चाहिये। उसी प्रकार हमारे बहुतसे भारतीय दैवज्ञ महानुभाव हर्शल तथा नेपचूनका विचार नहीं करते किन्तु करना चाहिये, यह मेरा निवेदन है। हम लोगों ने 'ताजिक' शास्त्रको अपनाया। 'यवन' और 'रोमन' ज्योतिषको अंगीकार किया 'नीचादप्युत्तमां विद्यां...' इस सिद्धान्त पर। हर्शल और नेपचून पर केवल विचार करना ही पर्याप्त नहीं है अपितु हमें गवेषणात्मक अनुसंधान करना चाहिये, तथा अपने संगृहीत अनुभवोंको छपाना चाहिये जिससे संसारके समस्त ज्योतिषियोंको पता लगे कि भारतवर्षके विद्वान् किसीसे पीछे नहीं है।

हर्शल तथा नेपचूनका विषय इतना विशद और विस्तृत है कि बिना एक पुस्तकके इसका पूर्ण विवेचन नहीं हो सकता। केवल सप्तम-भाव सम्बन्धी—स्त्री-पुरुषके पारस्परिक प्रेम या विवाह पर इन दोनों ग्रहोंका राशि-भाव दृष्टि संयोग आदिसे क्या शुभाशुभ परिणाम होता है यह नीचे "स्थाली पुलाक न्याय" से बताया जाता है।

इनका प्रभाव बतानेके पहिले अंग्रेजी ज्यौतिषके कुछ

पारिभाषिक शब्दोंका अर्थ बताया जाता है।—

(१) पाश्चात्य ज्यौतिषमें ताजिककी भांति चतुर्थ दशम दृष्टि शत्रु दृष्टि मानी जाती है। यदि कोई दो ग्रह एक दूसरेसे सप्तम हों तो यह भी शत्रु दृष्टि मानी जाती है।

(२) शुभ ग्रहोंकी युति शुभ तथा अशुभ ग्रहकों युति अशुभ समझी जाती है।

(३) यदि दो ग्रहोंकी एक ही क्रान्ति हो। (चाहे एककी २२ अंश उत्तर एककी २२ अंश दक्षिण) तो भी युतिके समान ही उनका संयोग समझा जाता है।

(४) नवम-पंचम तथा त्रि-एकादश दृष्टि शुभ समझी जाती है।

किन्तु ताजिककी दृष्टि तथा अंग्रेजी ज्यौतिषकी दृष्टि में अंतर यह है कि ताजिकमें चतुर्थ-दशम, नवम-पंचम त्रि-एकादश किंवा युतिमें राशिकी प्रधानता है अर्थात् भारतीय ज्यौतिषमें एक ग्रह स्थितिकी राशिसे दूसरी ग्रह स्थितिकी राशि गिनी जाती है। किंतु अंग्रेजी ज्यौतिषमें १८० अंश पर सप्तम दृष्टि, १२० अंश पर नवम-पंचम तथा ६० अंश पर त्रि-एकादश दृष्टि मानी जाती है। एक ही राशिमें एक ही अंश पर दो ग्रह हों तो पूर्ण-युति समझी जाती है। (यदि वृश्चिकके २९ वें अंशपर एक ग्रह है। दूसरा धनुके २ अंशपर तो भी युति समझी जावेगी। राशि स्थितिकी प्रधानता नहीं। अंशोंके अंतरसे दृष्टि मानी गई है।

किन्तु बिलकुल इतने अंश पूरे-पूरे तो प्रायः होते नहीं इस कारण युतिमें दीप्तांश सूर्यके १२ अन्य ग्रहोंके ८ माने जाते हैं। सप्तम दृष्टिमें भी सूर्य के दीप्तांश १२ अन्य ग्रहों के ८। चतुर्थ-दशम या त्रिकोण दृष्टिमें सूर्यके दीप्तांश ८ अन्य ग्रहोंके ५-६ तथा त्रिएकादश दृष्टिमें सूर्यके दीप्तांश ६ अन्य ग्रहोंके ४ माने जाते हैं। क्रान्ति साम्यमें दीप्तांश १ अंश माना जाता है। दीप्तांशोंके विषयमें पाश्चात्य ज्योतिषियोंमें भी कुछ मत भेद है किंतु उपर्युक्त दीप्तांश अधिक वर्गको मान्य हैं। १३५° किंवा १५०° किंवा ७२° या ४५° अंशके अंतर पर भी दृष्टि मानी गई है परन्तु वह इतनी बलवती नहीं होती इस कारण उनका विचार यहां नहीं किया जा रहा है।

(१) यदि पंचम भावमें सूर्य हर्शल युति हो, या सूर्य पंचममें हो और हर्शलसे चतुर्थ-दशम या अन्य प्रकारकी शत्रु दृष्टि हो तो जातकके प्रेम सम्बन्धमें बहुत विघ्न उपस्थित होते हैं। सहसा उसका किसीसे प्रेम हो जावेगा किंतु परिणाममें दुःख और निराशा भोगनी पड़ेगी। यदि किसी स्त्रीकी कुंडलीमें उपर्युक्त योग हो तो और भी अशुभ है। उसे प्रेममें निराशा बदनामी तथा दुःखका सामना करना पड़ेगा। (पाश्चात्य ज्यौतिषमें पंचम भावसे प्रेम-सम्बन्धका विचार किया जाता है पंचमको 'चित्त' स्थान मानकर सूर्य हर्शल पंचमसे संबन्धित हों तो उपर्युक्त फल माना गया है)

(२) यदि सप्तम स्थानमें सूर्य-हर्शल युति या सूर्य-हर्शलकी शत्रु दृष्टि हो तो सहसा प्रेम होकर विवाह हो जाता है परन्तु ऐसा विवाह बहुत काल तक स्थिर नहीं रहता। जिस जातकको जन्म कुंडलीमें यह योग होता है उसकी प्रकृतिमें स्वेच्छाचारिता विशेष होती है। परिणामकी कल्पना की जा सकती है। यदि स्त्रीकी जन्म कुंडलीमें यह योग हो तो 'न सा भर्तृगृहे तिष्ठेत् स्वच्छन्दा कामचारिणी' वाली कहावत चरितार्थ होती है।

(३) यदि १२ वें भावमें सूर्य-हर्शल युति या शत्रु दृष्टि हो तो भी वैवाहिक जीवनमें अपवाद अपयश, बहुव्यय तथा पारिवारिक क्लेशोंके कारण एकान्तवास या अलग रहना पड़ता है।

किसी स्त्रीकी जन्म कुंडलीमें कहीं भी सूर्य हो, यदि सूर्यका केवल हर्शलसे "इत्थशाल" होता हो (किसी भी राशिमें हर्शल हो और सूर्य तथा हर्शलमें दृष्टि हो और दोनों दीप्तांशके अन्तर्गत हों तो) ऐसे वैवाहिक जीवनमें कुछ न कुछ असाधारणता होगी। सहसा प्रेम होकर विवाह हो जावेगा परन्तु ऐसी स्त्रीके पतिमें स्थिरता न होगी। वह कुछ परिवर्तनशील, सहसा अपनी इच्छानुसार कार्य करने वाला होगा। यदि हर्शल पर बृहस्पति आदि शुभ ग्रहकी दृष्टि पड़ती हो तो कटु परिणाममें कमी हो जावेगी, परन्तु पूर्ण ९० हर्शलका मंगल जैसे उग्र ग्रहसे योग होता हो या अशुभ दृष्टि सम्बन्ध हो तो पति अत्यन्त क्रोधी तथा उग्र स्वभावका होगा। जिस कन्याकी कुंडलीमें सूर्य-हर्शल सम्बन्ध होता है उसका अपेक्षाकृत कम अवस्थामें ही

एक अनुभूत योग—

कालसर्पयोगका फल विवेचन

[ले०—श्री पं० मदनगोपाल शर्मा शास्त्री ज्योतिषाचार्य]

ज्योतिषशास्त्रके विभिन्न ग्रन्थोंमें स्थान-स्थान पर ऐसे महान् योगोंका उल्लेख मिलता है जो कि जातकके जीवनमें गम्भीर परिवर्तन उत्पन्न करके उसे कहींसे कहीं उत्थान अथवा पतनकी ओर ले जाते हैं । जिस समय जातककी कुण्डलीमें नीच भङ्ग, उच्चभङ्ग, हंस, अनफा, पारिजात, शंख, पाश और कालसर्प प्रभृति योगोंका एक ही जगह समावेश हो जाता है, तब इन विचित्र राजयोगों और दरिद्र योगोंके विचारमें ज्योतिर्विदको कठिन प्रयास करके एक निर्णय पर पहुँचना पड़ता है ।

(क) नीच भङ्ग--राजयोग वाले जातक निम्न श्रेणी से उठकर महान् बन जाते हैं अर्थात् रंकसे राजा बनाने वाला योग है ।

(ख) उच्च भङ्ग—राजयोग वाले जातक उच्चश्रेणी में चले आते हैं ।

तात्पर्य यह है कि राजासे रंक बना देने वाला योग है । इसी प्रकार जब दो नीच ग्रह परस्पर एक दूसरेको देखते हैं, तब एक विचित्र प्रकारका ही योग बनता है, एतदर्थ इन योगोंका ध्यान पूर्वक मनन करके फल विवेचन करना चाहिए । मैं यहां श्रीस्वाध्यायके पाठकोंके लाभार्थ एक महान् और प्रभावशाली अशुभयोगका दिग्दर्शन करता हूं, जिसका नाम है 'कालसर्पयोग' । यह योग अपनी प्रबल स्थितिमें अनेक प्रकारके शुभयोगों अथवा राजयोगोंको विफल बना डालता है, यदि यह पूर्णतः लग जाय तो ।

योगोत्पत्ति

राहु और केतुके मध्यमें (बीचमें) सूर्यादि सप्तग्रहों (सू. चं. मं. बु. गु. शु. और शनि) के आ जाने पर 'काल सर्प योग' निष्पन्न होता है ।

योगका प्रभाव (फल) इस प्रकारसे है—उत्पन्न योग जातक जेलयात्री, भाग्यहीन, सुख सुविधाओंसे रहित, आर्थिक संकटोंसे युक्त, और धनाढ्य कुलमें जन्म लेने पर भी लक्ष्मीरहित होता है ।

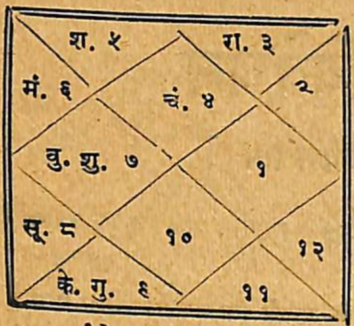
यद्यपि शास्त्रकारोंने इस योगका अनिष्ट फल बतलाया है तथापि इसी योगको दो प्रकारसे लक्षणों सहित भङ्ग भी बतला दिया है, वह इस प्रकारसे है । 'कालसर्प योग'के भङ्ग होनेका प्रकार उदाहरण सहित आगे देखिये । यह योग दो प्रकारसे भङ्ग होता है. जैसे—

प्रथम प्रकार—यदि राहु अथवा केतुके संग अन्य कोई ग्रह (सूर्यादि सप्तग्रहोंमें से कोई भी ग्रह हों) होवे और वह राहु केतुके अंशों से आगे चला जाय तो उत्पन्न योगको भङ्ग समझना चाहिए ।

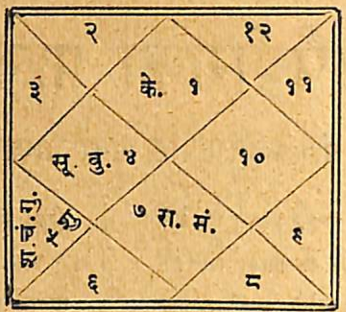
द्वितीय प्रकार—लग्नेश, सुखेश, पंचमेश, भाग्येश और राज्येश ग्रहोंकी सबल और उत्तम स्थिति प्रभावमें भी

सम्बन्ध हो जाता है या उद्दाम वासना जागृत हो जाती है । यदि शुभ ग्रहोंकी हर्शल पर शुभ दृष्टि न हो तो ऐसी कन्या को किसीसे अनुचित सम्बन्धके कारण बदनामी उठानी पड़ती है । वैवाहिक जीवनमें भी सुख प्राप्त नहीं होता। यदि सूर्य बलवान् न हो और हर्शल तथा सूर्यमें प्रायः पूर्ण २७० अंशोंकी दृष्टि हो, अर्थात् पूर्ण युतिमें ९० अंश या ठीक १८० अंशका अंतर हो और शुभ ग्रहोंकी दृष्टि न हो तो ऐसी लड़कीको कोई भगाकर ले जाता है या कम अवस्थामें ही उसे व्यभिचारमें प्रवृत्त कर देता है । यदि मंगल या शनिकी भी हर्शलसे युति हो या इन दोनों क्रूर ग्रहोंमेंसे किसी एककी भी हर्शलसे शत्रु-दृष्टि हो तो विवाह होनेके उपरान्त ऐसी स्त्री अपने पतिको छोड़ देती है या गुप्त रूपसे किसी पर पुरुषसे अपना सम्बन्ध स्थापित कर लेती है, या पति-पत्नीमें निरन्तर घोर कलह रहता है । यदि मंगलकी शत्रु दृष्टि हो तो उस स्त्रीका पर-पुरुष सम्बन्ध प्रायः प्रकट हो जावेगा, किन्तु यदि शनिकी दृष्टि हो तो वह इतने गुप्त रूपसे पर-पुरुष सम्बन्ध रक्खेगी कि वह गुप्त ही रहेगा । [क्रमशः]

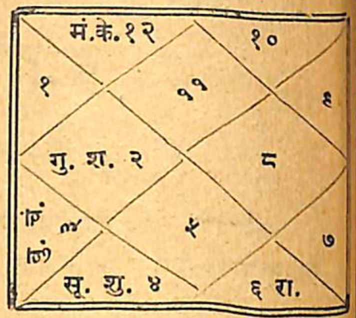
१



२



३



कालसर्पयोग विफल हो जाता है (भङ्ग हो जाता है)

उदाहरणके लिए तीन कुण्डलियां उद्धृत की जाती हैं, वे ऊपर अंकित की गई हैं, आशा है कि पाठक 'कालसर्पयोग' के प्रभाव परीक्षण से तो अवगत होंगे ही साथ-साथ इस योगके चमत्कारिक फलका भी अनुभव करके भविष्यमें अन्यान्य कुण्डलियों पर भी लाभ ले सकेंगे।

नम्बर १ की कुण्डलीमें राहुसे केतुके बीचमें सभी ग्रह आ गये हैं। परन्तु केतुके साथ गुरुका योग है, पत्रिकामें केतु १४°।'३० पर है और गुरु १६°।'१५ पर है ऐसी स्थितिमें केतुसे गुरु आगे है, एतदर्थ कालसर्पयोग विफल हो जाता है। साथ ही उपरोक्त पत्रिकामें लग्नेश चन्द्रमा, सुखेश शुक्र, पंचमेश राज्येश मंगल और नवमेश गुरु भी सबल और उत्तम स्थिति प्रभावमें (अनेक प्रकारके राजयोग बनते हैं) यह योग-भङ्ग हो जाता है। [इस कुण्डलीमें राहु से केतु पर्यन्त प्रत्येक भावमें ग्रह आ जानेसे एकावली योग भी बन गया है। यह विशेष राजयोग कारक प्रतापी योग बना है। कालसर्पयोग भंग और इस एकावली योगके कारण ही श्री नेहरूजीको विश्वविख्याति एवं प्रधानपद प्राप्त हुआ है। यह सब होते हुए भी भौमदशासे पूर्व श्री नेहरू जी को भी राजनैतिक बन्दी और अनेक प्रकारकी यातनाएं सहन करनी पड़ीं थी। —सम्पादक]

नम्बर २ की कुण्डलीमें केतुसे राहु पर्यन्त सभी ग्रह बीचमें हैं, परन्तु राहुके साथ मंगल है, पत्रिकामें मंगल २९°'।१० पर है और राहु १८°।'१७ पर है एतदर्थ राहु से आगे मंगल हो गया है ऐसी स्थितिमें इस कुण्डलीमें भी योग विफल है। हां द्वितीय प्रकारको देखते हुए लग्नेश भाग्येश मं. गु. की निर्बल स्थितिमें जातक आर्थिक कष्टका सामना करता है, तथापि सुखेश पंचमेश और दशमेशकी उपयोगी स्थितिमें सफलता अवश्य ही मिल जाती है। काल सर्पयोगका यहां भी भंग है। नं० ३ की कुण्डलीमें केतु से राहु के बीच ग्रह अवश्य ही आ गये हैं। तथापि केतुके साथ मंगलका योग कुण्डलीमें बना है। और वह केतु मंगलसे १३ अंश पीछे है। तात्पर्य यह है कि मंगल केतुसे आगे चला गया है। पत्रिकामें केतु ३।२० पर और मंगल १६।५३ पर होनेके कारण केतुसे मंगल १३।२३ की दूरी पर है। इसके अतिरिक्त सुखेश भाग्येश शुक्र-चलितमें सप्तम चला गया है। सबल है और पंचमेश बुध भी उपयोगी स्थितिमें अपने घर का है। राज्येश मंगल भी भाग्येशसे त्रिकोण योगमें होनेके कारण समाधान प्रद बना हुआ है। एतदर्थ इस स्थितिको देखते हुए द्वितीय प्रकारसे भी कालसर्प योग विफल हो चुका है (भङ्ग हो गया है)।

एक दाक्षिणात्य सहयोगी विद्वान् ग्रन्थकारका तो यहां तक स्पष्ट अभिमत है कि राहु-केतुके साथ ग्रह-समीपके अंश कलाओंसें भी हो अथवा राहु केतुके अंशोंके भीतर भी आ जाय तो भी विचार विमर्शसे काम लेकर उसकी पत्रिका पर विचार करें। यदि जातककी पत्रिकामें—लग्नेश सुखेश पंचमेश और भाग्येश राज्येश ग्रह सबल और उपयोगी-स्थिति प्रभावमें आ जायें, शुभफलप्रद बन जावें तो 'कालसर्प योगका अवश्य ही भंग हो जायेगा, वह विफल हो जायेगा इसमें सन्देह नहीं। उनका यह स्पष्ट विचार है, वह भी हमने यहां दे दिया है।

—

जन्म कुण्डलीके अनुभूतयोग

[ले०—श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य]

१. केन्द्रों १-४-७-१० के स्वामी केन्द्रोंमें स्थित न हों, इनके अतिरिक्त दूसरे ग्रह भले ही केन्द्रोंमें स्थित हों, तो उस कुण्डली वाला व्यक्ति, अपने पूर्वज पितामह आदि से निर्मित मकान आदिमें निवास नहीं करता है।

२. चतुर्थ घरमें कुम्भ राशि हो, या चौथे घरमें राहु हो, परन्तु शनि गोचर होकर चौथे घरको देखता हो, ऐसी स्थितिमें मनुष्य अपने भाइयों वा हिस्सेदारोंसे जायदादका बंटवारा करवाता है।

३. चतुर्थेश भौम, बृहस्पतिके वर्गमें स्थित, शनिके साथ इत्थशाल करता हो तो माताके स्तनमें शोथ (सोज़िश) हो जाती है। यदि वही मंगल, शनिसे युक्त हो, तो बालक का धाईके दूधसे लालन पालन हुआ करता है।

४. (क) कुम्भका राहु, चतुर्थ घरमें स्थित सूर्यसे दृष्ट हो और तुलाका शनि हो, तो माता पिताका परस्पर कलह होने से, पिता, उस बालककी माताको कलंक पूर्वक त्याग देता है। परन्तु कुछ समय पश्चात् फिर ग्रहण कर लेता है।

(ख) चतुर्थ घरमें कुम्भ राशि हो और चतुर्थेश केन्द्रस्थ हो, सूर्य तुलाका हो तो बालककी दीन हीन माता को घरसे निकाल ही दिया जाता है।

(५) गुरु शनिका वा गुरु भौमका १८० अंशोंका अन्तर होने पर निरन्तर गर्भमें रुकावट रहा करती है। यदि उक्त योगमें बृहस्पति पूर्ण बली हो, तो कुछ समय तक गर्भ में रुकावट रहा करती है। [पंचम भावमें गुरु शनिका योग धनुः वा मीन राशिमें हो तो सन्तानाभाव होता है ऐसा हमने कई कुण्डलियोंमें देखा है। —सम्पादक]

६. भौमसे पंचम घरमें केतु वा शनि हो तो ऋतु धर्म में पीड़ा रहती है।

७. पंचमेशसे पंचम घरमें सूर्य हो तो निःसन्तान होता है।

८. पंचमेश या गुरुसे पंचम राशिमें केतु हो, तो स्त्रियोंके रजोधर्मको निष्फल बना देता है।

९. अष्टमेशसे दशम भाव दृष्ट-युत होनेसे सगर्भा पुत्री की मृत्यु हो जाती है।

१०. (क) लग्नेश, बुधकी राशि वा नवांशमें स्थित हो, (ख) लग्नेश-षष्ठेशका इत्थशाल हो (ग) लग्नेश, छठे भावकी राशि वा नवांशमें स्थित हो परन्तु षष्ठेश बलवान् अवश्य हो, ऐसी स्थितिमें, बालक, ननिहालमें पालन-पोषण पाता है और निवास भी करता है। अर्थात् ननिहाल की संपत्ति पाता है।

११. अष्टमेश-षष्ठेश का परस्पर इत्थशाल हो (या) अष्टमेशसे षष्ठ भाव दृष्ट युक्त हो, तो उक्त योगोंमें सगर्भा वहन यमलोक सिधार जाया करती है।

१२. लग्नेशसे ३-५-९-११ वें भावोंमें यदि केतु हो, तो सांपसे भय होता है। [मेरी जन्मकुण्डलीमें लग्नेश शुक्रसे केतु पंचम है पर आज तक तो कभी सर्पसे भय हुआ नहीं अतः यह योग सर्वथा ठीक नहीं कहा जा सकता। —सम्पादक]

१३. लग्नेश और राहु वृश्चिक राशिमें अन्तर रहित अंशोंमें हों तो सांप के काटनेसे मृत्यु हो जाती है।

१४. शुक्र-केतुके संबन्धसे प्रदर रोग पैदा हो जाया करता।

१५. चतुर्थ घरमें शनि होने पर तिली (प्लीहा) रोग होता है। [स्वक्षेत्र उच्च वा बलवान् शनि हो तो प्लीहा नहीं होता।]

१६. शनि—चन्द्रमाका परस्पर जल राशिमें इत्थ-शाल योग होने पर विशूचिका (हैजा) का रोग हो जाता है। इनका परस्पर योग सम्बन्ध होने पर भी यही फल जानो।

१७. सप्तमेश, सूर्यसे १२० या १८० अंशों के अन्तर से समान हो तो पुरुषमें नपुंसकत्व पाया जाता है।

१८. सप्तमेश सूर्य-भौमका परस्पर १२ अंशोंका अंतर होने पर उपदंश (आतशक) का रोग होता है।

१९. सूर्य-शुक्रका परस्पर संबन्ध वा इत्थशाल हो,

परन्तु लग्नेशका किसी प्रकारसे सम्बन्ध अवश्य हो, तो धातुपात (इतलाम) रोग होता है।

२०. सप्तमेश वा तदाश्रित राशि पतिकी दिशामें (विवाह स्थान) सुसराल होता है।

२१. सप्तमेश—व्ययेशका परस्पर इत्थशाल योग हो तो मूल्य देकर स्त्री प्राप्त हुआ करती है।

२२. सातवें घर राहु हो और सप्तमेश राहुके साथ इत्थशाल करता हो तो स्त्री अपना पति त्याग कर दूसरे को अपना लेती है।

२३. भौमकी राशि वा नवांश में स्थित शुक्रसे सातवें घर शनि हो (या) किसी प्रकार भी शुक्र से शनि दृष्ट युक्त हो तो मनुष्यके घरमें दो स्त्रियां निवास करती हैं। अर्थात् पुरुष दो पत्नियोंका पति होता है।

२४. आरूढ़ (पद) से बारहवें और लग्नसे दूसरे वा त्रिकस्थानमें शनि हो तो मनुष्य कैद हो जाता है।

२५. लग्नेश से आश्रित राशिपति—चर या द्विस्वभाव राशियों में हो तो मनुष्यका परिवर्तन Transfer हुआ करता है।

२६. लग्नेश-नवमेशका, (या) तृतीयेश नवमेशका जल वा अग्नि राशियोंमें पूर्णेत्थशाल योग बना हो तो वह मानव समुद्रयात्रा Foreign Country travilling करता है।

२७. मंगलसे वृहस्पतिका १२० अंशोंका अन्तर हो तो मनुष्य पुलिस वा अदालतमें काम करता है।

२८. नवम भावमें द्विस्वभाव राशिस्थ भौम हो तो रेलवे विभागमें कार्य करता है अथवा केन्द्रोंमें सूर्य चन्द्र तथा भौम योग होने पर भी यही फल जानें।

२९. वायु राशियोंमें पापी ग्रहोंकी अधिकतासे क्लैरिकल लाईनमें काम करता है।

३०. भौम, केतु और शुक्र योगसे एकाउण्टेण्ट Accountant होगा।

३१. शुक्रसे तीसरे चौथे घरमें वृहस्पति हो (या) गुरुसे चौथे, सातवें, दसवें घर शुक्र हो, तो बज़ाजीका काम हुआ करता है।

३२. तृतीय भावस्थ कन्या और धनुः राशिमें, भौम शनि योग होनेसे डाक घर Post Office में कार्य किया जाता है।

३३. वृहस्पति—शुक्र (या) बुध (अथवा) चन्द्रमा के साथ स्थित हो तो मनुष्य शिक्षा विभाग Teaching Department में कार्य करता है।

३४. बुधसे वृहस्पति त्रिकोणस्थ हो तो व्याख्यान कृत् Lecturer होता है।

३५. शनि-शुक्र तथा गुरु ग्रहोंके योगकी निर्बलता होने पर मनुष्य पुस्तक विक्रेता Book Seller हुआ करता है।

३६. लग्न वा दशम भावमें भौमकी राशि, शनिकी दृष्टिसे रहित हो, भौम बलवान् हो, जो पुरुष औषध विभाग Medical Department में काम करता है।

[लेखकके अप्रकाशित ग्रन्थ 'ज्योतिषनाडी' के श्लोकों का भाषानुवाद]

— —

उज्जयिनी पक्षांत (कुंभ, पुष्कर) स्नान निर्णय

[श्री पं० चन्द्रकान्त शर्मा राजज्यौतिषी]

[गताङ्कसे आगे]

अनेक संशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम् । सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः ॥१॥
युक्तियुक्तमुपादेयं वचनं बालकादपि । अन्यत् तृणमिव त्याज्यं अप्युक्तं पद्मजन्मना ॥२॥
केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्णयः । युक्ति हीने विचारे तु धर्म-हानिः प्रजायते ॥३॥
अनपेक्षित गुरुवचना सर्वान् ग्रन्थीन् विभेदयति सम्यक् । प्रकटयति पर रहस्यं विमर्शशक्तिर्निजा जयति॥४॥

(निर्णय पद्धति)

परिभाषा—

(१) पूर्वपक्ष सदा पूर्वकालमें रहता है ।
(२) विरोधी पक्ष सदा परकालमें रहता है । कालान्तर में वही सम्प्रदाय बन जाता है ।
(३) पूर्वपक्ष अथवा विरोधी पक्ष दोनोंमेंसे जिसमें तर्क संगत वैज्ञानिकता हो उसे सिद्धान्त कहते हैं ।
(४) अधिक देशवर्ती सिद्धान्त, एवं अल्पदेशवर्ती अपवाद कहलाता है ।

उदाहरण—

(१) भारत भरमें रामेश्वर तक शैवोंकी प्रधानता वैदिक कालसे है, अतः वह पूर्वपक्ष है ।
(२) दक्षिण भारतमें वैष्णवोंकी प्रधानता गुप्तकालसे है अतः वह विरोधीपक्ष एवं सम्प्रदाय है ।
(३) शास्त्रीय कुंभपर्वमें चर (१-४-७-१०) राशियोंका महत्व है कारण कि आयन (४-१०) राशियों में दिवा-रात्रि की क्षयवृद्धि होती है । वैषुव (१-७) राशियों में अहोरात्रकी समानता रहती है अतः इन राशियों का महत्व वैज्ञानिक होनेसे सिद्धान्त रूप है ।

वैष्णव लोग कुम्भपर्व में स्थिर (२-५-८-११) राशियों का महत्व मानते हैं, कारण कि उन्होने उनको विष्णुपद संज्ञा दी है और यही साम्प्रदायिकता है ।

शंका—यदि यह कहा जाय कि शैवोंने मकरके स्थानमें कुम्भ (स्थिर) राशिमें कुम्भपर्व क्यों माना है ?
समाधान—यहां केवल एक ही स्थिर (११ कुंभ) राशिमें कुम्भ पर्व माना है अतः वह केवल अपवाद रूप है । किन्तु तीन चर (१-४-७) राशियोंमें कुम्भपर्व होनेसे चरशराशियोंका ग्रहण सिद्धान्त पक्ष है ।

[इस विषयको हरद्वार कुम्भ विचारके समय अधिक स्पष्ट किया जायगा ।]

शास्त्रीय कुम्भ पर्व निर्णय (पक्षान्तस्नान, अमायाम्)

१. विषुव एवं अयन राशियों (१-४-७-१०) पर गुरु हो ।=गौरव वर्ष ४ [वर्ष निर्णय]
२. इन ही केन्द्रिय (चर) राशियों पर सौर संक्रान्ति हो ।=सौर मास ४ [मास निर्णय]
३. वैशाख श्रावण कार्तिक माघ इन पूर्णिमान्त चान्द्रमासोंकी अमा पर कुम्भपर्व हो ।=चान्द्री अमा ४[तिथि निर्णय]

शास्त्रीय पुष्कर (सिंहस्थ) योगनिर्णय (पक्षान्तस्नान पूर्णिमायाम्)

१. पुष्कर योग केवल सिंहस्थ गुरु पर ही होते हैं ।=गौरव वर्ष १ [वर्ष निर्णय]
२. सिंह संवत्सरकी प्रत्येक सूर्य संक्रान्तिमें पुष्कर होते हैं ।=सौर मास १२ [मास निर्णय]
३. प्रत्येक पूर्णिमान्त चान्द्रमासकी पूर्णिमा पर पुष्कर बनते हैं ।=चान्द्री पूर्णा १२ [तिथि निर्णय]

[यहांसे आगे और अग्रिम पृष्ठ ३० से पहलेका मैटर पृष्ठ ३३ पर देखिये ।]

पं० चन्द्रकांत शर्मा राजज्योतिषी
श्री मेदपाटीय पंचांग सं० २०१३
चक्रपद्धति (मध्यमभोग) वर्ष १०८

विक्रमी संवत	सिंहसंवत्सरे	वर्ष
१९१८	७ श्रीमुख	११
१९३०	१९ पार्थिव	१२
१९४२	३१ हेममाली	१२
१९५४	४३ सौम्य	१२
१९६६	५५ दुर्म्मति	१२
१९७८	७ श्रीमुख	१२
१९८९	१९ पार्थिव	११
२००१	३१ हेममाली	१२
२०१३	४३ सौम्य	१२
२०२५	५५ दुर्म्मति	१२

निश्चित दिन (३६१) १२ मास
विकृति रहित
३६१×१२ = ४३३२ भगणकाल

बार्हस्पत्येन षष्ट्यब्दं ज्ञेयं नान्यैस्तु नित्यशः।
बृहस्पतेर्मध्यमराशि भोगात् संवत्सरम्......
[श्रीभास्कर]

अथवा—
मध्यगत्याब्दं भोगेन गुरोर्गौरववत्सरः॥
द्वादशाघ्ना गुरोर्याता भगणा वर्तमानकैः
राशिभिः सहिता शुद्धाः षष्ट्या स्युर्विजयादयः॥
[सूर्यः]

श्रीसूर्यनारायण श्रीसंकर्षण व्यासबंधु
श्रीमहाकाल पंचांग सं० २०१२-१३
पर्याय पद्धति (स्पष्ट भोग) अनिश्चित वर्ष

विक्रमी संवत	वार	स्पष्ट गुरु	स्पष्ट सूर्य	पर्याय	कन्या संवत्सरे
१८९५	बु.	४।२०	०।२०	४	
१९०७	श.	४।२४	१।११	५	५६दुंदुभी
१९१९	मं.	४।१८	१।०	६	८ भाव
१९३०	चं.	४।२	०।२९	११ वर्ष	
१९४२	बु-	४।६	०।१६	१	
१९५४	र.	४।११	१।३	२	
१९६६	बु.	४।१५	०।२३	३	
१९७८	श.	४।१९	१।६	४	
१९९०	मं.	४।२३	०।२०	५	२० व्यय
२००२	र.	४।२७	१।१०	६	३२विलम्ब
२०१३	बृ.	४।३	१।९	११ वर्ष	
२०२५					

अनिश्चित दिन (१३ मास)
वक्रमार्गादि विकृतिके कारण वि. सं. १९०७, १९१९, १९९० २००२ में स्नान कन्या संवत्सरोंमें हुए हैं, जो अशास्त्रीय थे। सिंह संवत्सरोंमें होना उचित था।

सूचना—गुरुके आरम्भिक एवं अन्तिम स्पष्ट भोग अंशोंको जो प्रायः सिंह संवत्सररहित कर्क एवं कन्या संवत्सरोंमें होंगे मजबूरन मानना पड़ेगा। और यही कारण है कि प्रत्येक स्नान पर विवादका कारण उपस्थित होता रहता है। वस्तुतः इस स्नान निर्णयमें सायन निरयण, दृश्य अदृश्य, नवीन प्राचीन, रैवत चैत्र, करणग्रन्थ-लाघव, मकरन्द केतकी, सिद्धान्त-ब्रह्म, आर्य, सौर आदिका विचार केवल स्पष्टगणनामें रहता है, किन्तु मध्यम गणनामें सब एक मत हैं, कोई पक्ष बाधक नहीं, आर्य परम्परा भी यही है, स्पष्ट मध्यमके भगण भी भिन्न भिन्न नहीं होते, ४३३३ दिनोंमें मध्यमस्पष्ट दोनों समान होते हैं, ऐसे सरल मार्गको त्यागकर वक्र मार्ग अतिचारी आदि विकृत एवं विवादास्पद मार्गका अनुसरण कहां तक उपयुक्त है इस पर विद्वानों को विचार कर एक पद्धति स्वीकार करना है।

श्रीमाखनचौरदास निर्मोही
शाहीस्नानदिग्दर्शन पृष्ठ २९
कल्पना पद्धति अनिश्चित वर्ष

विक्रमी संवत		विक्रमी संवत्		विक्रमी संवत्	ईस्वी सन्
६६					
७७		९८०			
८९		९९२			
१०१		१००४			
११३	इन वर्षोंको क्यों छोड़ा ?	१०१६	इन वर्षोंको क्यों छोड़ा ?		
१२५		१०२८			
१३७		१०४०		१९६६	१९०९
१४९		१०५२		१९७८	१९२१
१६१		१०६४		१९९०	१९३३
१७३		१०७६		२००२	१९४५
१८४		१०८७		२०१४?	१९५७?
(क)		(ख)			(ग)

स्तम्भ (क) तथा (ख) अनियमित अथवा कल्पित।

स्तम्भ (ग) को देखनेसे भी संवत् २०१३ में ही स्नान बनता है। किन्तु इसी बातको छिपानेके हेतु सन्का प्रयोग है। शंकायें ?

आपके मतानुसार हम भी मान लें कि—सं० १८४ एवं १०८७ में ग्यारह वर्षके स्नान हुए तब—
सं० १०१ एवं १००४में क्यों न हुए ?
सं० ७७ में ११ वर्षका किस नियमसे ?
सं० १९३०में स्नान मानते हैं वा नहीं ?
और यदि—
सं० १९३० में ११ वर्ष का स्नान हुआ तब—सं० १९१४ में बारह वर्षका स्नान किस नियम से ?

उज्जयिनी पक्षान्त स्नान प्रमाण

यम उवाच—पक्षान्ते स्रोतसि स्नायात् तेन नायाति मत्पुरम् ।। इत्यादि ।

उज्जयिनी स्नानके विषय में ५ विकल्प तीन विचार-धारा पर मिलते हैं, सिद्धान्त, सम्प्रदाय, पुष्करयोग ।

(१) घटे सूरिः शशी सूर्यः कुहां दामोदरे यदा । धारायां च तदा कुम्भो जायते खलु मुक्तिदः ।। —सिद्धान्त

(२) वृश्चिके च यदा सूरिः तथैव शशिभास्करौ । अमा तदा च धारायां कुम्भो भवति मुक्तिदः ।। —सम्प्रदाय

(३) मेषराशि गते सूर्ये सिंहराशि गते गुरौ । उज्जयिन्यां भवेत् कुम्भः भुक्ति मुक्ति प्रदायकः ।।— पुष्कर योग

(४) मेषराशि गते सूर्ये सिंहराशिगते गुरौ । उज्जयिन्यां भवेत्कुम्भः ? मुक्ति मुक्तिप्रदायकः ।। —पुष्करको कुम्भ

(५) सिंहे सूरिः शशीसूर्यो मेषे दामोदरे यदा । धारायां च तदा कुंभः ? जायते खलु मुक्तिदः ।।—यह संकर है ।

(सिंहस्थ में कुम्भ नहीं, अमाको पुष्कर नहीं)

"कुम्भ निर्णयः" श्री नागेश उपाध्याय संपादित	पृष्ठ १० प्र०
"कुम्भ पर्व निर्णय" श्री रामकृष्णानन्द गिरि संपादित	,, ८ प्र०
"सुदर्शन कुम्भाङ्क" में लेखक श्रीराम व्यास पाण्डेय	,, १६ प्र०
"चतुष्टय कुम्भ पर्व माहात्म्य निर्णय" श्रीनृसिंह गिरि सम्पादित	,, ६ द्वि०
"अवन्तिका सिंहस्थ माहात्म्य" पं० श्री शालिग्राम संपादित (श्लोक १८-२०।३६-४१।५०-५२)	तृ०
"शाही स्नान दिग्दर्शन" श्रीमाखनचौरदास संकलित	,, ११ च०
"कुम्भमेलानो परिचय" श्री भागवतानन्द मंडलेश्वर संपादित	,, २७ पं०

उज्जयिनी पुष्कर (सिंहस्थ) स्नान ता० २४-५-५६ ई०, वैशा० शु० १५ बृ० सं० १३ में हो चुका (लौकिक)

उज्जयिनी कुम्भपर्व स्नान ता० १०-११-५८ ई०, कार्तिक कृ० ३० मं० सं० १५ में होना है (सिद्धान्तीय)

सूचना —कदाचित् कार्तिकी अमाको दीपमालिकाके कारण जनता कुम्भ स्नानार्थ उज्जैन कम जाती, अतः इन्होंने कुम्भके स्थानमें पुष्करको महत्त्व दिया हो ।

नासिक पक्षान्त स्नान प्रमाण

नासिक स्नानके विषयमें ६ विकल्प तीन विचार धारा पर आश्रित हैं, सिद्धान्त, सम्प्रदाय, पुष्करयोग ।

(१) कर्के गुरुः तथा भानुः चन्द्रः चन्द्रक्षयो यदा । गोदावर्यां तदा कुम्भो जायतेऽवनिमंडले । —सिद्धान्त

(२) सिंहेगुरुः तथा भानुः चन्द्रः चन्द्रक्षयो यदा । गोदावर्यां तदा कुम्भो जायतेऽवनिमंडले ॥ —सम्प्रदाय

(३) सिंहराशि गते सूर्ये सिंह संवत्सरे गुरौ । गोदावर्य्यां पुष्कराख्यः योगः स्यात् ऋषि सम्मतः —पुष्कर योग

(४) सिंहराशि गते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ । गोदावर्य्यां तदा कुम्भ ? जायतेऽवनिमंडले ॥ —पुष्करको कुम्भ

(५) कर्कराशि गते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ । गोदावर्य्यां तदा कुम्भः ? जायतेऽवनिमंडले ॥

(६) मेष राशि गते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ । गोदावर्य्यां तदा कुम्भः ? जायतेऽवनिमंडले ॥

(पंचम षष्ठ श्लोक इसलिए बनाये गये हैं कि किसी समय आवश्यकता हो जाय)

"वर्षकृत्यम्" रुद्रधर कृत	पृष्ठ १३२ प्र०
"कृत्यसार समुच्चय" चौखम्बा सिरीज	,, ७६ प्र०
"कुम्भमेलानो परिचय" श्री भागवतानन्द मंडलेश्वर सम्पादित	,, २७ प्र०
"चतुष्टयकुम्भपर्व माहात्म्य निर्णय" श्रीनृसिंह गिरि मंडलेश्वर संपादित	,, ६ द्वि०
"बृहत् ज्यौतिषार्णव" पं० हरिकृष्ण शर्मा संकलित [श्लोक ४६]	तृ०
"शाही स्नान दिग्दर्शन" श्रीमाखनचौरदास निर्मोही संकलित	,, १० च०
"विरक्त साप्ताहिक" अयोध्या श्री माखनचौरदास [ता० २२-६-५४ वर्ष ७, अंक २४]	,, १६ पं०
"सुदर्शन कुम्भांक"	,, ३० ष०

नासिक वालोंने अपने वैधानिक कुंभपर्वको न मानकर पुष्करयोग मानना स्वीकार किया है । तटस्थ सरकारका जो कर्तव्य था उसने किया (देखो नवभारत टाइम्स २०-६-५५) जनतामें अज्ञानता जब तक रहेगी यह धांधली चलती रहेगी।

नासिक कुम्भ स्नान ता० १६-७-५५ ई० सं० १२ श्रावण ३० मं० को होना उचित था [सिद्धान्तीय]

नासिक पुष्कर स्नान ता० २०-६-५६ ई० सं० १३ भाद्र० १५ गु० को माना गया [वैधानिक]

सूचना—कदाचित् श्रावणी अमा को नवोदकी (हरियाली) होने से जनता स्नानार्थ नासिक पर कम जाती अतः इन्होंने कुम्भके स्थान में पुष्कर योगको महत्व दिया हो।

अब यद्यपि नासिक पद्मान्त स्नानका समय व्यतीत हो चुका जिनके विषयमें मेदपाटीय पंचांग सं० १२ एवं १३ के पृष्ठ ६।७ में सविस्तर मुद्रित हो चुका है, तथापि जिन विद्वानोंके साथ मेरा पत्र व्यवहार हुआ है उनका वर्णन यहां प्रसंगवश उचित होगा—

(१) श्रीधर अण्णाशास्त्री वारे नासिक
(२) श्री यादवशंकर शुक्ल कार्यवाह "सिंहस्थयात्रासमिति त्र्यंबक" चिटणीस समिति
(३) श्री राधाकृष्ण हरी शुक्ल अध्यक्ष "पुरोहित संघ" सिंहस्थ समिति श्रीक्षेत्र नासिक पंचवटी
(४) श्री धुण्डीराज लक्ष्मण दाते पंचांगकर्ता सोलापुर दक्षिण
(५) श्री रघुनाथशास्त्री कोकजे कार्यवाह "धर्मनिर्णयमण्डल" लोनावले जि० पूना
(६) डा० श्री केशव लक्ष्मण दफतरी महाल नागपुर
(७) श्री पं० रघुनाथशास्त्री पटवर्धन अध्यक्ष अखिल भारतीय ज्योतिषशास्त्र सेवामण्डल, पूना
(८) एस्ट्रोलोजिकल मेगज़ीन बंगलोर जुलाई ५५ वोल्युम ४४ नं० ४ पृष्ठ ५६३ में लेख प्रकाशित ।
(९) ज० स० करन्दीकर संपादक "केसरी" पूना ।

किन्तु इन लोगोंने कोई सन्तोषजनक निर्णय नहीं दिया, केवल श्री रघुनाथशास्त्री कोकजे ता० ६-६-५५ ई० के पत्रमें लिखते हैं—"मैं ज्यौतिष विषय नहीं जानता, अतः कुम्भविषयसंबन्धि आपके लेख मण्डलके वर्तमान अध्यक्ष विद्वद्रत्न डा० केशवलक्ष्मण दफ्तरी महाल नागपुरने पढ़कर जो मत दिया है वह इस प्रकार है—

मरेठी—"एका आर्तव वर्षांत दोन विषुवदिन आणि दोन अयनादिन हे चार दिन महत्वाचे होत। ह्यां चार दिवसां पैकी कोणत्याही दिवसानन्तर च्याच अमावास्येस जर गुरु चन्द्र सूर्याच्याच राशीसंयेत असेल तर कुंभयोग येतो। गुरुचा बाराराशीतून एक फेरा बारा वर्षानी हो तो, अर्थात् १२ वर्षांत चार कुंभयोग येतात! सायन मेष-कर्क तुला-आणि मकर ह्या या राशींत गुरु असतां हे योग अनुक्रमें प्रयाग-नाशिक-उज्जैन-हरद्वार, ये थे मानावें असे ग्रन्थ वचने सांगतात। हा योग ठरविताना निरयण राशि घेणे चूक आहे, सायन राशीच घेणे योग्य आहे, असें वचनावरून दिसते। या प्रमाणे पाहातां कर्क राशीतील कुंभयोग मागील वर्षींच होऊन गेला, निरयण-राशि ग्रहण करून कुंभयोग यंदा आषाढा च्या अमावास्येस १९ जुलाईला येतो, पण तो खरा कुंभयोग नव्हे। धर्मनिर्णय मण्डलाने याला आधार देऊ नये। चन्द्र सूर्य गुरु ह्यांत अयनांश मेलवून अमावास्येस चन्द्रसूर्यगुरु कर्कराशींत येतील तरच खराकुम्भयोग, हे धर्म निर्णय मण्डलाचे मत असे सांगावे। आज पर्यन्त लोक चुकीच्या मार्गाने गेले ह्मणून आताहीं पुढें त्याच मार्गाने जावें हे योग्य नांही। त्यांस खरा मार्ग दाखवावा मग ते कांही ही करोत।"

इसमें कुछ लिखित भूल है। फिर भी इस लेखसे मेरा कुछ भी मतभेद नहीं, विद्वान् लेखकने मेरी पद्धतिको उचित माना है, केवल सायन निरयन भेद मात्र दर्शाया है और मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं। अनी अखाड़ोंका इतिहास अगले अंकमें पढ़ें।

[क्रमशः]

सरिता और सरोवर

[श्री पं० सम्पूर्णदत्त मिश्र शास्त्री M. A.]

उद्यानोंकी योजना जिस जलके बिना सफल नहीं होती उसका प्रसार प्रकृतिमें कई रूपोंमें देखा जाता है। नदियां और झील जलके इस प्राकृतिक प्रसारकी एक कड़ी हैं। संस्कृत साहित्यमें जहां एक ओर जलचक्रके प्राकृत अंग सरिता और सरोवरोंका उल्लेख मिलता है वहां राजाओं और धनिकों द्वारा अपने सुख और सौविध्यके लिये बनाये गये तडागादिका वर्णन उपलब्ध होता है। हम आज यहां जलसंग्रहके अन्य रूपोंकी बात छोड़ केवल सरिता और सरोवर पर संक्षिप्त बात करेंगे। सरिता और सरोवरके भेद, उपभेदोंकी बात नहीं करनी। यह दिखाना है कि संस्कृत कवियोंने उन्हें कैसे देखा है और दिखाया है।

सरोवर श्रेष्ठ तडागको कहते हैं। ये दो प्रकारके हो सकते हैं, मानसरोवर, पम्पा सर आदि प्राकृत और मानव द्वारा बनाये गये छोटे बड़े तडाग।

सरितासे स्वच्छन्द जलधारा ध्यानमें आती है। पहाड़ और जंगलोंमें होकर अपना मार्ग बनाता हुआ जल जब तीव्र वेगसे जा रहा हो तो मनुष्यके मनमें कई बातें आ सकती हैं इससे उसमें भय और उत्साह दोनोंका संचार हो सकता है। प्रकृतिके प्रत्येक चित्रसे मनुष्य कुछ न कुछ सीखता है और कवियोंके वे वर्णन उसकी अनुभूतिके लिये उद्दीपनका काम करते हुए सीखनेकी दिशामें उसकी सहायता कर सकते हैं। गोदावरी नदीका वर्णन करते हुए भवभूति लिखते हैं—

'एते ते कुहरेषु गद्गदनदद्गोदावरीवारयः।'

नगरमें नदियोंसे दूर बैठे व्यक्तिके मनमें यह पंक्ति यह अनुभव करानेका प्रयास कर सकती है कि नदियोंका शब्द क्या होता है!

[पृष्ठ २९ का शेषांश पृष्ठ ३० से पहले]

"मध्यगत्याब्द भोगेन गुरुगौरव वत्सर" गुरु राशि, गुरुवत्सरः दिन ३६१। सूर्य राशि-सूर्य संक्रान्ति-दिन ३०।

निर्णय पद्धति—जबकि एक ही गुरु राशि भोग कालमें दो सौर चन्द्रमास "उभयतःपाशारज्जुवत्" हो तब क्या करना?

यथा—इसी एक ही सिंहस्थ (२१-५-५६) से (१६-६-५७) पर्यन्त १३ मास गुरुभोग कालमें।

दो सौर चान्द्र, मेष वैशाख (२४-५-५६) एवं (१३-५-५७) २ मास मिलते हैं।

ऐसी स्थितिमें बार्हस्पत्य संवत्सर द्वारा निर्णय होगा, कारण कि संवत्सर मुख्य है, भोग गौण।

यथा—दि० (६-१-५६) से १-१-५७ पर्यन्त दिन ३६१ सिंहसंवत्सर ४३ वां "सौम्य" रहता है अतः सिद्ध हुआ कि दिनांक २४-५-५६ को ही सिंह संवत्सर एवं सिंहस्थ गुरुभोग दोनों प्राप्त हैं, अतः वि० सं० २०१३ वैशाखी पूर्णिमा अथवा चैत्री पूर्णिमा को ही उज्जैन सिंहस्थ स्नान उपयुक्त होता है। यहां चैत्री पूर्णिमा मासादि एवं वैशाखी पूर्णिमा मासान्त गृहीत है, जिस पर मेषस्थ सूर्य हो (सौर बैशाख)। इसकी साक्षीमें मासादिमें पंचात्मक योग, एवं मासान्त में दशयोगका प्रमाण प्रस्तुत है। कारण कि—दोनों योगोंमें केन्द्रराश्यंश रहता है। इति रहस्यम्।

न्यास

दिनांक :					
६-१-५६				सिंह संवत्सर मास १२	
२१-५-५६			सिंह गुरु भोग मास १३		
२४-५-५६	वैशाख	मेष, बैशाख मास २			सं० १३ वैशाखी, सिंह संवत्सर मुख्य है, ग्राह्य।
१-१-५७					
१३-५-५७	वैशाख				सं० १४ वैशाखी, सिंह गुरु भोग गौण है, त्याज्य।
१६-६-५७					

उधर मेघदूतमें कालिदास लिखते हैं—

'रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य ।'

विन्ध्याचलकी तलहटीके पत्थरोंमें बहती हुई कम गहरी रेवा नदी तुम्हें ऐसी लगेगी मानो किसीने हाथीके शरीर पर चित्र कलाका परिचय दिया हो ।

बहती हुई रेवा नदीके पानीमें से बीच बीचमें सिर निकाले हुए पहाड़के काले पत्थरोंको देखकर कालिदासको कोई ऐसा हाथी याद आ गया है जिसके ऊपर रेखा चित्र बनाये गये हों । फिर आगे लिखते हैं—

'तस्यास्तिक्तैर्वनगजमदैर्वासितं वान्तवृष्टि
र्जम्बूकुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः ।'

उस नदीका जल जंगली हाथियोंका मद मिल जानेके कारण कड़वा हो गया है और उसकी गन्ध भी बस गई है । इसका वेग भी वहां कम है क्योंकि जामुनके पेड़ोंमें होकर उसको बहना पड़ रहा है । बादल, तू चूँकि बरसने के कारण खाली हो चुका है इसीलिए यहां से पानी लेकर चलता बन ।

वीचिक्षोभस्तनितविहगश्रेणिकाञ्चीगुणायाः
संसर्पन्त्याः स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभेः ।
निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः सन्निपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु ॥

विन्ध्याचलसे निकलने वाली नदीमें यहां कालिदासने कामिनीकी कल्पना की है । तरंगोंको देखकर बोलते हुए हंसोंकी कतार मानो इसकी करधनीके समान है क्योंकि शरीरकी हलचलसे आभूषणोंकी झनझनाहट स्वाभाविक है । कंकड़ पत्थरोंमें होकर नदीका लहराकर चलना किसी कामिनीकी मस्तीकी चालका स्मरण करानेके लिये पर्याप्त है । इतना ही नहीं अपितु उसमें जो भँवरका गड़ा पड़ रहा है वह मानो नाभि है । ढकनेके लिये पर्याप्त वस्त्रोंके होते हुए भी किसी स्त्रीकी नाभिका चमक जाना कोई अनभिप्रेत घटना नहीं मानी जा सकती । यह अवश्य ही उसका जान-बूझकर किया हुआ प्रयास है, लीला है । स्त्रियां जिसको चाहती हैं उसके सामने पहले ऐसी ही लीलाएँ किया करती हैं । उनके प्रणयका पहला वचन यही है । इस श्लोकमें और बात भी कही गई है पर नदी का वर्णन इतना ही है ।

'वेणीभूतप्रतनुसलिला तामतीतस्य सिन्धुः
पाण्डुच्छाया तटरुहतरुभ्रंशिभिर्जीर्णपर्णैः ।
सौभाग्यं ते सुभग विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती
कार्श्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः ॥

वर्षाकालमें नदी जलसे भरी होती हैं । ठीक इसी प्रकार स्त्रियां पतिकी उपस्थितिमें स्वस्थ रहती हैं । जिस नदीका मेघरूपी पति परदेश चला गया है वह पानी कम हो जानेके कारण क्षीण हो गई है, किनारेके वृक्षोंसे सूखे पत्ते गिरते रहनेके कारण पीली दिखाई देती है । सचमुच कोई भी पति इसको अपना सौभाग्य समझ सकता है या गर्व कर सकता है कि उसके विरहमें कोई ऐसी दयनीय अवस्थाको प्राप्त हो जाय । अब पतिका काम यह रह जाता है कि वह आकर उसकी इस कृशताको दूर करे । नदीका वर्णन करते हुए कालिदास मानव प्रकृतिसे चिपककर चल रहे हैं ।

'गम्भीरायाः पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने
छायात्मापि प्रकृतिसुभगो लप्स्यते ते प्रवेशम् ।
तस्मादस्याः कुमुदविशदान्यर्हसि त्वं न धैर्या-
न्मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि ॥'

गम्भीरा नामकी नदीका पानी इतना निश्चल और स्वच्छ है कि उसकी तुलना किसी प्रसन्न हृदयसे की जा सकती है । ऐसी दशामें उसके पानीमें प्रकृतिके सुन्दर रूप बादलोंकी छाया पड़ जाती है । इस नदीमें जो चंचल मीन पलटा खा रहे हैं वे मानों इसके कटाक्ष हैं । जब इस नदी ने बादलको बिना छल कपटके हृदयमें सीधा बिठा लिया है तो बादलका भी कर्तव्य है कि वह इसे धोखा न दे और बरसनेमें देर न करे । भला देखिये, नदीका वर्णन करते हुए भी कालिदासको यह चिन्ता है कि संसारमें सरल स्त्रीको कोई धोखा न दे । वे चाहते हैं कि सरल कामिनीके कटाक्षों की अनुकूल प्रतिक्रिया पुरुषों पर होनी ही चाहिए । इसके अगले श्लोकमें उन्होंने नदीका जो वर्णन किया है उसे हम यहां उद्धृत नहीं कर रहे ।

'तस्माद् गच्छेरनु कनखलं शैलराजावतीर्णां
जह्नोः कन्यां सगरतनयस्वर्गसोपानपंक्तिम् ।

[क्रमशः]

वेधशालाओंके विकासकी आवश्यकता

[श्री पं० सूर्यनारायण व्यास ज्योतिषाचार्य]

[ज्योतिर्विज्ञान विवेचनमें वेधशालाओंका कितना उपयोग है यह किसी विज्ञ पुरुषसे छिपा नहीं है, यदि वेधशालाओंको इस विज्ञानकी आधार भूमि कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। प्राचीन भारतीय मनस्वी महर्षियोंने केवल बांसकी शलाकाओं (खपच्चियों) से गोल, नलिका एवं शंकु प्रभृति साधनों द्वारा ग्रहोंका साक्षात्कार कर जिन सिद्धान्तोंका निरूपण किया था, उनसे आज भी समस्त सुविधा सम्पन्न बड़े बड़े यन्त्रों एवं वेधशालाओंसे युक्त वैज्ञानिक थोड़ा आगे नहीं बढ़ सके हैं, यह एक विस्मय-जनक सत्य है। प्रस्तुत लेखमें दिल्ली, उज्जैन, जयपुर और काशी आदि स्थानोंमें अवस्थित प्राचीन भारतीय वेधशालाओंकी वर्तमान अवस्था एवं उनके सुधारकी विस्तृत चर्चा की गई है। यह अत्यन्त परितापका विषय है कि जिस देशमें इस विज्ञानका प्रकाश एवं चरम-विकास हुआ—उस देशकी वर्तमान स्वतन्त्रावस्थामें भी ज्योतिर्विज्ञानकी प्राणवाहिनी शिराओं-सी ये वेधशालाएं समुचित संरक्षणके अभावमें क्रमशः उद्ध्वस्त स्मारकोंका रूप ग्रहण कर रही है !! वस्तुतः अनिवार्य आवश्यकता यह है कि इन्हें नवीन यन्त्रादि सामग्रीसे सज्जित कर इस विषयके प्राचीन मर्मज्ञोंके परामर्शानुसार इन वेधशालाओंके माध्यमसे भारतीय ज्योतिर्विज्ञानका पोषण एवं उत्तरोत्तर विकास किया जाय, क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण राष्ट्रिय विषय है। कुछ वर्ष पूर्व स्वर्गीय श्री पं० केदारनाथजी महाराजके तत्वावधानमें दिल्ली-वेधशालाके ठीक करानेका कार्य चालू हुआ था, किन्तु 'दफ्तरी चाल ढाल' में वह महत्त्वपूर्णकार्य उनके जीवनमें पूर्ण न हो सका। वेधशाला सम्बन्धी प्राचीन नवीन विषयोंके वे एक सर्वमान्य प्रचण्ड-पण्डित-मार्तण्ड थे और उनकी क्षतिपूर्ति होना निःसन्देह कठिन है। तथापि हमें आशा है कि राष्ट्रिय सरकार शीघ्र ही इस विषय पर ध्यान देगी। प्रकृत लेखमें ज्योतिषशास्त्रके अन्ताराष्ट्रिय ख्याति सम्पन्न-विद्वत्सल्लज बन्धुवर श्री सूर्यनारायणजी व्यासने एतद्विषयक सुविस्तृत विवेचन किया है जो 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकों के लिए पठनीय है।

—सम्पादक]

भारतवर्षमें वेधशालाके उपयोग एवं निर्माणकी परम्परा बहुत पुरातन कालसे है। ज्योतिर्विज्ञानके प्रत्यक्ष प्रयोग परीक्षणका एकमात्र माध्यम वेधशाला ही होनेके कारण जिन पुरातनतम विद्वानों, आचार्योंने खगोलकी खाक छान डाली थी, और स्थिर सिद्धान्त निर्धारित किए उन्होंने इन वेध-शालाओंका ही आश्रय लिया है। शतियों पूर्व-निर्मित ग्रन्थोंमें ग्रहोंकी गति-विधिके जिन मौलिक सिद्धान्तोंका प्रतिपादन किया गया है, अवश्य ही वे अत्यन्त सूक्ष्म और सही होनेके कारण उन आचार्योंका प्रत्यक्ष ज्ञान आज भी वैसा ही उपलब्ध हो रहा है। उन मान्यताओं और सिद्धान्तोंको आधुनिकतम विज्ञान, एवं विकसित यन्त्र-शालाएं भी स्वीकार करनेको विवश बनी हुई है। यद्यपि इस देशमें उन अति-प्राचीन वेधशालाओंका स्थल-चिन्ह कहीं प्राप्त नहीं होता। किंतु उनके निर्माणकी विधि, यन्त्रोंकी विविधताका विवरण, उपयोग करनेकी पद्धति, और परम्परा आज भी ग्रन्थोंमें उपलब्ध है। और गणित ज्योतिषका खगोल ज्ञानानुरागी प्रत्येक छात्र अपने हाथों पूरे खगोलका प्रत्यक्ष-रूप बांसकी कीमचियों [खपच्चियों] से निर्माण कर, ग्रहोंकी गतिविधिको अपने कल्पित आकाशमें सरल स्फुट कर पूरी तरह जान सकता है। वर्तमान उज्जैन नगरी भारतकी प्राचीनतम 'ग्रीन्विच'का स्थान रखती रही है। ज्योतिष-शास्त्रका ज्ञान इस नगरीमें बहुत कुछ निर्मित

और विकसित हुआ है। स्वयं महाकालेश्वर 'काल गणना' के प्रतीकरूपमें ही यहां प्रतिष्ठित हैं। और ज्योतिर्गणितके लिए शून्यांश पर स्थित उज्जैनको अधिक महत्व भौगोलिक रूपमें भी उपलब्ध हुआ है। इसलिए अतीतके किसी युगमें निःसंदेह यहां वे सब साधन और वेधशाला अवश्य ही रही होंगी जो आज अतीतके अन्तरालमें तिरोहित हो गई हैं, केवल इस समय देशमें जयपुर, दिल्ली, उज्जैन आदिमें वे ही वेधशालाएं उपलब्ध हैं—जिनका निर्माण जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहजीने करवाया था, और जो अपने पीछे दो-ढाई सौ वर्षका इतिहास लिए स्मारक-रूपमें हमारे समक्ष खड़ी हुई हैं। इसके पश्चात् अंग्रेजी कालमें आरम्भ हुई वेधशालाओंमें कोडाई कनालकी संस्था पचास वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। जिसकी स्वर्ण जयंती कुछ समय पूर्व ही मनाई गई थी। नवीन वेधशालाओंमें यही पुरातन हैं। इसके बाद हैदराबादकी निजामिया वेधशालाका स्थान और बाद में पूनाः कुलाबा आदिकी वेधशालाएँ हैं। इन नवीन वेधशालाओंके द्वारा सौर-मण्डलके भौतिक-परीक्षाका कार्य किया जाता है। सरकारी सुविधासे ये अपनी सीमामें कार्य करती रहती हैं। यूरोप-अमेरिकाकी वेधशालाओंके लिये वहांकी सरकारों और सम्पन्नोंका पूर्ण सहयोग रहता है। और उन्हें अधिकाधिक साधन सम्पन्न बनाया जाता है। हमने हालेण्ड, ग्रीन्विचकी वेधशालाओंको प्रत्यक्ष देखा है। उनपर लाखों रुपए प्रति वर्ष व्यय होते हैं। माउण्ट विलसन, कोलम्बियाकी वेधशालाएं भी सम्पन्न एवं विशाल हैं। इनमें आकाशके अन्वेषणका कार्य होता रहता है। आधुनिकतम साधनों, यन्त्रोंसे सुसज्जित होनेके कारण उनका कार्यक्षेत्र भी व्यापक और सरल हो जाता है। ये चाहे, भारतमें हों या विदेशोंमें इनका आधार ज्योतिर्विज्ञान ही है। यह विज्ञान विदेशोंमें हमारे देशसे ही गया है। उन्होंने उसमें प्रगति की है। शासनने सहयोग दिया है फिर भी इस शास्त्रके मौलिक सिद्धान्तोंसे और गवेषणाओंके सम्पूर्ण रहस्योंसे वे यदि यथावत् परिचित न हों तो इसमें कोई विस्मयका कारण नहीं हो सकता था। फिर भी वे अनुसंधानकी दिशामें सतत प्रगतिशील रहते हैं। यद्यपि हमारे देशकी नवीन-वेधशालाएं प्रगति साध्य करनेके कारण आधुनिक उपकरणोंसे समन्वित तो की जाती हैं।

पर उन्हें इस देशके ज्ञानसे दूर रखा जाता है। पुरातनकी विशेषता भी इस कारण उपेक्षित होजाती है और जो ज्ञान इस देशसे पश्चिम पहुँचा है उसे ही उधार-पट्टे पर प्राप्त कर नए रूपमें यहां समादृत करना पड़ता है। इस कारण हमारे शास्त्रोंसे इनका समन्वय साध्य नहीं हो पाता। एकांगितामें केवल अन्धानुकरण पर निर्भर रहना पड़ता है। फलतः अनुसंधान-क्षेत्र भी सीमित रह जाता है। सौर-भौतिक रहस्योंके सिवा इतर ज्ञानमें उतनी प्रगति नहीं हो पाती। इस देशके शास्त्रसे किसी प्रकार भी उनका सम्बन्ध नहीं आने पाता। पृथक् परम्परा ही बनती जाती है। वस्तुतः इस देशके ज्योतिर्विज्ञानकी विशेषता और अनुसंधान इतिहासकी सीमासे भी परेकी वस्तु है। संसार के किसी देशमें भी वह उपलब्धि नहीं की है जो यहांके आचार्योंने आधुनिक साधनोंसे विहीन युगमें अपने सामान्य साधनोंसे ही सूक्ष्मतासे प्राप्त की है। लाखों तारोंकी गतिविधियोंको परखा है। उनके गुण धर्म-रूप-रंग, आकार प्रकार, भेद, नाम आदिका निर्णय किया है। इस देशके अकेले आचार्य बराहमिहिरने अपने संहिता-ग्रन्थमें आकाश की जिन विस्मय विमुग्धकारी विशेषताओंकी जानकारी दी है वह अद्भुत एवं अपूर्व बनी हुई है। एक आचार्य धूमकेतुओंकी एक हजार गतियोंका वर्णन कर लेता है। उनके गुण, धर्म, रूप, रंग आकृति-नाम और परिणाम तककी छानबीन कर डालता है। जबकि नए विदेशी विद्वान् और वैज्ञानिक साधनों द्वारा आज तक कुल ३०० धूमकेतुओंको ही खोज सके हैं। इसी प्रकार आकाशके लाखों तारोंमेंसे केवल विशेष प्रभावशाली २७ मात्र नक्षत्रों को महत्वका मानकर चुना है। आज तक शतियां बीत गई कोई नया नक्षत्र, नए विज्ञानने इस नक्षत्र-मालामें नहीं जुड़ानेका साहस किया है। यही बारह राशि और नवग्रहोंकी स्थिति है। जिसमें चन्द्र या मंगल लोकमें जानेकी तैयारी करने वाला कोई भी आधुनिक विद्वान्, नए ग्रहको बढ़ा-घटा या जुड़ानेका साहस नहीं सोच भी सका है। सहस्त्रों वर्ष बीते हैं, उन आचार्योंकी इस खोजको किन्तु उनकी इस गवेषणाको चैलेंज करने वाला कोई पैदा होता नहीं दिखाई दिया, पर उनके अनुसंधानको उपेक्षित कर बाहरसे आयात होने वाले ज्ञान-विज्ञानोंको ही हमारा मस्तिष्क शिर झुकाकर स्वीकार करता जा रहा है। [क्रमशः]

भारतीय संस्कृति और ज्योतिषियों पर नेहरूजीके व्यंग्य बाण

[लेखकः—भक्त श्री रामशरणदास]

अभी उस दिन पिलखुवामें एक सज्जनने हमें देहली का 'नवभारत-टाइम्स' ता० १५ फरवरी सन् १९५७ पृष्ठ ५ दिखाया जिसमें कटकमें दिये नेहरूजी के ज्योतिषियोंके ऊपर कीचड़ उछालते हुये भाषणकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया जिसमें छपा था—नेहरूजी भाषण करते हुए कहते हैं—

"हिन्दुओंमें धर्मका महत्व केवल इतना ही रह गया है कि क्या खायें और किसके साथ उठें बैठें, धर्म केवल रसोई-धर्म बना दिया है"। आपने छात्रोंको सलाह देते हुए कहा "आप यदि कुछ सीखना चाहते हैं तो कठिन परिश्रम करना होगा उसके लिये ज्योतिषियोंसे सलाह नहीं लेनी होगी।" वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने पर जोर देते हुए कहा—'केवल ग्रहोंको देखते रहने, जादू टोने और मंत्रोचारणसे भारत की उन्नति नहीं हो सकती। मुझे दुःख है कि विद्यार्थियों तकमें ज्योतिषियोंके पास जानेकी बीमारी घुसी हुई है।" आदि २

धर्मप्राण ऋषि मुनियोंके देश भारतके प्रधानमंत्रीको लाखोंकी भरी सभामें इस प्रकार पूज्य ज्योतिषियों पर कीचड़ उछालना और घृणाकी दृष्टिसे देखना, जनतामें उनके प्रति घोर अश्रद्धा पैदा करना, उनकी खिल्ली उड़ाना क्या शोभा देता है ?

मैं डंकेकी चोट नेहरूजीसे पूंछना चाहता हूँ कि नेहरूजी क्या वास्तवमें आज नवयुवक ज्योतिषियोंके पास जाते हैं और उनके पतनका कारण यह ज्योतिषी हैं ? नहीं नहीं, तीन कालमें नहीं, आजके यह अंग्रेजी पढ़े मनचले नवयुवक ज्योतिषियोंके पास नहीं जाते, यह जाते हैं सिनेमाओंकी खाक छानने, होटलोंमें मांस मछली अण्डे मुर्गे उड़ाने, सब की जूंठी चायकी प्यालियां चाटने, कालेजकी लड़कियोंके पीछे साईकिलें दौड़ाने, परस्त्रियोंको छेड़ने, बाजारोंमें पत्ते चाटने, जंगलियोंकी भांति घूमने और भ्रष्ट लीडरोंके लैक्चर सुनने, जिनसे इनका घोर अधः पतन हुआ है। याद रखिये इनका पतन मंत्रोचारणसे नहीं हुआ है, इनका अधः-पतन हुआ है आवारा घूमने और सिनेमाओंके गंदे गाने 'दिलके टुकड़े हजार हुए कोई इधर गिरा कोई उधर गिरा' गाने से। यदि यह नवयुवक संध्या वंदन करते और पवित्र होकर वेद-मन्त्रोंका उच्चारण करते तो देशका पतन नहीं, उत्थान होता। नेहरूजी ! घबड़ाइये नहीं जो पतन बाकी रह गया है उसे यह आपका भाषण और धर्मसे घृणा और आपका बनाया हिन्दू कोडबिल, तलाकबिल और कलाके नाम पर जवान जवान लड़के लड़कियोंका एक साथ नृत्य करना पूरा कर देगा। आप जो यह कहते हैं कि नवयुवक ज्योतिषियों के पास न जाकर मंत्रोचारण न कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनायें, सो याद रखिये और विश्वास करिये कि आपकी कृपासे नवयुवक पूरे पूरे नास्तिक बनते जा रहे हैं और इन्होंने धर्म कर्मको तिलांजलि दे देकर ऐसा वैज्ञानिक दृष्टि कोण अपनाया हुआ है कि यह काले अंग्रेज विदेशियोंकी भांति सारे विश्वको भूनने, उन्हें कष्ट पहुँचाने, मारनेके लिये ऐटमबम, हाईड्रोजनबम बनानेसे नहीं चूकेंगे और पूरे खूंखार बनकर ही दम लेंगे, एवं धर्म ईश्वर शास्त्र और ज्योतिषी किसीको भी नहीं छोड़ेंगे। आपने जो यह कहा है कि हिन्दुओंका धर्म चौके चूल्हेमें रह गया है और रसोई धर्म बन गया है सो नेहरूजी ! यदि आज वास्तवमें हिन्दुओंका धर्म चौके चूल्हेमें होता तो हिन्दू आज लाखोंकी संख्यामें होटलोंमें जूंठी प्यालियां चाटता दृष्टिगोचर नहीं पड़ता और देशका इस प्रकार पतन नहीं होता। चौके चूल्हेको धर्म मानने वाले हिन्दुओंके घरोंमें ही आज तक भगवान् श्रीराम लक्ष्मण, भगवान् श्रीकृष्ण बलदाऊ, अर्जुन भीम, राणाप्रताप, शिवा, गुरु गोविन्द, हकीकत जैसे रत्न उत्पन्न हुए हैं और इन चौके चूल्हे वाली सनातन धर्मी माताओंकी पवित्र कोखसे ही यह लाल उत्पन्न हुए हैं। आजके इन खड़े खड़े मूतने वाले, सबका जूंठा खाने वाले, सिगार-सिगरेटका गंदा धुआं उड़ाने वाले, सिनेमाओंकी खाक छानने वाले, कुत्ते पालने वाले बाबुओंके घर आज तक एक भी धर्मात्मा पुण्यात्मा, ज्ञानी ध्यानी त्यागी, तपस्वी धीर वीर महावीर

उत्पन्न नहीं हुआ और न इन दो दो चोटी लटकाने वाली क्रीम पाऊडर मलकर बाजारोंमें घूमने वाली चायकी प्यालियां चाटने वाली बेशर्म लेडियोंकी कोखसे कोई महापुरुष उत्पन्न हुआ। यदि हुआ, हो तो जरा उसका नाम आगे आकर बताएँ? नेहरूजी! आप जो यह कहते हो कि ग्रहोंको देखनेसे कुछ नहीं होगा सो याद रक्खो यदि आप ग्रहोंकी ओर देखते तो हम दावेके साथ कहते हैं कि आज देशका इतना घोर पतन और दिन रात घोर विपत्तियां और चारों ओर हाहाकार चीत्कार दैवी विपत्तियां देखनेमें कदापि भी नहीं आतीं। क्या यह प्रत्यक्ष ग्रहोंका अद्‌भुत चमत्कार नहीं है कि आप चाहते हैं कि हम विश्वमें शान्ति ला देंगे, पर आप विश्वमें शान्ति क्या लायेंगे जरा अपने देशमें लाकर ही दिखला दें। ग्रह तो वह वस्तु है कि बड़े-बड़े चक्रवर्ती सम्राट् को धूलीमें मिला देते हैं और देखते-देखते राजासे रंक बना देते हैं। ऐसे अभिमान भरे शब्द आपको कदापि शोभा नहीं देते हैं, आप धर्मप्राण भारतके प्रधानमंत्री हैं, इसलिये आपका परम कर्त्तव्य हो जाता है कि आप ऐसे ऐसे बे सिर पैरके नास्तिकतापूर्ण शास्त्र विरुद्ध, धर्म विरुद्ध शब्द न बोलें। ज्योतिषी, ग्रह, मंत्र और रसोई धर्म सभी मानने, जानने और श्रद्धाकी दृष्टिसे देखने योग्य हैं, घृणाकी दृष्टिसे देखने योग्य नहीं है। मेरे दिव्य देश भारत की प्रत्येक बात प्रत्येक वस्तु अद्‌भुत है, दिव्य है इसे आप जैसा पाश्चात्य सभ्यताके रंगमें रंगा मनुष्य कदापि नहीं समझ सकता। आपको यह बुरे मालूम पड़ते हैं तो आप इनके पास मत फटकिये, इन्हें हमारे लिये छोड़िये, पर इन्हें मिटानेका प्रयत्न करके भारतको गारत न करिये।

कारक-सूत्र-विवेचन

[श्री नारायण शास्त्री चुलेट]

[गतांकसे आगे]

सूत्र—"मेषादयो ध्रुवसंपाताद् ग्राह्याः ॥६॥

चन्द्रिका—प्रस्तुत कारक-पद्धतिमें ध्रुव संपातीय-सायन-मेषादि राशियोंका प्रयोग करना चाहिये।

उपपत्ति—ज्योतिष शास्त्रमें सायन और नाक्षत्र भेदसे मेषादि द्वादश राशियोंका प्रचलन है। यहां भ्रमका निवारण करते हुए सूत्रकारने प्रकृति सूत्रोंके व्याख्यानमें प्राकृत—निश्चल विषुवीय—मेषादिको ही ग्रहण करनेका अपना विशेष मत प्रकट किया है।

सूत्र—"केन्द्रादिषु केन्द्रः, राशिषु स्वभावद्वयी, आत्मबले तु भैरवीचक्रम्" ॥७॥

चन्द्रिका—केन्द्र-पणफर-आपोक्लिम संज्ञाओंमें केन्द्र बलवान् है। चर-स्थिर-द्विस्वभाव राशि संज्ञाओंमें द्विस्वभाव राशि बलवती है तथा आत्मबलके अर्थ तो भैरवी चक्रका विचार करना चाहिये।

उपपत्ति—पूर्वाचार्योंके मतानुसार सूत्रकारने भी अपनी पद्धतिमें केन्द्रको पूर्ण बली तथा पणफरको मध्य बली एवं आपोक्लिम भावको अल्प बली स्वरूपमें स्वीकारा है। उदाहरणस्वरूप यदि केन्द्रस्थ ग्रह ३ वर्ग बल प्राप्त करेगा, इस अवस्थामें पणफरी २ तथा आपोक्लिमस्थ ग्रह और भाव १ वर्ग बलका संबोधक है।

राशिषु स्वभावद्वयी—प्राचीनोक्ति "चर स्थिरद्वन्द्वाः क्रमात्स्युः बलशालिनः" के आधार पर सूत्रकारने भी द्वि-स्वभावस्थ ग्रह एवं भावकी अपेक्षा स्थिर राशिस्थ ग्रहभावको निर्बल माना है तथा स्थिरसे चर राशि निर्बल मानी गई है। यहां यद्यपि ग्रह द्विस्वभाव राशिमें ३ वर्ग बली मान लिया जाय, इस अवस्थामें स्थिरस्थ २ तथा चर राशिस्थ ग्रह अथवा भाव १ वर्ग बली माना जायगा।

आत्मबले तु भैरवी चक्रम्—इस पदका स्पष्टीकरण करनेके पूर्व आगे कहे गये विवृत्ति पांच सूत्रोंका आशय समझना अति आवश्यक हो जाता है। विवृत्ति सूत्रों द्वारा भैरवी चक्रको सूत्रकारने कहा है। प्रथम सूत्र "चक्रे पञ्च

प्रवृत्तयः'' द्वारा भैरवी चक्रमें पांच प्रवृत्तियोंका संकेत है । द्वितीय सूत्र ''उदयास्तात्त्रिकोणद्वयम्'' के द्वारा उक्त प्रवृत्तियों में से उदय (प्रथम) और अस्त (सप्तम) के आश्रय पर दो त्रिकोण वृत्तियोंका स्पष्टीकरण होता है तथा सूत्रांक तृतीय ''दक्षिणोत्तरा केन्द्र वृत्तिः'' द्वारा दक्षिण (दशम) और उत्तर (चतुर्थ) के आश्रयसे केन्द्र वृत्ति मानी गई है । एवं चतुर्थ सूत्र ''पूर्वापरा विवृत्तिः'' उक्ति द्वारा केन्द्र वृत्तिके पूर्व भाग उदय पार्श्वकी—द्विर्द्वादशीय—एवं केन्द्र वृत्तिके, पर भाग अस्त पार्श्वकी—षडष्टकीय विवृत्ति मानी है । यों कुल पांच प्रवृत्तियोंकी सूत्रकारने कल्पना की है । यहां पंचम सूत्र ''पूर्वस्यापरा निकृष्टा'' कह कर पांचों वृत्तियोंकी बलाबलमें व्यवस्था स्पष्ट की गई है । उदाहरणस्वरूप—यदि प्रथम त्रिकोण वृत्ति १, ५, ९ वें ग्रह ४ वर्ग बल प्राप्त करेगा, इस अवस्थामें द्वितीय त्रिकोण ७, ३, ११ वां स्थित ग्रह ३ वर्ग बल प्राप्त कर सकेगा । इसी प्रकार केन्द्र वृत्ति ४, १० वें रह कर २ वर्ग बल तथा द्विर्द्वादशवें रह कर १ वर्ग बल ग्रहको प्राप्त होगा । इसी आधार पर षडष्टक विवृत्तिमें स्थित ग्रह निर्बली माना जायगा । यह आत्म-बलकी आचार्य-संमत व्यवस्था है। इसका विशेष स्पष्टीकरण देते हुए सूत्रकारने अग्रिम सूत्रमें भाव और कारक ग्रहको त्रिबल शुद्ध बनानेका आदेश दिया है ।

सूत्र—तत्र भाव कारकयोस्त्रिबल शुद्धिः ॥८॥

चन्द्रिका—वहाँ बल ग्रहणसें भाव और भावार्थवाचक ग्रहको केन्द्र-राशि-आत्मबल द्वारा त्रिबल शुद्ध किया जाता है ।

उपपत्ति—सूत्रकारने दिग् देश और कालस्वरूपमें केन्द्र, राशि एवं आत्मबल पर भाव एवं भावार्थबोधक कारक ग्रहके बलाबलका संतुलन किया है । ग्रह-भावकी त्रिबल शुद्धि ही मुख्यतया सूत्रकारको संमत है । जातकोक्त अन्यान्य बलाबलकी यहां उपेक्षा की गई है, यह स्पष्ट है ।

केन्द्र बल करण कोष्ठकांक—१

अन्तर राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
वर्ग बल	३	२	१	३	२	१	३	२	१	३	२	१
बलान्तर	−१	−१	+२	−१	−१	+२	−१	−१	+२	−१	−१	+२

राशि बल करण कोष्ठकांक—२

राशियां	मे. ०	वृ. १	मि.२	क०३	सिं०४	कं०५	तु०६	वृ०७	ध०८	म०९	कुं.१०	मीन ११
संज्ञा	च	स्थि	द्वि	च	स्थि	द्वि	च	स्थि	द्वि	च	स्थि	द्वि
वर्ग बल	१	२	३	१	२	३	१	२	३	१	२	३
	+१	+१	−२	+१	+१	−२	+१	+१	−२	+१	+१	−२

आत्मबल करण कोष्ठकांक—३

अन्तर राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
वर्ग बल	४	१	३	२	४	०	३	०	४	२	३	१
अन्तर बल	−३	+२	−१	+२	−४	+३	−३	४+	−२	+१	−२	+३

उदाहरण :—

कारक ग्रह त्रिबल शुद्धि (मध्यम वर्ग बल) कोष्ठक

कारकत्व	ग्रह	केन्द्र बल	राशि बल	आत्म बल	वर्ग योग
१. आत्म कारक	इन्द्र	१·२१८	१·८९९	२·८९१	६·००८
२. अर्थ कारक	राहु	२·०२८	२·८८७	१·२९१	६·२०६
३. बन्धु कारक	यम	१·०९४	१·८३७	२·९४१	५·८७२
४. मातृ कारक	पृथ्वी	३·०००	२·७९०	२·०००	७·७९०
५. संतति कारक	मंगल	२·७८४	२·६८२	३·५६८	९·०३४
६. व्याधि कारक	शुक्र	२·६१६	२·५९८	३·६१६	८·८३०
७. स्त्री कारक	बुध	१·२८९	१·५०१	२·४२२	५·२१२
८. अरिष्ट कारक	चन्द्र	१·३२५	१·४६५	३·३१५	६·१०५
९. भाग्य कारक	वरुण	२·४३२	२·२८४	१·८६४	६·५८०
१०. राज्य कारक	शनि	२·१३३	२·३५६	२·४३४	६·९२३
११. आय कारक	रवि	१·६६२	१·१२८	२·३३८	५·१२८
१२. व्यय कारक	गुरु	१·६७२	१·११६	३·३३४	९·१२२

भाव त्रिबल शुद्धि (मध्यम वग बल) कोष्ठक

भाव	निसर्ग बल	राशि बल	कारक बल	वर्ग योग
१. प्रथम	३·०००	२·७९०	२·८९१	८·६८१
२. द्वितीय	२·०००	१·२२४	१·२९१	४·५१५
३. तृतीय	१·०००	१·९८५	२·९४१	५·९२६
४. चतुर्थ	३·०००	२·८३२	२·०००	७·८३२
५. पंचम	२·०००	१·०२८	३·५६८	६·५९६
६. षष्ठ	१·०००	१·८८८	३·६१६	६·५०९
७. सप्तम	३·०००	२·७९०	२·४२२	८·२१२
८. अष्टम	२·०००	१·२२४	३·३१५	६·५३९
९. नवम	१·०००	१·९८५	१·८६४	४·८४९
१०. दशम	३·०००	२·८३२	२·४३४	८·२६६
११. एकादश	२·०००	१·०२८	२·३३८	५·३६६
१२. द्वादश	१·०००	१·८८८	३·३३४	६·२२२

[क्रमशः]

सामयिककथा

सं० २०१४ में कोई अकल्पित अद्भुत घटना घटेगी

[लेखकः—श्री पं० हंसराज कपिल ज्योतिषाचार्य]

समय (काल) की गति अगाध है। इसका महत्व अवर्णनीय है। यही एक आदिपुरुष है, जिसकी अंगुलीके संकेत पर आज अखिल ब्रह्माण्ड नाच कर रहा है। इसीके ही द्वारा वर्ष, मास, दिन, घटी तथा पल आदिके विभिन्न विभागोंका निर्माण किया गया है। इसी ही को प्रत्येक मानव, पशु, पक्षी और वृक्ष वनस्पत्यादि जड़ चेतनात्मक सृष्टिके रचयिता तथा संहारक माना गया है। इसी ही के प्रभावसे सदा आधिदैविक आधिभौतिक और आध्यात्मिक फल होता रहता है। यह वही एक नियन्ता है, जिसके नियन्त्रणमें रह कर सूर्य तथा चन्द्रमाको, नक्षत्रात्मक मौक्तिकोंसे सुशोभित, काली साड़ी ओढ़े, रात्रिको तथा खरतर किरणोंके प्रकाशसे समुद्भासित दिवसको, क्रमशः जगत्के रंगमंच पर अभिनय करना पड़ता है। इसी काल का दूसरा नाम युग है। शास्त्रोक्त चारों युग इसीके ही रूपान्तर हैं। जिनमें से कलियुगकी छाप तो जनता पर लग ही रही है जो कि अनुचित, सर्वथा सभ्यतासे पतित, कुत्सापूर्ण कार्य भी, औचित्यके रूपमें परिणत होते दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इसीके ही अन्तर्गत संवत् संज्ञाका प्रादुर्भाव हुआ। जो कि जातिभेदसे अनेक भागोंमें बट गया। कदाचित् शरद् और युधिष्ठिर संवत्, कदाचित् वैक्रमीय तथा शालिवाहनीय शक संवत्, कभी हिजरी और ईसवीका संवत् अंकुरित हुआ। जिनका अनुगामी, भारतीय स्वतन्त्रताका निर्देशक गणतन्त्र संवत् भी आज निज नामकरण संस्कार करवा चुका है। इनका अनन्त तथा अलौकिक महत्व तो देखते ही बनता है। स्थान स्थान पर हो रहे भयंकर युद्ध, वर्षा, आंधी, अग्निकांड, हत्याकांड देश विभाग और भूकम्प आदि इन्हींके ही आधार पर निर्भर हैं।

वैसे तो कल्याणकारक होनेके कारण, संवत्सर शब्दसे पूर्व, प्रायः "शुभ" शब्दका प्रयोग किया ही जाता है। परन्तु जैसे लोक प्रकाशक सूर्य अथवा चन्द्रमाको भी कदाचित् ग्रहण लग जाया करता है। एवम् संवत्सरमें भी दूषण लग जाया करते हैं। कहां और कब? जबकि शताब्दी चार वा चौदहके आंकड़ोंका खेल खेल रही हो। अर्थात् किसी भी संवत्सरमें इनके प्रयोगसे प्रायः सृष्टिको विनाशकारी दीमक लग जाया करती है। इस बातको भी मन मन्दिरके केन्द्रमें स्थान प्रदान करना आवश्यक होगा, कि यदि चार और चौदह आंकड़े वैक्रमीय शताब्दीसे ऊपर आ जावें, तो एशियाको शान्तिके विरुद्ध महायुद्धके लिये निमन्त्रण देना पड़ता है। परन्तु यदि वैक्रमीय शताब्दीसे ४,१४ आंकड़े घटा दिये जावें, तो अमुक संवत्सरोंमें पश्चिमीय प्रदेशोंके महायुद्धका रंगस्थल प्रस्तुत करना पड़ता है। दूरकी बात नहीं, अभी वैक्रमीय सं० २००४ का ही इतिहास उठाकर देखिये, जबकि, नवाखली, बिहार, हैदराबाद दक्षिण, पंजाब, काश्मीर इण्डोनेशिया आदि अनेकों स्थानों पर लड़ाई झगड़े, गोलाबारी अथवा गोलीकाण्ड तथा छुरे बाजी आदिकी भरमार रही। अश्रुगैसको प्रयोगमें लाया गया। स्थान स्थान पर भीषण अग्निकांडकी घटनाएं पाई गई। बहू बेटियोंकी लाजको बचाना भी दूभर हो रहा था। वर्बरताका नंगा नाच होने लगा था। भाई भाईके रक्तका प्यासा था। प्रान्तीयता टुकड़ोंमें बट रही थी। यहीं नहीं, इससे गत शताब्दी उन्नीसवींका भी रोना धोना सुन लीजिये, [ध्यान रहे; ज्योतिः शास्त्रके अनुसार वि० संवत्में ५७ घटा देनेसे ईस्वी संवत् बन जाता है] वैक्रमीय संवत् १९१४ सन् ईसवी १८५७ की हा हा कार मचाने वाली भीषण घटनाएं किसीसे छिपी नहीं हैं। उस समयके गदर (विद्रोह) का भयानक दृश्य याद करके आज भी हृदय कांप उठता है, रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मन पर व्याकुलता का भूत सवार होने लगता है। वह एक महान् विध्वंसकारी काल था।

अब इससे भी कुछ पग और निचले स्तरकी और बढ़ें

तो वैक्रमीय संवत् १९०४ तदनुसार ईसवी संवत् १८४७ की हृदय विदारक घटनाओंका विचित्र चित्र देखनेमें मिलेगा जबकि सिक्खोंने अंग्रेजों पर आक्रमण किया। जिसके फलस्वरूप सफलताके स्थान पर निराशा हाथ लगी। महाराजा रणजीतसिंह द्वारा की गई सन्धिके अनुसार सिक्खों को तीन करोड़ रुपया कर रूपेण देना पड़ा। परन्तु आर्थिक त्रुटि आ जाने पर वह ऋण ज्योंका त्यों ही सिक्खोंके सिर पर पड़ा रहने लगा। अन्तमें जिस किसी प्रकार श्री गुलाब सिंहने ७५ लाख रुपया देकर जम्मू तथा काश्मीरको जो कि पंजाबका ⅓ तिहाई भाग था खरीद लिया। सिक्खोंके शेष उधारसे उऋण न होने पर अंग्रेजोंने, पंजाबमें स्थान स्थान पर आक्रमणोंका श्रीगणेश कर दिया, तथा अधिकार जमा बैठे। एवम् इससे भी गत शताब्दियोंके युद्धोंमें भी भली भांति चार चौदहकी परख, अनुभवकी कसौटी पर करते चलें। यह नियम सर्वथा ठीक प्रमाणित होगा।

अब वैक्रमीय शताब्दीके ऊपरके आंकड़ोंको छोड़ निचले पथकी ओर भी पग उठानेका कष्ट करें, तो आपको सर्व प्रथम बीसवीं शताब्दीसे ४ घटाने पर वैक्रमीय संवत् १९९६ तदनुसार ईसवी सन् १९३९ का भीषण द्वार दिखाई पड़ेगा। जिसमें हिटलर द्वारा सम्पन्न महायुद्धका प्रभाव, नतमस्तक होकर सबको सहन करना पड़ा था। इसी प्रकार बीसवीं शताब्दीमें से १४ घटाने पर वैक्रमीय संवत् १९८६ तदनुसार ईसवीं सन् १९२९ का मन्दिर दीख पड़ेगा। जिसमें कि श्री अमानुल्ला शाहको (बच्चा सक्काकी विजयकी दुन्दुभि बजने पर) अफगानिस्तानके राजसिंहासन को छोड़, निज प्राण रक्षा करनी पड़ी थी। एवम् अतीत शताब्दियोंमें भी होता रहा है। यह तो रही वैक्रमीय शताब्दीकी कथा। अब दूसरी ओर अंग्रेजी शताब्दीका भी एक दृश्य देखिये जैसा कि ऊपर नियमोंका उल्लेख किया गया है कि जिस संप्रदायके सम्बन्धमें जानना हो, उसकी शताब्दीसे ऊपर उक्त आंकड़ोंका संवत् आने पर उसी में महायुद्ध अन्यथा विपरीत फल जानना चाहिये। वैसे ही अब ईसवी संवत्की गतिविधि पर वही विधान लागू कीजिये। अभी निकट ही ईसवी सन् १९१४ गया है, उसकी दयनीय दशा पर तनिक मात्र दृष्टि डालिये, तो आपको विदित हो जावेगा, कि ब्रिटेन और जर्मनीकी मुठभेड़ होने पर किस प्रकारकी कूटनीति चली? किस प्रकार, विजिगीषु अंग्रेजोंने स्वतन्त्रताके सब्ज बाग दिखला कर भारतीय सेनाओंको कठ पुतली बनाया और विश्वासघातका हाथ बढ़ाया? इसी प्रकार सन् ई० १९०४ में लार्ड कर्जन की शाह लाशासे मुठभेड़ हुई। ऐसे ही हिजरी संवत् द्वारा युद्ध सम्बन्धी घटनाओंके प्रति जानकारी प्राप्त करना नितान्त सुगम रहेगा।

प्रत्येक प्राणी अतीतकी अपेक्षा भविष्यवाणीके सम्बन्ध में अधिक उत्सुक हुआ करता है। अतः यह स्पष्टरूपेण प्रकाशकी भान्ति प्रकट ही है। कि अतीतकी भांति वि० सं० २०१४ प्रतिदिन निकटवर्ती हो रहा है। जिसमें उत्पत्स्यमान समरानल कण एक महायुद्धकी भीषण ज्वालाके रूपमें परिणत हो जावेगा। जिसके भीतर अतीव प्रवृद्ध जगत्के तृतीय भागकी इतिश्रीका हो जाना भी कोई असम्भव न होगा।

इस घटनाका भी उल्लेख कर देना कोई अनावश्यक न होगा, कि:—वि० सं० २०१४ से २०१७, ई० सन् १९५७ से १९६०, हि० सं० १३७७ से १३८० तक घोर संग्रामकी संभावना पाई जाती है। इसके अनन्तर वि० सं० २०१९ सन् ई० १९६२ तक सामान्य स्थिति रहेगी।

यह बात भी ध्यान देने योग्य होगी, कि "पंचस्वरा" नामक ग्रन्थके अनुसार ईसवी और हिजरी संवत्सरों पर शून्य आ रहे हैं। तदुक्त नियमोंके अनुसार उनमें जो न्यूनतम संवत् होगा, उसी पर शून्यका पूर्ण प्रभाव पड़ेगा। अतः हिजरी संवत् मानने वाले यवनोंके लिये वह वर्ष श्रेयस्कर प्रमाणित न हो सकेगा। निष्कर्ष यह है, कि उस समय नाना देश नष्ट भ्रष्ट होकर टूटे फूटे खंडहरोंके रूपमें परिणत हो जावेंगे। छोटी मोटी शक्तियां तो महासत्वोंकी मुठभेड़में शशकोंकी भांति पांव तले ही रौंदी जावेंगी।

इधर ग्रह व्यवस्थाकी भी एक झांकी पर दृष्टि डालिये, यहां कि बुध, शनि राहु तथा भौमका परस्पर सहयोग सम्पन्न हो रहा है। जिसके अनुसार पंजाबके लिये साधारण आतंक सा छाया रहेगा। निःसंदेह शनि वृश्चिक राशिका होनेसे युद्धानलका श्रीगणेश किसी नदी या सिन्धुस्थानसे होना चाहिये। संभवतः पूर्व पश्चिमीय पंजाबकी ओरसे ही हो, तथापि भारतकी निश्चयात्मक विजय ही रहेगी। ध्यान रहे, बगदाद पैक्ट अथवा सीटो सन्धि मुस्लिम जातिके लिये कल्याणकारक सिद्ध न होगी। संभवतः शिष्ट दीन

हीन यवन निज साम्प्रदायिकताकी वेषभूषामें परिवर्तन लाकर आपने आपको सुरक्षित कर सकें। यह भी स्मरण रहे, जिन जिन राशियोंसे शनि, चौथे, सातवें, आठवें तथा बारवें घर होगा या जिन जिन राशियोंको यह देखता होगा—उन उन नगरोंके लिये अनिष्ट फलप्रद होगा। कई विद्वज्जन काश्मीरकी सिंह राशि मानते हैं। परन्तु वैष्णव-शास्त्रमालाके अनुसार इसे कुंभ राशिके मण्डलमें माना गया है। कुछ भी हो। काश्मीर, भारतसे किसी भी प्रकार भी पृथक न रह सकेगा। क्योंकि इसकी सिंह राशि होने पर शनि भौमका दृष्टि पात हो रहा होगा, अतः युद्धका मूल हेतु तो सिंह ही होगा, परन्तु सिंहका स्वामी सूर्य मेष राशिमें जा रहा होगा तथा आक्रमणकारी शनि पीछेकी ओर (वक्रगामी होनेसे) जा रहा होगा। अतः काश्मीर अवश्य ही भारतका अंग रहेगा। संघट्ट चक्रके अनुसार बुध, शुक्र और चन्द्रमा मीन राशिमें, केतु मेष राशिमें, और वृश्चिक राशिमें शनिका वेध हो रहा है। जिसके अनुसार संसार समरके खतरेसे खाली न रह सकेगा।

अतः नितान्त युद्ध सम्बन्धी विवरणसे जानकारी प्राप्त करनेके लिये, निम्न प्रकारसे संक्षिप्त तथा सारगर्भित स्वरचित पद्य द्वारा भाव प्रकट किया जा रहा हैः—

युगे ४ मनौ १४ वा शततोऽधिकोऽणे,
महारणोऽब्दे सति वैक्रमाङ्के ॥
क्रान्तेऽश्वपूर्वेऽपरथा प्रतीच्यां
मन्देक्षिताऽधिष्ठित राशि योगात् ॥१॥

तीन मासकी अनुभूत तेजी मंदी

गुड़ सरसों रुई सोना चांदी मटर गवारादि पर शास्त्रीय दृष्टिसे विचार

[लेखकः—श्री पं० हंसराज कपिल ज्योतिषाचार्य]

लम्बी धारणा

वैशाख तथा ज्येष्ठ मासमें गुड़ दो अढ़ाई रुपये मन्दा, आषाढ़में डेढ़ रुपया तेजी आनेकी संभावना पाई जाती है।

सरसों—वैशाखमें डेढ़ रुपया तेज, ज्येष्ठ मासमें दो रुपये मन्दी। १२ आषाढ़के पश्चात् मासान्त तक अढ़ाई रुपये तेज हो जानेकी संभावना पाई जाती है।

रुई—१२ वैशाखसे २५ ज्येष्ठ तक २५ टके तेज, २६ ज्येष्ठसे ३० आषाढ़ तक ३५ टके मन्दा आनेकी संभावना है। गवार तथा मटरके भाव गुड़ भावके साथ २ खेलते रहेंगे।

वैशाख मासका आरंभ १३ अप्रैलसे हो रहा है। जिसमें सोमवार में ही अमावस्या तथा पूर्णिमाका समावेश है। गुरु महाराज तो वक्री हैं ही, बुध भी वक्रगामी होकर अस्त हो रहा है। एक ओर भौमक्षेत्रीय मेष राशि बुध, शुक्र, केतु तथा सूर्यसे व्याप्त है, दूसरी ओर सामने राहु तथा आठवें शनिदेव स्थित हैं। जिनका सम्बन्ध भौमसे और उसका गुरुसे देखरेखमें आता है। इसके अतिरिक्त वैशाख संक्रमण मु० ३० में प्रवेश कर रही है। अतः यह मास प्रायः प्रत्येक मार्केटमें काफी उतार-चढ़ाव उत्पन्न करने वाला होगा। जिसका विवरण निम्न प्रकारसे है—गुड़, गवार तथा मटरमें १३ अप्रैलसे १७ अप्रैल तक मन्दा, रुई, एरण्डामें सामान्य मन्दा, सोना चांदीमें विशेष मन्दा, सरसों घटबढ़में रुख तेजीकी ओर होगा। १८ अप्रैलसे २३ अप्रैल तक गुड़में साधारण मन्दा, रुई तथा एरण्डामें विशेष तेजी, सरसोंमें भारी मन्दा, गवार मटर उतार-चढ़ाव में ही पड़े रहेंगे। २३-२४ अप्रैल को मिथुनमें मंगल तथा बुधका वक्रत्व पाया जाता है। इधर मेषके सूर्य शुक्रका योग भी उक्त योग को नीचा दिखानेकी ताकमें है। अतः प्रत्येक मार्केटमें विशेषतया उथल-पुथल मची रहेगी। इन दिनों मन्दीके आए उछालेमें खरीद करना अत्यन्त लाभ-दायक सिद्ध होगा। २६ अप्रैलसे ३ मई तक गुड़ गवार मटर तथा सींगदानामें मन्दीका बोलबाला रहेगा। रुई सोना चांदी तथा सरसोंमें तेजीका ही बोलबाला रहेगा। ४ मईसे

६ मई तक गुड़ गवार मटर सींगदानामें सामान्य तेजी, एरण्डा, रुईमें विशेष तेजी, सोना चांदी घटाबढ़ीकी खेल खेलते रहेंगे।

७ मईसे १८ मई तक रुई एरण्डा तथा सींगदानामें तेजीका तूफान छा जावेगा। सरसोंमें मन्दीकी आंधी इठलाती रहेगी। गुड़ गवार तथा मटरमें तेजीका सिन्धु उमड़ पड़ेगा। २० मईसे २४ मई तक प्रत्येक मार्केट में साधारण मन्दीकी घटाएं मण्डलाती रहेंगी, क्योंकि इस मासमें बुध उदय होनेके अतिरिक्त वृहस्पतिके साथ २ मार्गी भी हो रहा है। अमाबस्या तथा पूर्णिमा भी बुधवार ही है। भले ही संक्रमण मु० ३० में प्रविष्ट है। जिसके अनुसार मार्केटमें भीषण तूफानका छा जाना आवश्यक है। तथापि २५ मईसे ३० मई तक गुड़ गवार मटरमें मन्दा, सोना चांदी तथा सरसोंमें तेजी, सींगदाना, रुई और एरण्डा में विशेष मन्दा रहनेकी संभावना है। ३१ मईसे ७ जून तक नजराना लगाकर लाभ उठाना चाहिये। ८ जूनसे १३ जून तक सोना चांदी तेज, रुईमें विशेष घटबढ़ रहने पर भी रुख मन्दीकी ओर ही अग्रसर होता रहेगा। गुड़ गवार मटरमें तेजीमें मन्दीके उछाले आते रहेंगे। सींगदाना तथा एरण्डा कुछ नर्म रहेंगे। सरसोंमें मन्दीकी ही ध्वनि गूंजती रहेगी। आषाढ़ मासमें गुरुवारमें ही अमावस्या तथा पूर्णिमा का समावेश है। गुरु बुध तथा शुक्र अग्रिम राशियोंमें पांव पसार रहे हैं। ऐसी स्थितिमें १४ जूनसे २० जून तक प्रत्येक मार्केटमें मन्दीकी नदियां बह निकलेंगी।

२१ जूनसे ४ जौलाई तक गुड़ गवार तथा मटरमें तेजीकी आग भड़क उठेगी। रुई,एरण्डा,सींगदाना तथा सरसोंमें मंदी का राग अलापा जावेगा। सोना तथा चांदीमें तेजीकी ही चमक-दमक व्यापक रहेगी, ५ जौलाईसे १५ जौलाई तक गुड़ गवार तथा मटरमें मन्दीका नाद सुनाई देगा। परन्तु रुई मन्दीके उछालेमें खरीद करनी लाभदायक सिद्ध होगी। सरसों, सींगदाना तथा एरण्डामें भी काफी उतार चढ़ाव व्याप्त रहेंगे। अतः इन दिनों मन्दीके आए उछालेमें खरीद का कार्य ही श्रेयस्कर रह सकेगा। मन्दीकी बढ़ती बाढ़ को देख, छलांग लगाने वाले व्यापारी को, व्यापारमें आंच आ जाना असंभव न होगा।

तीन मासकी गुड़की जनरल लाइन

[ज्योतिर्विद् श्री पं० प्रेमनाथ वासिष्ठ, आयुर्वेदाचार्य]

विज्ञानके इस युग में ज्योतिषके प्रति लोगोंकी श्रद्धा दिन प्रति दिन घटती जा रही है, इसका कारण हम लोगों की कमी ही है। हम उसके सिद्धान्तोंको क्रियात्मक अनुभव में नहीं लाते। ज्योतिष स्वयं एक महान् विज्ञान है। उसके सिद्धान्त वस्तुतः सत्य हैं। उनको यदि हम अनुभवकी कसौटी पर परीक्षा कर शुद्ध रूपमें जनताके सामने लायें तो फिर लोगोंको यह कहनेका अवसर न मिलेगा कि ज्योतिष असत्य है। अंग्रेजीमें एक कहावत है "Experience is better then theory" अर्थात् अनुभवका महत्व सिद्धान्तोंकी अपेक्षा अधिक है। अब मैं आपके सामने व्यापारिक वस्तुओंमें "गुड़" का किस राशि तथा ग्रहसे सम्बन्ध है और उस पर जो मेरा अनुभव है, आप लोगोंकी सेवामें प्रस्तुत कर रहा हूं। व्यापारी वर्गका कर्तव्य है कि सत्यसिद्ध होने पर सूचित करें।

मार्केटमें तेजी मंदीका आना वृद्ध ग्रहों पर अधिक अवलम्बित रहता है। जब यह ग्रह आपसमें तथा वस्तुके स्वामिसे प्रवल सम्बन्ध बनाते हैं तभी मार्केटमें तेजी मंदी आती है। जब अच्छे सम्बन्ध बनाते हैं तब वस्तुका मूल्य बढ़ता है अशुभ सम्बन्ध होने पर मूल्य घट जाता है। इन्हींके द्वारा मार्केटकी लम्बी लाइन सूचित होती है। वृद्ध ग्रह शास्त्रकारोंने शनि राहु और गुरुको माने हैं। सायन पद्धति वालोंने यूरेनस नेप्चूनकी गणना भी वृद्ध ग्रहोंमें की है। मार्केट पर इन सभीका प्रभाव होता है। गुड़के लिये वृष राशि तथा इसके स्वामि शुक्रका ही महत्वपूर्ण स्थान है। जब यह अपनी उच्च राशिमें तथा स्वराशिमें होता हुआ अन्य ग्रहोंसे अच्छे सम्बन्ध बनाता है तो मार्केटमें निश्चित तेजी होती है और जब नीच राशिमें तथा शत्रु राशिमें होता हुआ अन्य ग्रहोंसे अशुभ सम्बन्ध

बताता है तब मार्केटमें मंदी आती है। मंगल ग्रहका भी गुड़ मार्केट पर पूरा प्रभाव होता है, किन्तु वह अधिक दिन ठहरने वाला नहीं होता जैसा कि उपर्युक्त वृद्ध ग्रहोंका होता है।

आगामी तीन महीनोंमें जो ग्रह रचना बन रही है वह प्रस्तुत लेखमें दी जा रही है।

यह लेख चैत्र शुक्ला दशमी १० अप्रैल से ६ जौलाई १९५७ ई० तक के लिये गुड़के व्यापारियोंकी सहायता करेगा।

अप्रैल मासमें शुक्र मेष राशि संक्रमण कर रहा है, तारीख १३ को मंगल नेप्चूनका अशुभ सम्बन्ध, ता० २५ को मंगल यूरेनससे अर्ध केन्द्र योग मंदी ही सूचित करते हैं। ता० २१ को शुक्र से यूरेनसका केन्द्र योग ता० २० में भी शुक्रका नेप्चूनसे प्रतियोग हुआ है सभी ग्रहोंसे इस महीने शुक्रके सम्बन्ध अच्छे नहीं बन रहे हैं यह मंदी की लाइन बनानेके द्योतक हैं।

गुड़ मार्केट १० अप्रैल से १६ तक अच्छी मंदीकी लाइन बनेगी। ता० १७ से ३० तक तेजीके उछाले आयेंगे परन्तु लाइन मंदीकी ही रहेगी।

मई मासके ग्रह योग इस प्रकार हैं—सूर्य अपनी उच्च राशिमें चल रहा है गुरु कन्या राशिसे वक्री होकर सिंह राशिमें आता है, सिंह राशि इसके मित्र ग्रहकी राशि है।

ता० १३ मईको सूर्य गुरुका त्रिकोण योग बन रहा है जो कि तेजी लाने वाला है ता० १६ मईको शुक्र वृष राशि में होते हुए यूरेनससे त्रिरेकादश योग भी तेजीका ही है। स्मरण रहे यह तेजी ता० २२ तक ही चल सकेगी, आगे शनि महाराज वक्रावस्थामें वृश्चिक राशिमें ता० २३ को शुक्रके साथ प्रतियोग कर रहे हैं अतः निश्चित है कि ता० २३ से मंदीकी लहर प्रारम्भ हो जायेगी,

गुड मार्केट—१ मई से ३ तक तेजी, ता० ४-५ मंदी। ता० ६-७ तेजी। ८ से १३ तक अच्छी मंदी। ता० १४ से २२ तेजी अच्छी। ता० २३ से ३१ तक मंदीकी लाइन होगी।

जून मास—ता० ७ जूनको शुक्रनेपचूनका त्रिकोण योग हो रहा है और बुध गुरुका भी त्रिकोण बनता है। ता० ६ को मंगल मिथुन राशिमें होते हुए गुरुसे त्रिरेकादश योग बना रहे हैं, ता० १५ को बुध वृष राशिमें होते हुए यूरेनससे त्रिरेकादश योग बनाते हैं यह योग तेजीके ही द्योतक हैं।

ता० १८ को बुध यूरेनसका प्रतियोग होता है, ता० २१ को मंगल नेप्चूनका केन्द्र योग हो रहा है, यह मंदी लाने वाले हैं, यह मंदी घटा बढ़ीके साथ होगी।

गुड़ मार्केट—१ जून से ३ तक मंदी, ता० ४ से १७ तक अच्छी तेजी। ता० १८ से २४ घटा बढ़ी रहेगी २५ से ३० तक लाइन मंदीकी रहेगी।

जौलाई मास—ता० १ को शुक्र नेप्चूनका केन्द्र योग हो रहा है अतः ता० १-२ मंदी रहेगी। ता० ४ को सूर्य बुधकी युति, ता० ५ को मंगल शनिका त्रिकोण योग आगे के लिये एक लम्बी लाईन बना रहे हैं। आगेका भविष्य आप "श्रीस्वाध्याय" के ग्रीष्मांकमें पढ़ेंगे। विशेष जानकारीके लिये पत्र व्यवहार करें।

———

ज्योतिषकी दृष्टिमें त्रैमासिक तेजी मंदीका विचार

चैत्र शु० १० ता० १० अप्रैल से ज्येठ शु० १० ता० ७ जून तक

[लेखकः—श्री पं० ओंकारप्रसाद शर्मा ज्योतिर्भूषण]

"ज्योतिष गणित शास्त्रानुसार इन तीन महिनोंमें प्रारंभसे ही सुपीरियर लाइन चलती रहेगी। इसलिये ऊंची तेजीमें जो भी व्यापारी खरीदका काम करेगा वो ही नुकसान उठायेगा और जो तेजीमें बेचकर बैठ जायेगा वो ही मंदीके चांसोंसे लाभ उठाता रहेगा ये हमारा खुला चांस है। कभी भी गलत होने वाला नहीं है। इस फसलकी वस्तुओंकी आमदसे पहिले ही जिन्सोंके निर्ख गिरेंगे इसलिये ये हम व्यापारियोंको सुनहरी चांस इस वर्षके प्रारंभमें भेंट कर रहे हैं। ताकि इस वर्षकी भंडसाल करने वाले व्यापारी नुकसान से बच जायें और श्रीस्वाध्यायके ये लेख और चांस आपके हृदयमें याद रहे और भी हम ये स्पष्ट ऐलान करते हैं कि यहां सायन निरयन ग्रहोंके चक्र तमाम ही मंदेके हैं। सबका पूर्ण विवरण देना तो महान् कठिन समस्या है, क्योंकि हम यह लेख कुछ शब्दोंकी गिन्तीका ध्यान रखकर दिया करते हैं, तो भी थोड़े शब्दोंमें ये हम स्पष्ट कथन करते हैं कि ता० १०-४-५७ को हर्शल अर्थात् प्रजापति (ब्रह्मा) मार्गी होगा इसके असरसे किराना खाद्य पदार्थोंके भाव अवश्य शनैः २ गिरेंगे। इलक्ट्रिक शेयर धातु पदार्थोंमें इसके विपरीत होगा। साथ ही मैटीरियल इण्डस्ट्रियल बारीक कपड़ोंके निर्ख चढ़ेंगे।

यहां इसी तारीख पर मंगल शनिका प्रतियोग मूल वस्तुओंमें तथा लोहा अंरडा तेल तिलहन रुईके भावोंमें उछाला दो दिन लाकर बाद तमाम मार्किटोंमें पौने दाम कर देनेकी घोषणा करेंगे। इस योगका मुनाफा तैयारी तथा सट्टे के व्यापारी जरूर उठायें।

ता० १३ को मेष संक्रान्ति चांदी सोनेमें तेजी पर। गुड़ गेहूं मटर चनामें मंदीका ऐलान करेगी। तदुपरान्त ता० २० पर सायन ज्योतिष पद्धतिके अनुसार सूर्य, शुक्र का राशि परिवर्तन तेजीका चांस अपनी अधिकृत वस्तुओंमें देंगे पर ३ दिन बाद ही ता० २३ अप्रैलको मंगल और गुरु ग्रहका अंशात्मक केन्द्रयोग होनेसे सभी व्यापारिक वस्तुओंमें स्टेडी भाव पुनः गिरने लगेंगे। विशेष शेयर सेक्यूरिटी और रुई आदि मूल खाद्य पदार्थोंमें मंदीके जोरदार धमाकेसे घबराहटकी मंडियां आने लगेंगी। इस तारीख परके चालू चांस ता० ६ मई तक चलेंगे, ये भी ध्यान रखना ता० ६ मईके बाद ता० २५ जून तक मोटे अनाजोंमें गेहूँ चना मटर तिलहन सरसोंमें मद्रास बम्बई कलकत्ता प्रदेशोंकी मांग उपरोक्त वस्तुओंमें अवश्य निकलेगी, अतः आप भी सावधान रहना और यहां माल भरकर हाथोंहाथ नफा पकाते रहना ये तारुणी आपको लाभ देगी। ये हमारा परीक्षित चांस है। बाकी खुलासा विवरण "सांडिल्य व्यापार भविष्य" ६) रु० वाली पुस्तकमें आप पढ़ रहे होंगे जो कि हमारे यहांसे निकलती है। पर यहां हम सावधान करते हैं कि इस पीरियड की तेजी आगे पुनः कए दम खत्म होगी इसलिये हमने ये संकेत किया है कि हाथों हाथ लाभ उठाते रहे। यहां गुड़में सवाई कीमतें होंगी इसी पीरियडमें एक खास योग ता० १३-५-५७ पर शुक्र ग्रहका मिथुनमें सूर्यसे आगे होना महीन वस्त्र घी कपूर रबड़में चांदी सोनेमें जोरदार तेजी करेगा। ता० १७-५-५७ से २० मई तक पुनः मंदीका दौर। पर २१ मईके बाद फिर मंदी २३ तक रुकेगी, २४ मईसे २५ जून तक हर मंदेमें खरीदार हर वस्तुके व्यापारी लाभ उठाते रहेंगे, परन्तु इस तेजीमें जो बेच जायेगा वह विशेष रूप से गुड़ खांडमें लाभ उठायेगा, क्योंकि इस समयकी ग्रहस्थिति तेजीसे एकदम खत्म होकर मंदेकी ओर झुकेगी। इतना ही संकेत देकर ये अपना भविष्य समाप्त करते हैं और पुन. ये जोर देते हैं कि इस तेजी से निकल जाना ही आषाढ़ श्रावणमें लाभकारी सिद्ध होगा, जिसका विवरण हम अगले 'ग्रीष्मांक' लेखमें स्पष्टरूपेण कथन करेंगे, अतः इस तेजीका लाभ जो इस जेठमें आयेगी हाथों हाथ मुनाफा पक्का करते रहना।

—

त्रैमासिक-व्यापार-भविष्य

[लेखकः—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिषरत्न]

सं० २०१४ विक्रमीकी नववर्षारम्भ प्रवेश संक्रान्ति चैत्र शुक्ल चतुर्दशी शनिवारे सिंह लग्नमें दधि भक्ष, वायु-मण्डल तीसरे वार चतुर्थ नक्षत्रमें लग रही है, अतः यह मास प्रारम्भमें मन्दीके पक्षमें और मासका उत्तरार्द्ध तेजी कारक योगोंको प्रबल करेगा। शनिवारको वायुमण्डलमें संक्रान्ति प्रवेश होनेके कारण, चांदी, सोना, तांबा, कांसी-पितलमें सामूहिक रूपसे तेजीके वातावरणको उत्पन्न करनेमें सहायकक होगा। यथा—

रजत्स्वर्णताम्रादि त्रिपुकांस्यानि पित्तलम् ।
वायु धिष्ण्ये तु संक्रान्तिर्म हर्घतामादिशेच्छनौ ।।

ता० १३ अप्रैलसे ७ मई तक सूर्य-बुध-शुक्र मेष राशिमें रहते हैं, ता० २७ अप्रैलसे ४ मई मध्यान्ह तक एक नक्षत्रमें रहते हैं जो सर्व प्रकारके धान्योंमें तेजी कारक हैं। यथा—

एक राशि स्थिता ह्येते सौम्यशुक्रदिवाधिपाः ।
सर्वधान्य महर्घत्वं मेघा स्वल्प जलप्रदाः ।।
एक नक्षत्रगा ह्येते तदा भय विवर्धकाः ।

ता० २१ अप्रैलको बैशाखबदी सप्तमी रविवारी है उस दिन मंगल मृगशिर नक्षत्रमें है अतः यह पंसारीके सामान पिप्पली-नारीकेल, सुपारी आदि तथा ताम्बा-कांसी और लाल रंगकी वस्तुओंमें तेजी कारक है। यथा—

वैशाखे कृष्ण पक्षे च सप्तमी रविवासरे ।
भरण्यादि चतुर्ऋक्षे यदा भौमो भविष्यति ।।
पिप्पली नारिकेरं च ताम्रं कांस्यं च पूगिका ।
तथा सुरक्त वस्त्राणि जायते च महर्घता ।।

जिस दिन सूर्यदेव मेष राशिमें प्रवेश करते हैं उस दिन हस्त नक्षत्र होनेसे हानिकारक है।

यदा मेषगतः सूर्यो मघादि दशके यदि ।
हानिरेव तदा वाच्या विद्वद्भिः सुनिश्चितम् ।।

मेष संक्रान्तिके दिन शनिवार होनेके कारण किरानेका सामान तथा गेहूं और चनोंमें तेजी हो।

मेष संक्रमण काले तु शनिवारो भवेद्यदि ।
क्रियाणके च गोधूमे महर्घं चणके तथा ।।

ता० १ मईको जो वैसाख मासका चन्द्रोदय हो रहा है वह शनिकी दृष्टिमें जानेके कारण चावल, जौ, मणियां-हीरे, धातुएँ, तिल, खनिज वस्तु रुई और चांदीमें तेजी हो। बैशाख शुदी तृतीया गुरुवारी रोहिणी नक्षत्रमें होनेके कारण सुभिक्ष कारक है। यथा—

वैशाखे तृतीया शुक्रा रोहिणी सौम्यवासरे ।
सुभिक्षमखिलं चैव तदा वाच्यं सुनिश्चितम् ।।

ता० ३ मईसे ५ मई तक आगे शुक्र पीछे सूर्य और मध्यमें बुध मंदेकी प्रतिक्रियाको करता है।

अग्रे चलति यदा शुक्रः पृष्ठे वै दिवाकरः ।
मध्ये सोमसुतो याति भवत्यत्र समर्घता ।।

ता० ६ मईको शुक्ल पक्ष बैशाख मासमें शुक्रोदय तेजी-कारक है। सावधान! ता० १३ मईको विशाखा नक्षत्रमें चन्द्रग्रहण हो रहा है जो जौ, चावल, गेहूँ, मूंगी, राई-मसरी-मोठ आदि धान्योंमें तेजीकी प्रतिक्रियाको करेगा। यथा—

विशाखायां यवाः शालि गोधूमा मुद्गराजिका ।
मसूरान्नमकुष्ठा च याम्यां पीडाष्ट मासिकी ।।

ता० १४ मईको मंगलवारी ज्येष्ठ संक्रान्ति लग रही है जो चार पदार्थों, तिल-तैल, रसों और गेहूं-गुड़, खांड, रुई तथा चनोंमें विशेष रूपसे तेजी कारक है। यथा—

भौमे यदा संक्रमते च भानु,
स्तदा महर्घं कुरुते पृथिव्याम् ।
क्षारं तिला स्तैल रसा च सर्वे
गोधूमेक्षु जे तुलादि चरणके तथा ।।

ता० २४ मईको रात्री रोहिणी नक्षत्रमें सूर्य आ जाता है जो ता० ७ जून तक रहता है ता० २६-३० मईको चन्द्रमा भी रोहिणी नक्षत्रमें रहता यह दुर्भिक्ष कारक है। यथा—

रोहिण्यां संस्थिते सूर्यो तत्र चन्द्रो विधिं गतः
दुर्भिक्षं जायते नूनं वसिष्ठेन प्रभाषितम् ।।

ता० ३० मईको गुरुवार मृगशिर नक्षत्रमें ज्येष्ठका चन्द्रोदय हो रहा है चन्द्रमा शनिकी दृष्टिसे आगे निकल जानेके कारण प्रबल तेजी कारक नहीं है।

ता० ४ जूनसे४ जुलाई प्रातः तक आगे सूर्य पीछे केतु तथा मध्यमें बुध वस्तु मात्र में तेजीकी प्रतिक्रियाको करता है। यथा—

अग्रे याति दिवानाथः पृष्ठे केतु स्तथैव च।
मध्ये सोमसुतो याति भवत्यत्र महर्घता॥

ता० १४ जूनको मिथुन संक्रान्ति शुक्रवारमें लग रही है जो वस्तु मात्रमें मंदीकी अगाहीकी सूचक है, क्योंकि पहिली संक्रान्तिसे चौथे वार में है, "दुर्भिक्ष सुभिक्ष करे बैठे चौथे वार" अतः यहां पर चलती तेजीमें मंदीकी प्रतिक्रिया स्वाभाविक है।

ता० २१ जूनको धनु लग्नमें सूर्यनारायण आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश कर रहे हैं, उस दिन चन्द्रमा मीन राशिमें है, लग्न पर बुध-बृहस्पतिकी तीन पाद दृष्टि और शुक्रकी पूर्ण दृष्टि होनेके कारण यहां पर समस्त भारतवर्षमें श्रेष्ठ वर्षा होगी, जिससे एक सामूहिक मंदीकी प्रतिक्रिया वस्तु मात्रमें होगी। यथा—

आर्द्रा प्रवेश काले तु कर्क धनुर्मीनं यदा लग्नम्।
शुभ ग्रहैर्यदा दृष्टं सुभिक्षं वै तदा भवेत्॥
आर्द्रा प्रवेशसमये तोय राशौ तु चन्द्रमा।
गुरुं दृक दुतो वाऽपि सुभिक्षं वै तदा भवेत्॥

ता० २६ जूनको पुष्य नक्षत्र शनिवारमें आषाढ मास का चन्द्रोदय हो रहा है। यह चन्द्र अग्नि मंडल नक्षत्रमें अग्नितत्वात्मिक भौमसे युक्त है, राशि जलतत्वात्मिक कर्क है किन्तु चन्द्रमाका अपनी राशिमें उदय होना दुर्भिक्ष कारक होता है, दूसरे अग्नितत्वात्मक नक्षत्रमें भौमसे युति मूल जलकी नाशक बन जाती है, जो दुर्भिक्षके लक्षण उत्पन्न करके सौना, घृत-चांदी, चावल-यव सरसों-सज्जी, तैल-हींग गेहूं तथा वन्यज वस्तुओंमें सामूहिक रूपसे तेजीके वातावरणको उत्पन्न करनेमें सहायक होगा। यथा—

पुष्ये घृतं हिरण्यं शालीक्षु यव सर्षपाः।
सर्जिका तैल हिंग्वादि गोधूमावन्यजातयः॥
चन्द्रोदय चन्द्र क्षेत्रे यदा चैव प्रजायते।
षण्मासे स्याच्च दुर्भिक्षं अनावृष्टि प्रजायते॥

—

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र

सूर्य-चन्द्र-ग्रहणोंका संसार पर प्रभाव

काश्मीर-समस्या उग्र, जारिंग मिशन असफल, माताजीकी भविष्यवाणी

सं० २०१४ वि० में वायुमण्डल वर्षा रोगोत्पातादि और व्यापार व्यवसाय

[श्री हरदेवशर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

पाठकोंको स्मरण होगा कि आजसे ९ वर्ष पूर्व स्वतन्त्र भारत पाकिस्तान और काश्मीरकी ग्रहस्थिति पर विचार करते हुए हमने लिखा था कि "भारतकी ओरसे भरसक प्रयत्न करने पर भी पाकिस्तानसे मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सकेंगे और काश्मीर समस्या लम्बी खिंच कर उग्र बनती जावेगी।" वही स्थिति प्रत्यक्ष होती जा रही है। गतवर्ष इन्हीं दिनों श्रीस्वाध्याय के 'वसन्ताङ्क' में पाकिस्तानी गणराज्य स्थापनाकी ग्रहस्थिति और आश्लेषा नक्षत्र पर विचार करते हुए लिखा था कि—"पाकिस्तान भारतसे विद्वेष बढ़ाकर विनाशकी ओर अग्रसर होगा।" ६ मास पूर्व गत विजयादशमीके नववर्षाङ्कके इसी स्तम्भमें गत २ दिसम्बर १९५६के सूर्यग्रहणका फल विवेचन करते हुए पृष्ठ १५ पर स्पष्ट लिखा था—

"इस ग्रहणके बाद ९ मासके अन्दर सुहरावर्दी मंत्रिमण्डल भी समाप्तप्राय होगा। रिपब्लिकन पार्टी और अवामी लीगमें भयानक मतभेद पैदा होगा। पूर्वी और पश्चिमी पाककी खाई गहरी बनेगी। पाकिस्तानी जनताके असन्तोषको मिटाने और अपनी कुर्सी कायम रखनेके लिए पाकाधिकारी भारतका प्रत्येक बातमें विरोध करके जिहादका नारा बुलन्द करेंगे। आजाद काश्मीर पर आक्रमण करके समूचे काश्मीरको हड़पनेका व्यर्थ प्रयत्न किया जावेगा। आगामी वैशाखसे आश्विन तकका समय काश्मीरके लिए चिन्ताकारक है।" इत्यादि।

पाकिस्तान और काश्मीरकी वर्तमान गतिविधि उक्त भविष्यवाणीकी सत्यताका प्रत्यक्ष प्रमाण है। अब आगामी वैशाख मासमें सूर्य चन्द्रमाके दो ग्रहण हो रहे हैं। यद्यपि यह सूर्यग्रहण भारतके दूर पूर्ववर्ती प्रदेश असम गोहाटी सिलचर मणिपुरमें मोक्ष होता हुआ केवल दो तीन मिनट ही दिखाई देगा, अन्यत्र भारतमें कहीं भी दृष्टि गोचर नहीं होगा। तथापि इस दिन भारतसे अन्यत्र पूर्वी राष्ट्रों (चीन, जापान, कोरिया, हिन्देशिया, हिन्दचीन, ब्रह्मदेश, थाईलैण्ड, भूतान, लाओसादि)में खण्डग्रास दिखाई देगा। इसके ठीक १५वें दिन वैशाख शुक्ल १५को ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्र-ग्रहण होगा। इस ग्रहणका विशेष विवरण स्पर्शादिकाल और राशिफल इसी अङ्कमें पहिले दे दिया है। यहां केवल ग्रहणफलकी चर्चा करेंगे।

नारदसंहितामें लिखा है कि यदि एक मासमें सूर्य चन्द्रमाके दो ग्रहण हों तो राष्ट्रनायकोंमें विरोध और धन तथा वृष्टिका नाश होवे। यथा—

एकस्मिन्नेव मासे तु चन्द्रार्कग्रहणं यदा।
विरोधं धरणीशानामर्थवृष्टिविनाशनम्॥

ग्रस्तास्त खग्रास ग्रहण किसी राष्ट्रनायक पर विपत्ति, दुर्भिक्ष, अग्नि वायु प्रकोपसे हानिकारक माना गया है—

ग्रस्तोदितावस्तमितौ नृपधान्यविनाशदौ।
सर्वग्रस्ताविनेन्दूभौ क्षुद्राय्वग्निभयप्रदौ॥
(ना० सं० २-१०)

इस ग्रहणका पर्व स्वामी इन्द्र है, इसका फल भी नारदसंहितामें भूपतियों (राष्ट्र संचालकों) में विरोध, प्रजामें दुःख और अन्नकी हानि लिखी है। यथा—

"विरोधो भूभुजां दुःखमैन्द्रे सस्यविनाशनम्।"

सारांश

वैशाख कृष्णामावास्याको मेषराशिमें चतुर्ग्रही (केतु सहित पंचग्रही) योग, ता० ६ मईको सूर्य-बुध भेद-युति और वै० शु० १५के खग्रास चन्द्रग्रहणके प्रभावसे विश्व-

शांतिको ग्रहण लगेगा। संसारकी बड़ी शक्तियाँ विनाशके पथ पर अग्रसर होंगी। चन्द्रग्रहण तुला और वृश्चिक राशिमें हो रहा है और मध्यकालीन मेष लग्नसे शनि अष्टम भावमें शत्रु (भौम) राशिस्थ है, चन्द्रमा भी नीचस्थ हो रहा है। लग्नेश भौमका शनिसे षडष्टक योग है। मंगल सेनानायक सत्त्व प्रधान ग्रह है। शनि दुःखशोकादि-कारक (क्षितिसुतो नेता सत्त्वं कुजः, दुःखं दिनेशात्मजः) है। अतः इस ग्रहणके बाद संसारमें विस्फोटक स्थिति बनेगी। सैनिकशक्तिका प्रदर्शन होगा, संदेहका वातावरण बनकर संधियाँ भंग होंगी, मध्यपूर्व और पश्चिमी एशियामें कहीं सशस्त्र क्रांति होगी। अभी अमरीका और बृटेनके उच्च राजनेताओं द्वारा जो बरमूडा-सम्मेलन सम्पन्न हुआ है उससे संसारके दो शक्तिशाली बड़े गुटोंमें पारस्परिक भय और सन्देहका वातावरण बढ़ेगा। मध्यपूर्वके क्षेत्र संकटापन्न स्थितिमें होंगे। यह बरमूडा-सम्मेलन विश्वशान्तिको ग्रहण-रूप सिद्ध होगा।

आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात अग्निप्रकोप वायु विकार आंधी तूफान भूकम्प, कहीं अनावृष्टि तो कहीं अति-वृष्टिसे हानि होगी। गरमी भयानक पड़ेगी, यान दुर्घटनाएं होंगी, अणु उद्जन बम विस्फोट परीक्षणसे वायुमण्डल दूषित होकर प्रकृतिमें प्रतिकूलता आवेगी। सांसर्गिक रोग-विषूचिकादिका कहीं प्रकोप होगा। पूर्वोत्तर भारतमें प्रकृति प्रकोपसे हानि होगी। कुछ अकल्पित उलट फेर और अद्भुत घटनाएं सुननेमें आवेंगी। राजनैतिक दलोंमें पार-स्परिक संघर्ष और गुटबन्दियोंमें शक्तिका दुरुपयोग होगा। इस्लामी जम्हूरियतके जन्मलग्नसे अष्टम और राशिसे चतुर्थ ग्रहण हो रहा है अतः पाकिस्तानके लिए आगेका समय भयानक अरिष्टप्रद सिद्ध होगा। पाकिस्तानकी स्थिति एक विवेकहीन विक्षिप्त प्राणी जैसी हो जावेगी। इस विक्षिप्त जन्तु-विशेषसे भारतको सदा सतर्क रहना चाहिए। आगामी आषाढ और पौष मास विश्व-शान्तिके लिए भयप्रद हैं। काश्मीर समस्याको शान्तिपूर्ण प्रयत्नोंसे न सुलझाकर आक्रमणके पागलपनका भूत पाकिस्तान पर सवार होगा। उस समय पूर्वी पाकिस्तानके मतभेद तीव्रतर होकर वह अधिकांश में विलग सा हो जावेगा। भारत मकर राशिके प्रभाव क्षेत्रमें है, यह चन्द्रग्रहण दशवीं ग्यारहवीं राशिमें हो रहा है जो भारतके लिए अन्तिम परिणाममें शुभकारक सिद्ध होगा। ग्रहण मध्यकालीन लग्न पर गुरुकी दृष्टि है और स्वतन्त्र भारतके जन्मलग्न वृषभमें शुक्र (ग्रहण समयमें) बलवान् है अतः भारतकी ओरसे विश्वशान्तिके पूर्णप्रयत्न होंगे, परन्तु उसमें सफलता आंशिक रूपमें ही मिलेगी, पूर्णरूपेण नहीं। सूर्य मंगलके कारण भारतकी सुरक्षा और संगठन शक्तिमें वृद्धि होगी। काश्मीर प्रश्न पर सब दल एकमत होकर राष्ट्रकी प्रतिष्ठामें संलग्न होंगे। पाकिस्तान कबायलियों को आधुनिक अमरीकी शस्त्रास्त्रोंसे सज्जित कर भारत पाक सीमा पर गड़बड़ करावेगा।

भारतका दूसरा महाचुनाव अभियान प्रायः पूर्ण हो चुका है और जैसा कि हमने अपने पंचाङ्ग और गतांक में स्पष्ट उल्लेख किया था कि 'मार्च १९५७ के चुनावमें कांग्रेस दलको ही कहीं स्वल्प तो कहीं विशेष बहुमतसे सफलता प्राप्त होगी।' तदनुसार अभी तककी प्राप्त सूचनानुसार भारतके कुल १४ राज्योंमें से ११ में कांग्रेसको पूर्ण बहुमत प्राप्त हो गया है। इन प्रान्तोंमें और केन्द्रमें कांग्रेस बहुमतसे पुनः पदासीन हो रही है। किन्तु अब यह चन्द्रग्रहण कांग्रेस जन्मलग्न और नवांश राशिसे अष्टम स्थानमें हो रहा है, अतः कांग्रेसजनोंमें पारस्परिक फूट भ्रष्टाचार और संकुचित स्वार्थकी भावना बढ़ेगी। कुछ प्रान्तीय कांग्रेस मंत्रिमंडलों और विधानसभायी सदस्योंमें गुट बन्दीका रोग बुरी तरह फैलेगा। प्रान्तीय कांग्रेसके महारथी एवं मंत्रीवर्ग दलीय दल-दलमें धंसते दिखाई देंगे। मंत्रिमंडलमें गतिरोध होगा। मध्य पूर्व, मध्यप्रदेश, सीरिया, इजरायल, अमेरिका, बृटेन, काश्मीर, पंजाब, राजस्थान और पाकिस्तान पर इस ग्रहणका बुरा प्रभाव पड़ेगा। पंजाब और राजस्थानके मंत्रिमंडलोंमें चिरस्थायित्व नहीं रहेगा। राज्यपालोंको मंत्रिमंडलोंके मतभेद मिटानेमें अधिक साहस एवं दक्षताका परिचय देना पड़ेगा।

चन्द्रग्रहणके बाद उड़द, मूंग, तिल, तैल, घृत, रुई, सूत, पीत धान्य, मक्की, चना गुड़, शक्कर, मधु, सोना, तांबा, लोहा और पीतलमें पर्याप्त तेजी आवेगी। इस ग्रहण का फल ६ मास तक न्यूनाधिक रूपमें होता रहेगा।

जारिंग मिशन असफल रहेगा

काश्मीर समस्याके समाधानार्थ संयुक्तराष्ट्र संघकी ओर से जारिंग मिशन पाकिस्तान और भारतका भ्रमण कर रहा है। श्री गुन्नार जारिंग २२ मार्च १९५७ को सायंकाल

मीन लग्नमें दिल्ली पहुँचे। उस समय द्विस्वभाव लग्न था और लग्नेश गुरु भी द्विस्वभाव (कन्या) राशि और नीच नवांशमें है, लग्नमें बुध नीचस्थ है, साथ ही शुक्र उच्चस्थ है, पर वह अस्त (निर्बल) है, अतः जारिंग महोदय काश्मीर समस्याके सम्बन्धमें कोई भी निश्चयात्मक न्याय-संगत निर्णय (रिपोर्ट) नहीं दे सकेंगे। भारतके औचित्य एवं न्याय-संगत मांगको समझते हुए भी बुध शुक्रकी निर्बलता और द्विस्वभाव लग्न उन्हें द्विविधामें फंसाकर वास्तविकतासे दूर ले जावेंगे। जारिंग मिशन भारतके लिए असफल सिद्ध होगा। नीतिप्रधान शुक्र उच्चराशिमें है अतः संभवतः श्री जारिंग यह सिफारिश करेंगे कि काश्मीर समस्या सम्बन्धी भारत-पाक विवादोंको अन्ताराष्ट्रिय उच्च-न्यायालयमें प्रस्तुत किये जावें। लग्नेश राज्येश गुरु नीचांशमें अवश्य है पर केन्द्रस्थ है, अतः पर्याप्त संघर्ष और कुछ हानिके बाद भी काश्मीर भारतका ही अंग रहेगा।

माताजीकी भविष्यवाणी

श्री अरविन्द-आश्रम पाण्डीचेरीकी माताजीने भविष्यवाणी की है कि 'सन् ५७ में पाकिस्तान भारतमें मिल जायेगा।' इस सम्बन्धमें कई पाठकोंने हमसे भी स्पष्ट जानकारी चाही है, अतः हम यहां स्पष्ट कर देते हैं कि माताजी की उक्त भविष्यवाणीसे हम सहमत नहीं हैं। वर्तमान सन् ५७ ई० में पश्चिमी पाकिस्तानका भारतमें विलय कथमपि सम्भव नहीं है। हां, काश्मीर प्रश्न पर भारत-पाक युद्ध छिड़नेकी दशामें पूर्वी पाक भारतके बहुत निकट आ सकता है। माताजीकी यह भविष्यवाणी २३-२-५७ के दैनिक 'नवभारत टाइम्स' (दिल्ली) में इस प्रकार प्रकाशित हुई है—

"पांडेचेरी स्थित श्री अरविन्द आश्रमकी पूज्य माताजीने इस वर्षके लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण भविष्यवाणी की है। उन्होंने कहा है कि १९५७ भारतके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक वर्ष रहेगा। इस वर्षके भीतर ही पाकिस्तानका भारतमें विलय हो जायेगा। इसके अतिरिक्त उनका कहना है कि भारतके ऊपर रूस और अमरीकाके युद्ध की गम्भीर सम्भावना है, परन्तु भारतका भविष्य उज्ज्वल रहेगा।"

सं० २०१४ में वर्षा, वायु, रोगोत्पातादि

इस वर्ष रोग दुःख शोकादिका अधिनायक शनि प्रधान मंत्री है, यह वर्षारम्भमें वक्री होकर भौमसे दृष्ट है, अतः संसारका वायुमण्डल दूषित रहेगा। रोग भय बढ़ेगा, वायुविकार, हृदय रोग, पक्षाघात यक्ष्मा नेत्ररोग मलेरिया मधुमेह श्वास कास चेचक और सांसर्गिक रोग बढ़ेंगे। वृश्चिकके शनिका फल यह है—

"अलिस्थिते रोगभयं जनानां भवेत्पशूनां मृतिरर्कपुत्रे"

आगे वर्षान्त में ता० ८ फरवरी १९५८ को शनि धनुः राशिमें प्रवेश करेगा। यह वृष्टिनाश, शासकोंमें कलह और काश्मीर बंगालादि प्रान्तोंके लिए पीड़ा, युद्ध भय और रोग वृद्धि कारक लिखा है। यथा—

मन्दे स्थिते धन्विनि वृष्टि नाशः
स्याद्-भूपतीनां कलहो नचार्धम्।
पंचाल काशी कुरु कौशलाश्च
नष्टाश्च काश्मीर कलिङ्ग वङ्गाः॥
धनुः राशिस्थितो मन्दो भूपानामहवप्रदः।
जनानां व्याधिपीड़ा च क्षुत्पीड़ा शस्त्रताड़नम्॥

चैत्रसे आषाढ़ तक पश्चिमोत्तरीय भारतमें आंधी बवण्डर और गर्म लूका प्रकोप बढ़ेगा। पूर्व दक्षिणमें नदियोंकी बाढ़से हानि होगी, कुछ प्रदेशमें वायुवेगसे वृक्ष धराशायी होंगे, टीनकी छतें उड़ेंगी और कहीं अतिवृष्टिसे जनधनका संहार होगा। दक्षिण भारत विन्ध्य प्रदेश और बंगालमें रोगोपद्रव अधिक होगा। संसारमें अनियमित असामयिक खण्ड वृष्टि होगी। आषाढ़ शु० ५ तक वर्षा की सर्वत्र खेंच रहेगी, तदनन्तर वर्षा होकर श्रावणमें फिर वर्षाकी खेंच कई जगह होगी। राजस्थान मध्यप्रदेशमें वर्षा कुछ विलम्बसे होगी। चैत्र वैशाखमें पूर्वी भारतमें बादल वर्षा होगी। भाद्रपद कृष्ण ४ ता. १४ अगस्तसे भाद्रपद शु० १४ ता. ८ सितम्बर तक कन्या राशिमें गुरु शुक्रका योग मंगल राहुकी कर्त्तरीमें बन रहा है, यह भयानक उत्पातका द्योतक है। इस अवधिमें सर्वत्र वर्षा उत्तम होगी। कहीं-कहीं पूर्वोत्तर प्रदेशकी नदियोंमें भयानक बाढ़से जल-प्रलयका दृश्य उपस्थित होगा। गंगा यमुना और सिन्धु नदीमें यत्र-तत्र बाढ़ें आवें, अथवा कहीं रोग युद्धादि द्वारा जन-धनका ह्रास होगा। यथा—

गुरुशुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः॥

वैशाख शुक्ल १० को राक्षसगण नक्षत्र (कृत्तिका) में

उदय हो रहा है यह संसारमें विग्रह, युद्ध भय उत्पातादि को बढ़ाने वाला और किसी श्रेष्ठ महापुरुषकी मृत्युकारक लिखा है। यथा—'माधवे च रणो महान्'।

नक्षत्रे राक्षसगणे शुक्रस्याभ्युदये सति ।
गुर्जरे मुद्गलभयं दुर्भिक्षं द्रव्यहीनतां ॥
पञ्चवर्णं पट्टसूत्रं मूल्येनापि च दुर्लभम् ।
श्रीफलं दुर्लभं मृत्युः श्रेष्ठः पुंसश्च कस्यचित् ॥
उत्पातादिषु देशेषु सिन्धुदेशेऽतिविग्रहः ।
दिनत्रयमयाणिज्यं विग्रहो मालवादिके ॥

यान दुर्घटनायें अधिक होंगी। राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेशमें दस्यूपद्रव बढ़ेगा । आषाढ़ शुक्लमें मंगल हर्शलकी युतिसे भारत पाकिस्तानकी सीमा पर झड़पें होना सम्भव है। इस वर्ष प्रकृति-प्रकोप और अनेक उत्पातक योगोंके साथ केवल आर्द्राप्रवेश कुण्डलीमें लग्नेश गुरु और चन्द्रमाकी स्थिति बलवान् होनेसे अशान्ति और अन्धकारमें भी सुख शान्ति और आशाकी किरण दिखाई दे रही है। सूर्यके आर्द्राप्रवेश समय यदि चन्द्रमा जलचर राशिमें त्रिकोणस्थ होकर शुभ ग्रहसे दृष्ट हो तो संसारमें उपज (पदावार) उत्तम होनेसे सुभिक्ष सुख शांति रहती है।

आर्द्रा प्रवेशे यदि भास्करस्य
चन्द्रस्त्रिकोणे यदि केन्द्रगो वा ।
जलाश्रये सौम्य निरीक्षिते च
सम्पूर्ण सस्या वसुधा तदा स्यात् ॥

आर्द्राप्रवेश लग्नमें चन्द्रमा चतुर्थ भावमें मीन राशिका लग्नेश सुखेश दशमस्थ गुरुसे दृष्ट है, अतः फल और अन्नादि पदार्थोंकी उपज उत्तम होगी । भारत खाद्य सामग्री और अन्य उपयोगी वस्तुओंके लिए आत्म निर्भर होगा । गुरु ग्रहके प्रभावसे भारत विश्व-शांतिके लिए अपने किए गये प्रयत्नोंमें यशस्वी होगा।

व्यापार व्यवसाय

शनि इस वर्ष फाल्गुन कृष्ण ४ तक अनुराधा ज्येष्ठा नक्षत्र पर रहेगा, तदनन्तर मूलमें प्रवेश करेगा। वर्षका मंत्री भी शनि है, जगत् लग्नमें अन्ताराष्ट्रिय व्यापारेश बन कर चतुर्थ भावमें भौमसे दृष्ट है, राहु नेपच्यूनसे द्विर्द्वादश और व्यापारेश बुधसे षडष्टक योग कर रहा है। अतः इस वर्ष अन्ताराष्ट्रिय परिस्थिति वशात् व्यापार व्यवसायमें अनिश्चितता एवं घबराहट-सी रहेगी। आर्थिक संकट चारों ओर दिखाई देगा। नवीन करोंके बोझसे सर्वसाधारण व्यापारी वर्गमें असन्तोष बढ़ेगा। ता० २४ मार्चसे १२ अगस्त ५७ तक शनि वृश्चिक राशिमें वक्री रहेगा। तब तक तिलहन मात्रमें तेजीका रुख रहेगा। विशेष तेजी वृष मिथुनके मंगल में ता० १० जून (ज्ये० शु० १३) तक रहेगी । सरकारी निर्यात नीतिसे भी तेजी आवेगी। ज्येष्ठ शु० १३ से तिलहन में मंदीका वातावरण प्रारम्भ होगा। परन्तु सं० २०१४ में किसी भी वस्तुमें भारी मोटी मन्दीका योग दिखाई नहीं देता। मंदीके झटके आवेंगे, वे अस्थाई होंगे । पौष मास दिसम्बर १९५७ में पुनः घृत और तिलहन तैलोंमें पर्याप्त तेजी आवेगी। खनिज पदार्थ वस्त्र, तैल और लौहादि धातुओंका कच्चा माल अधिक मात्रामें भारतसे निर्यात होगा। यान्त्रिक सामग्री मशीनरी और औषधियोंका विदेशोंसे विशेष आयात होगा । गुरुग्रह-गतिवशात् इस वर्ष चांदी सोनामें पर्याप्त मंदीके योग बने हैं। वर्षारम्भमें ही मन्दी आवेगी, १७ मार्चसे ८ मई तक मन्दीके योग बने हैं। २४ अप्रैलसे बाजारकी लाइन बदलेगी, रुख तेजीका होगा । ता० १३ सितम्बरसे १६ अक्तूबर तक चांदी सोनेमें अच्छी तेजी चलेगी १०) १५) तक बढ़ेंगे, तदनन्तर १६ अक्टूबरसे १६ नवम्बर तक पर्याप्त मन्दीका झटका आवेगा । पौष जनवरी १९५८ से आगे चांदी सोनेमें अकल्पित उलट फेर होगा। इस वर्ष तुलाका राहु शनिसे द्विर्द्वादश योग करेगा। अतः रुईके व्यापारमें अकल्पित उलट-फेर होनेसे कुछ वायदा व्यवसाय पर सरकारी नियंत्रण लगेगा । १० अप्रैलसे १५ जुलाई पर्यन्त रुईमें ५०) ६०) की घटा-बढ़ी से रुख मन्दीका रहेगा। ता० २६ जूनसे पहले वायदा जरीला रुई बेचना लाभदायक है, १६ जुलाईसे २२ अगस्त तक और ता० ७ सितम्बरसे ३ अक्तूबर तक रुईमें तेजी चलेगी। १७ अक्तूबरसे १५ दिसम्बर तक रुईमें मंदीका रुख रहेगा। शेयर बाजार अस्थिरप्राय-सा चलेगा। पूर्वार्द्ध में (अक्तूबर १९५७) तक प्रत्येक शेयरोंमें न्यूनाधिक रूपमें रुख मंदीका रहेगा और आगे तेजी चालू होगी । अन्य धान्यका भाव सामान्य स्थितिमें रहेगा । वर्षारम्भमें जून तक अन्नका भाव कुछ सस्ता रहेगा, अगस्त सितम्बरमें और जनवरीके बाद अन्न-पदार्थ विशेषकर चना मसूरमें अधिक तेजीके योग बन रहे हैं। अगस्त माससे लालमिर्च में भी तेजी चलेगी। संक्षेपमें कहा जा सकता है कि इस वर्ष घृत, तैल, गेहूं, चावल, उड़द, मूंग, गुड़, रसपदार्थोंका

काश्मीर-समस्या ज्योतिर्विज्ञानकी कसौटी पर

[श्री प्रो० बंगलोर वैंकट रमन]

[काश्मीर-समस्याके सम्बन्धमें दक्षिण भारतके सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य श्री रमन महोदयके विचार हमारे विचारोंसे मिलते हुए हैं। अभी-अभी अप्रैल मासके 'एस्ट्रालाजीकल मेगजीन' अंग्रेजी मासिक पत्रमें उन्होंने 'काश्मीर' शीर्षक जो सम्पादकीय भविष्यवाणी प्रकाशित की है उसका संक्षिप्त हिन्दी अनुवाद हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक]

राष्ट्र-कर्म और श्री नेहरूकी पाकिस्तानके प्रति परितोषकी नीति एवं शक्तिशाली तटस्थताकी अव्यवहारिक नीतिका अनुसरण (सन्देहका लाभ सदा कम्युनिष्ट ब्लाकको मिलता रहा यह श्री नेहरूकी कुण्डलीसे भी स्पष्ट है, चन्द्र लग्नाधिपति है, और मंगल कन्यामें नजरबन्द है) हमारी आजकी आपदाओंका कारण है। काश्मीरकी जनता अपना निर्णय दे चुकी है, और काश्मीरका भारतमें सम्मिलित होना पूर्णतः वैध, कानूनी और पूर्ण है। इस पर भी सुरक्षा परिषद् जनमत संग्रह द्वारा इस विषयमें काश्मीरी जनताका मत जानना आवश्यक मानती है। सुरक्षा परिषद्के सदस्य इस प्रश्नका निर्णय गुणावगुणके आधार पर नहीं अपितु शक्ति-सन्तुलनको दृष्टिमें रखकर करते हैं यह कहनेकी आवश्यकता नहीं।

२५ जनवरीकी आधी रातको अर्थात् २६-१-१९५७ को काश्मीरका संविधान लागू हुआ। लग्न कन्या है, यह भारतकी शासक राशि है। इसके साथ बृहस्पतिका योग है। किन्तु लग्नाधिपति बुध न केवल धनु राशिमें है अपितु पापकर्तरी योगके भी अधीन है। [कर्तरीयोग तब होता है जब आगे राहु केतु या कोई पापग्रह वक्री हो और पीछे मार्गी पापग्रह हो, यहां २६ जनवरीको मकर राशिमें आगे सूर्य है और पीछे वृश्चिकमें शनि राहु है अतः यह कर्तरी-योग नहीं अपितु पापांतर्गतयोग होगा। —सम्पादक] निःसन्देह दूसरे और नवें घरके स्वामी शुक्रका योग शुभ है। किन्तु बुध-नवांश-तुलामें है यह योग इस बातका सूचक है कि काश्मीरके नेता सच्चे हैं और भारतके प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हैं, किन्तु 'नेशनल कांफ्रेंस' का एक वर्ग इस बातसे पूर्णतः सन्तुष्ट नहीं है कि काश्मीरका भारतमें पूर्णतः विलय हो गया है। ये लोग ढिल-मुल हैं। जैसी ग्रहस्थिति है उससे सूचित है कि प्रधानमंत्रीके सहयोगी ऐसी कुछ बातोंको स्वीकार कर लेंगे जोकि आजकलके भारत-काश्मीर सम्बन्धमें कुछ परिवर्तन को सूचित करेगा। ख-मध्य रेखाके शीर्ष बिन्दु पर मंगल और राहुकी दृष्टि प्रबल है, सरकार पर विपद् आएगी, यह इसका सुचक है। १०वें घरमें इस प्रकारका कष्टकारक योगका होना "बड़ी मात्रामें मृत्यु, शत्रुता, शक्ति और सत्ता व महान् व्यक्तियोंके खोनेका भय, सरकारकी प्रतिष्ठा या लोकप्रियतामें कमी आनेकी सम्भावना" का सूचक है। इसका यह भी अर्थ है कि पाकिस्तान अपना लक्ष्य बल द्वारा पूरा करना चाहता है।

पाकिस्तानकी शनिदशा कुजभुक्ति १९५८ के आरम्भ तक चलेगी। लग्नाधिपति मंगल दूसरे घरमें 'मांदी' के साथ है। शनि ४थे में है। चन्द्र लग्न योग-कारक १२वें में है। 'मारक' भी चन्द्र लग्नमें है। मुख्य और उपस्वामी दोनों द्विर्द्वादशमें हैं। एक और प्रभावकारी

भाव प्राय तेज रहेगा। ऊनी वस्त्र, कम्बल, रेशम धातु-मात्र लोहा, तांबा, जस्ता, सोना, चांदीमें पूर्वार्धमें प्रायः मन्दा रहेगी। यह सब विचार सामान्य गणना राशि नक्षत्र चारसे लिखा गया है। सूक्ष्म निर्णय समय पर पूरा पारि-श्रमिक (फीस) भेज कर हमारे कार्यालयसे प्राप्त करें।

गतांकमें सन् ५७ और भारतीय गणराज्यके आठवें वर्षका भविष्य विवेचन किया गया था। भारतके प्रत्येक प्रांत और अन्ताराष्ट्रिय जगत् (रूस, अमेरिका, इंगलैण्ड आदि) का भविष्य विवेचन स्थानाभावसे यहां नहीं दिया जा सका। सं० २०१४ के हमारे 'श्रीविश्वविजयपंचाग' में यह सब दिया है, वहां देखें।

...। मंगल राहुके साथ है। ज्योतिष शास्त्रके अनुसार ...का परिणाम यह हो सकता है :—

"तद् भुक्तौ ज्ञातिवृद्धिश्च सहोदर मृतिर्भवेत्।
दायादि व्यवहारं च देहकष्टं मतिभ्रमम्॥
स्वमित्रजनवैरत्वं कारागृहप्रवेशनम्।
अकस्मात् कलहं चैव स्वजनानां विनाशनम्॥
देशान्तरादि गमनं मनश्चांचल्यमेव च।
संग्रामे रिपुवृद्धिदा नरपतिक्रोधप्रदा हानिदा॥"

अर्थात् शत्रुओंमें वृद्धि, बन्धुओंकी मृत्यु, सम्बन्धियों से विवाद, शरीरमें उद्विग्नता, मन-चांचल्य, अपने मित्रोंसे ही शत्रु भाव, कारागार, शासकोंसे भय, मित्रोंका विनाश, अप्रत्याशित कलह, कुयश, शस्त्र भय आदि। राष्ट्रके प्रति इस ग्रहयोगको लागू करनेसे ज्ञात होगा कि पाकिस्तान पर महान् संकट आने वाला है और इसमें इसका अस्तित्व तक संशयमें पड़ जायगा। आन्तरिक संकट उत्पन्न होगा, एक महान व्यक्तिकी मृत्यु होगी और पड़ौसीसे युद्ध होगा। भारतके प्रति उसका वैरभाव उसको विपत्तिमें डाल देगा। दूसरे पाकिस्तानमें राज्य-क्रान्ति होगी। विश्व-महायुद्ध छिड़नेके यद्यपि कोई चिह्न नहीं हैं, किन्तु अगले सूर्यग्रहणके समय लगभग काश्मीर पर पाकिस्तान द्वारा आक्रमण होना सम्भव है। भारत सरकारको सतर्क रहना चाहिए। जारिंग मिशन भी विफल होगा। पर वह भारतकी इस बातके महत्वको अनुभव करेगा कि जनमत संग्रह करनेका एकमात्र परिणाम झगड़ा और रक्तपात होगा। 'पंचशील' के प्रचारके बाद भी भारत विश्वमें मित्रहीन है, यह इस बातका सूचक है कि भारतकी परराष्ट्र नीतिमें मूलतः वही दोष है। और तो और अफ्रीकी-एशियाई राष्ट्रोंमें से भी कुछने काश्मीरके विषयमें भारतके पक्षमें एक शब्द भी नहीं कहा है।

श्री नेहरू राहु दशा गुरु-भुक्तिमें हैं। इसका फल मिश्रित है। श्री नेहरू शान्ति-निर्माणका कार्य आगे भी करते रहेंगे। किन्तु इसके कारण उनको असुविधाजनक स्थितिका भी सामना करना पड़ेगा। बृहस्पति केतुके बन्धन में है और उस पर योगकारक मंगलकी दृष्टि है। फलतः वे आदर्शों और सिद्धान्तोंका अनुसरण करेंगे, और व्यावहारिक मार्ग न अपनायेंगे। गुरु चाण्डाल योगका होना यही सूचित करता है। प्रधानमंत्रीको यह जान लेना चाहिए कि कम्युनिष्ट-राष्ट्र-मुखी हमारी तटस्थता नीति भारतके लिए अन्य अनेक संकटोंका कारण होगी।

पश्चिमी राष्ट्रोंका भारतको 'शिक्षा देने' का प्रयत्न निश्चयसे विफल होगा। किन्तु ग्रह-स्थितिकी प्रतिकूलताका ध्यान रखते हुए हमें अपनी प्रतिरक्षा योजना दृढ़ करनी चाहिए। मंगलके भावसे पाकिस्तान भारत पर अवश्य आक्रमण करेगा। किन्तु उसकी यह सैनिक कार्यवाही उसके नाशका कारण होगी। भारतको ऐसे राष्ट्रोंके साथ मैत्री बढ़ानी चाहिए, जो परीक्षाकी घड़ीमें साथ दें।

तीन मासका व्यापार भविष्य

[लेखकः—प्रोफ़ेसर श्री बी० सी० महता, एम. आर. ए. एस.]

नूतन वर्ष विक्रम संवत २०१४ के प्रारम्भमें ही हमारा यह 'श्रीस्वाध्याय' का वसन्तांक पाठकोंके कर कमलोंमें पहुंच जायेगा। नूतन वर्ष ता० १ अप्रैल १९५७ में चन्द्रवारको लगा है। इस समय गुरु कन्या राशिमें वक्र तथा शनि वृश्चिक राशिमें वक्र चलेगा। गुरुके सामने उच्च राशिका शुक्र व सूर्य तथा शनिके समक्ष कुंभ राशि में मंगल स्थित है, राहु और केतुने गत मासको ता० ७ को अपनी राशियें बदली है और अब राहुने शनिको छोड़ दिया है। तथा केतु भी मेष राशिमें प्रवेश कर चुके हैं।

शनि, गुरु, हर्शल और नेपच्चून ये चार ग्रह वर्षके प्रारम्भमें वक्री रहेंगे तथा हर्शेष ग्रह ता० १० को मार्गी होगा, जबकि ता० २५ को बुध ग्रह वक्री हो जायेगा। इस प्रकार फिर चार ग्रह बक्री अवस्थामें महीनेके अन्त तक चलते रहेंगे।

तारीख १ अप्रैल से १८ अप्रैल तक गुरु अपनी नीच राशि मकरके नवांशमें चलेगा और ता० १९ को कन्या राशि छोड़कर, सिंह राशि में प्रवेश कर जायेगा। यहां यह गुरु १० जून तक रह कर फिर कन्या राशिमें पुनः प्रवेश करेगा। इस प्रकार इस पीरियडमें काफी योगायोग बन रहे हैं। इसलिए पाठक मित्रोंको बहुत सावधानीसे अपना व्यापार करना चाहिए, क्योंकि इन योगों का असर आकस्मिक तथा असाधारण प्रत्येक बाजार पर पड़ेगा। तेजी चलते-चलते मन्दी, तथा मन्दी चलते चलते अचानक तेजीका ट्रेण्ड चलने लग जावेगा, इसलिए व्यापारमें प्रत्येक पाठक मित्रको चौकन्ना रहना आवश्यक है।

मासका प्रारम्भ प्रत्येक बाजारमें थोड़ी तेजीका वातावरण पैदा करेगा, किन्तु ता० ८ को यह तेजी अचानक रुक जावेगी। और एक मन्दीका झटका प्रत्येक बाजार में आ सकता है, क्योंकि यहां शनि और मंगल ग्रहका अपोजीशन योग बन रहा है। इसलिए प्रत्येक बाजार में खास तौरसे रुई कपास, तेलवाना, गुड़, गुवार, मटरा शेयर, आदिमें मन्दीका झटका आ सकता है। यह मन्दीका वातावरण उत्तम मध्यम ता० १८ तक रह सकता है, इसलिए ता० १७ तक मन्दीके व्यापारको बराबर कर लेना चाहिए। ता० १८ से फिर बाजारमें तेजीका वातावरण पैदा हो सकता है, जो घटाबढ़ी व मन्दीके रिएक्शनके साथ उत्तम मध्यम महीनेके अन्त तक चलेगा। कुछ बाजारोंमें बीच-बीचमें मन्दीके झटके भी विशेष आयेंगे, परन्तु जनरल ट्रेण्ड तेजीका रहेगा, विशेष विगतके लिए 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके लिए हमने विशेष रियायती मूल्य केवल ५) में पूरे महीनेका "व्यापार भविष्य" नामक स्पेशल दैनिक रिपोर्ट मय स्पेशियल चांसके तैयार करवाई है, सो मंगा सकते हैं।

मई मासका प्रारम्भ मंगल ग्रहका प्लूटो ग्रह से सेक्सटाइल योगसे होता है, यह बाजारको ऊंचा उठानेमें विशेष प्रभावशाली है, किन्तु अब यहां बाजारोंका फोर्स अन्तिम समझना चाहिए, क्योंकि ता० ५ मईको गुरु सिंह राशिमें प्रविष्ट होता है तथा शुक्र भी वृष राशिमें आ जाता है, इस प्रकार शनि गुरु और शुक्र तीनों ग्रह एक दूसरेके स्क्वायर योगमें आ जाते हैं। इस प्रकार इन योगोंसे गुड़, गुवार, मटरा, तेलवाना, रुई आदि बाजारोंमें मन्दीका झोंका आ सकता है। चांदी सोना बाजार भी थोड़ा नर्म हो जावेगा। शेयर बाजारमें तेजीका ही फोर्स रहेगा।

इस मासमें मंगल तथा राहु ग्रह तेजीमें, अन्य ग्रह मन्दीमें हैं; इसलिए इन ग्रहोंसे इस महीनेमें तेजीके उछाले तो आते ही रहेंगे परन्तु उछालेमें बेचकर लेने वाला व्यापारी ही लाभमें रहेगा।

तारीख १ से ५ मई तेजी, ५ से १२ मन्दी, १२ से १८ तेजीका उछाला, बाद इसके पूरे महीने मन्दीका ट्रेण्ड रहेगा, सो ध्यान रहे।

जून महीनेमें शुक्र मंगल मिथुन राशिमें इकट्ठे हुए हैं यह गुड़ गुवार मटरा आदि उत्तरी भारतके व्यापार वस्तुओंमें तेजी बताता है। तारीख १० जूनको फिरसे गुरु कन्यामें प्रवेश करता है और उसका प्रभाव सब बाजारों में मन्दीका होना चाहिए। यद्यपि गत अक्तूबरमें जब यह

अनुभव सिद्ध व्यापारिक निर्णय

[लेखकः—ज्योतिषरत्न श्री पं० राजाराम जैन, सम्पादक—भविष्यदर्पण]

चत्र शुक्ला १०।११ यहां एकादशींका क्षय है जबकि चैत्र कृष्णा १२ की बृद्धि हो चुकी है, यथाफल—

कृष्णपक्षकी तिथि बढ़ै, शुक्लपक्ष घटि जाय।
एक वस्तु तो क्या घटै, सर्ववस्तु घटि जाय॥

अर्थात् खाद्य वस्तुमात्र अन्न दाल् गुड़ तेलके बीज एकदम विशेष तेज होंगे। आज ही पौन बजे हर्शल ग्रह मार्गी होगा, जो कि वस्तुमात्रमें असाधारणतम तेजी-मन्दी लानेकी अपूर्व क्षमता रखता है, अस्तु। आप जिस वस्तुके भी व्यापारी हों १० अप्रैलके लिये ६ अप्रैलको ही १ दिन पूर्व दोतर्फा नजराना लगाकर मनमाना लाभ ले सकेंगे। चैत्र शुक्लाकी तिथि क्षय कभी-कभी श्रेष्ठ मन्दी भी लाती है। शान्त रहने वाला चांदी सोना भी एकदम विशेष लायन बनावेगा। मेवे रवि १३ अप्रैलको होंगे जो कि अशुभ अवश्य हैं किन्तु चैत्री पूर्णिमा चित्रा नक्षत्र सहित आगे घोर सुभिक्षता एवं ठोस मन्दी लाने वाला योग है, मेरे स्पष्ट विचारसे १३ अप्रैल तक हर खाद्य वस्तु को तेजीके उछालेमें बेच लेने वाला ही बुद्धिमान् समझा जावेगा। वैशाख माससें पाँच सोमवार हैं जोकि प्रत्येक व्यापारिक वस्तु को प्रलयङ्कारी स्थिति प्रदान करेंगे। १८ अप्रैलको सायंकाल ४ बजे देवाचार्य गुरु कन्याराशि त्याग करके सिंह राशिमें पुनः आकर १६ जून तक बने रहेंगे। यहां आते ही ठीक इसी दिन आकाश लोकके नेता होनेके कारण वायु वेग वर्षा आदिसे निश्चयात्मक रूपसे कृषि प्रधान क्षेत्रों द्वारा स्वागत किया जावेगा। दृग्गणितके पंचांगकी सत्यता इसी भांति माननी पड़ेगी, हठधर्मी लोगों को इस सत्यताके लिये चेतावनी है, कारण जब मध्यलोकके नेता लोगोंका स्वागत सफाई छिड़काव आदि आरम्भिक कार्य होता है तो उर्ध्व लोकके नेताओंका स्थान सर्वोच्च है ही—चार्ज लेते ही २२ अक्टूबर सन् ४३ की भांति शनि भौमकी दृष्ट्यन्तर्गत होनेसे ठोस मन्दी आई थी, यहां भी वैसा ही योग पुनः बना है जबकि यहां तो केन्द्रयोग भी बना है। फलस्वरूप और भी अधिक मन्दी आनेकी आशा वस्तुमात्रके लिये रखनी चाहिये। व्यापारियोंको इस वर्षका वैशाखमास वर्षभर याद रहेगा। १८ अप्रैलसे १ मास पूर्व से ही मेष कन्या तुला कुम्भ मिथुन राशि वालोंको नाना प्रकारसे हानि व कष्ट तथा वृष, वृश्चिक, सिंह, मकर, मीन राशि वालोंको लाभ ही होता जावेगा। कर्क, धनुः राशि वालोंको साधारण व हानिकारा-सा समय व्यतीत होगा। २४-४-४७ को भौम मिथुन राशिमें चला जावेगा। लाल वस्तु, दाल, अन्न, गुड़, तांबा मन्दे, अलसी, तेलके बीजमें भी नर्माई आवेगी। रुई तेज, चांदी सोना पहलेसे मन्दे होने पर भी यहां और भी मन्दे होते जावेंगे। कहीं-कहीं भयंकर वायुवेग व वर्षाका उत्पात अणुबमके परीक्षणके कारण हो जावे तो कोई बड़ी बात न होगी। २२ अप्रैलसे ही व्यापारिक स्थितिमें विशेष परिवर्तन होने लगेगा। २७-२८ अप्रैल तक वर्षाका उत्पात होनेकी आशंका है, तेजीके उछालेमें वस्तुमात्र बेचना ही उचित होगा। बैशाख कृष्णा १३ को शनिवार, शुक्ला १३ को रविवार योग खांड, गुड़, शक्कर, लाल मिर्च, लाल रंग, चन्दन, पान, पीपलको हर मन्दीके धमाकेमें खरीदनेकी राय देता है, आगे जाकर महान् लाभ होगा। वैशाखी अमावस भी सोमवारी मन्दी का ढोल बजवा देगी। अक्षय तृतीया गुरुवारी रोहिणी नक्षत्र सहित होनेसे सोमवतीकी बड़ी बहिन जानकर तेजड़ियोंको तीर्थयात्रा करना उचित होगा। जबकि वैशाख शुक्ला ५ आर्द्रानक्षत्र युक्ता भी भली-भांतिसे समर्थक होगी। ७ मई को बुधे सितः (भौम शुक्र योग) घोर तेजीकारक तथा मीन और मेषकी संक्रान्तिके बीचमें अष्टमी भौमवारी होनेसे वस्तुमात्रको ही लाओ-जाओके भयंकर बादल गड़-गड़ाहट मचा देंगे। यहांसे तेजीकी लायन पड़ेगी। ६ मई

ग्रह कन्यामें प्रवेश हुआ था उस समय से प्रत्येक बाजारमें अच्छी तेजी आई थी किन्तु अब कि जब यह फिरसे सीधा होकर अपनी सही राशि कन्यामें प्रवेश हो रहा है, यह अच्छी मन्दीका द्योतक हैं; तथा घटा-बढ़ी व तेजी के रिएक्शन के साथ बाजार घटेगा।

—

को दिल्लीमें शुक्रोदय पश्चिमे (मनुष्यगण) धूलिद्वारमें होनेसे वायुवेग वस्तुमात्रमें ही ठोस तेजीका वातावरण बनेगा। रुई, चांदी, सोना विशेष तेज होंगे। ११ मई को–सूर्य केतु की युति बाजारमें कोई परिवर्तन लायें तो कोई आश्चर्य न होगा। जबकि १४ मईको सूर्योदयसे पूर्व सोमवार विशाखा नक्षत्रमें (चूड़ामणि योगमें) ग्रहण पड़ेगा। इसके कारण व्यापारकी कायापलट हो सकेगो। यदि ग्रहण कालमें बादल वर्षा हुई कि ग्रहण दिखाई ही न पड़ा तो मन्दीका श्रीगणेश पुनः बैठेगा। अन्यथा घोर तेजी धड़ाधड़ होती ही चली जावेगी। १४ मईको मंगलवारमें वृष संक्रान्ति सूर्य शनि प्रतियोग तेजी विशेषकर तेलके बीजोंमें चमत्कारिक रूपसे दिखावेगा। १६ मईको मार्गी गुरुः चांदी सोना रुई विशेष तेज करेगा। जबकि खाद्य वस्तुमात्र तेलके बीजों में तेजीका तूफान आवेगा। २४ मईको सूर्य शुक्रयोग रुई मन्दी चांदी तेज होगी। ५ जूनको बुधाष्टमी अस्थायी मन्दी का अपूर्व चमत्कार दिखावेगी। १० जूनको कर्के भौमः अनेक वस्तुओंको गिरानेमें सहायक होगा। १६ जूनको कन्याका गुरु होते ही घोर वर्षा व वस्तुमात्रमें मन्दीका जोर बढ़ेगा, किन्तु २५ जूनको कर्क राशिमें भौम शुक्रयोग वस्तुमात्रमें तेजीका जोश भर देगा। आषाढ़ कृष्णा १३ को रोहिणी जो कि सम्वत् २००८।२०१०।२०१३ में भी बना था, फलस्वरूप वायुवेग और वस्तुमात्रमें घोर तेजी होगी। यह लायन प्रायः आषाढ़ शुक्ला १० पर्यन्त चलती रहेगी। लाभ हानिका पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता पर ही रहेगा।

त्रैमासिक अनुभूत रिपोर्ट

[लेखकः—ज्योतिभूषण श्री पं० गिरिधारीलाल शर्मा]

(१) प्रथम सप्ताह—

चैत्र शुक्ला १ मंगलवार ता० ६ से १४ अप्रैल तक बाजारमें साधारण तेजी होगी। ता० ६-१० और १३ तेजी। ता० ११-१२ को दोनों तरफ रहेगा।

(२) दूसरा सप्ताह—

ता० १५ से २१ अप्रैल तक साधारणतया मंदी, ता० १५-१६ में एक तेजी होगी, वहां बेचो। ता० १७, १८, १६ में दो दिन अवश्य मंदी होगी। ता० २० को तेजी होके मंदी होगी।

(३) तीसरा सप्ताह—

ता० २२ से २६ अप्रैल तक पहले घट-बढ़ होके वही भाव आ जायेंगे। ता० २२ से २४-२६ तक बढ़े भाव बेचो, जनरल ध्यान मन्दा। ता० २६ से २६ तक घटे भाव खरीदो, तेजी रहेगी।

(४) चौथा सप्ताह—

ता० ३० अप्रैल से ६ मई तक तेजी मंदी जैसी होगी, वैसी ही रहेगी। वैसे एक दिन तेजी, १ दिन मंदी होगी। ता० ३० को घट-बढ़ से मंदी, ता० १ को १२ या २ बजे से तेजी, ता० ३-४ को घट-बढ़ से मंदी। ता० ५-६ को बाजार एकतरफा रहेगा।

(५) पांचवा सप्ताह—

ता० ७ मई से १३ मई तक एक ही ध्यान है तेजी का, घटे भाव या बढ़े भाव खरीदो। २) २॥) तेजी।

(६) छठा सप्ताह—

ता० १४ से २२ मई तक मंदीका ध्यान है २) ३) का। ता० १४ को घटबढ़, १५-१६ को मन्दी, ता० १७-१८-१६ में घट-बढ़ अच्छी होगी। १६ को बन्द बाजार में घट-बढ़।

(७) सातवां सप्ताह—

ता० २३ से २६ मई तक अच्छी मन्दीकी सम्भावना।

(८) आठवां सप्ताह—

ता० ३० मई से ५ जून तक घट-बढ़ अच्छी होगी, नजराना लगावें। ता० ३०-३१ मंदी, ता० १-३ तेजी, ता० ३ को तेजी लगावें, ता० ४-५ को अच्छी घट-बढ़ होगी।

(९) नौवा सप्ताह—

ता० ६ से १२ जून तक खास ध्यान नहीं बैठता है, कुछ मंदीका ध्यान है। ता० ६-७ को दो तरफा अवश्य लगावें, ता० १०-११ में अवश्य मंदी होगी।

(१०) दसवां सप्ताह—

ता० १३ से २० जून तक अधिक घटबढ़ होगी। ता०

१३ या १५ से तेजी। ता० १८-१६ को दो तरफा अवश्य लगावें। दोनों तरफ लाभ उठानेका अवसर है।

(११) ग्यारहवां सप्ताह—

ता० २१ से २७ जून तक जिसमें २३ तक साधारण तेजी, ता० २४ से अच्छी मन्दीकी सम्भावना है, २४ से नहीं होगी तो ता० २५ से अवश्य होगी। ता० २७ को अच्छी मन्दी।

(१२) बारहवां सप्ताह—

ता० २८ जूनसे ६ जुलाई तक १ दिन तेजी, १ दिन मंदी रहेगी। २८ मन्दी, २६ तेजी इस प्रकार करते रहो। ता० २ को और ६ को अच्छी तेजी होगी।

सं० २०१४ विक्रमीका व्यापार-भविष्य

[श्री पं० विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्य]

गल्ला और तिलहन

सम्वत्सर २०१४ वि० में गल्ला और तिलहनका मार्केट आरम्भमें सम्वत्सर लगनेके बाद बैशाख सुदी १५ तदनुसार दिनाङ्क १३ मई सन् १९५७ ई० तक ग्रह चालसे मन्दीका ही रहेगा। कारण शनि राहु जो ग्रह तेजीकारक वृश्चिक राशिमें चल रहे थे वे ७ मार्च सन् १९५७ ई० को अलग-अलग हो चुके हैं। याद रखना चाहिए कि शनि राहु दोनों ही ने मिलकर गल्ला तथा खासकर तिलहनके मार्केटमें अच्छी तेजीका योग बनाया था, अब आगे यह योग नहीं रहनेसे विपरीत स्थिति गल्ला और तिलहनके मार्केटको रहनी अवश्यम्भावी है। फलतः क्रमशः मन्दीका वातावरण रहना स्वाभाविक होगा, इसके अलावा बुध तथा शुक्रग्रह दोनों ही यहां आरम्भमें अस्त चल रहे हैं जो गल्ला और तिलहन की जिन्सोंको मन्दीमें ले जानेके संकेतको दे रहे हैं।

अर्थ साफ है कि यह मन्दीका योग १४ मई सन् १९५७ ई० तक ही कायम रहेगा। क्योंकि यहां तक ही शुक्र तथा बुध ग्रहोंकी अस्तावस्था बनी रहती है फलतः व्यापारिक अनुमानसे यहां १४ मई तक विशेषकर ३० अप्रैलके आस-पासके समय तक हापुड़, यू० पी० की मण्डी में गल्लेके नीचे भावोंमें मटरा ९), गुवार ९), गेहूं १२), चना ९), अरहर १०), बेजड़ ९), उड़द तैयार १६), ज्वार १०), बाजरा ११), सरसों २२), तारामीरा १८), मूंगफली १२), आसरेमें थोड़े कमती-बढ़तीके भावोंमें मन्दी अवस्थामें अपने व्यापारिक आनुमानिक भाव बना लेगी। जोकि खरीदनेके भाव होंगे। साथ-साथ यह भी स्मरण रखना चाहिये कि फसलके इस अवसरमें बने उपरोक्त भावोंसे मार्केट—अण्डी, मूंगफली, अलसी आदि तिलहनमें भी गल्लेके साथ-साथ ही मन्दियां बनावेगा।

गल्ला-तिलहनका भावी रुख—

ता० १५ मईके बाद तेजीकी लाइन बन जानेसे एक दफा तो लाभके अवसर ठीक हो जावेंगे।

यदि सोमवारके दिन चन्द्रमाका खग्रास चन्द्रग्रहण हो तो यह चूड़ामणि नामका योग होता है, इस योगमें भी चालू मन्दीकी लाइनसे तेजियां बना करती हैं, ये दोनों ही योग यहां सम्वत्सर २०१४ वि० में वैशाख सुदी पूर्णिमा १४ मईसे बन रहे हैं। यहां वृषराशिमें शुक्र उदय हो रहा है उसके बाद वृषराशिकी संक्रान्ति मिती ज्येष्ठ बदी प्रतिपदा से ही लग जाती है, शनि वृश्चिक राशिमें और गुरु सिंह राशिमें दोनों ही अलग-अलग केन्द्रवर्ती हैं और पांच मंगलवार ज्येष्ठ मासमें पड़ते हैं अतः उपरोक्त योग तेजीको चालू करने वाले हैं। अतः ज्येष्ठ माससे पूर्व ही जो व्यापारी गल्ला तथा तिलहनकी व्यापारिक जिन्सोंका स्टाक कर लेंगे गुड़, शक्कर, घृत, तैलको भी खरीद लेंगे वे १४ मईके बादके इस ग्रह चालके योगसे लाभमें रहेंगे। योग परीक्षित है। १४ मईके बादकी व्यापारिक जिन्सोंमें तेजीके अनेक प्रमाण शास्त्रमें मिलते हैं। इस वर्ष रोहिणीके सूर्यमें रोहिणी नक्षत्र भी आ गया है। जो भी यहां तेजीकारक होता है। कहावत भी है कि—

रोहिणी माहे रोहिणी—एक घड़ी जो होय।
हाथमें खप्पर लिये फिरो—भीख न घाले कोय॥

यह योग भी तेजी करेगा, तथा २१ जून को आर्द्रामें जब सूर्यका प्रवेश हो रहा है वहां मङ्गल ग्रह आगे पड़ता है सूर्य पीछे होता है।

आगे मङ्गल पीछे भान। वर्षा होवे ओस समान॥

यहां वर्षाकी खैंचसे भी तेजियां संभव होंगी। परन्तु मिथुनकी संक्रान्ति जो कि ४५ मुहूर्ती लगी है उसके १२ अंश बीतने पर २५ जूनके आस पाससे ही मिथुन राशि में बुध और कर्क राशिमें शुक्रके होने पर मन्दीकी ही ग्रह चाल व्यापार जगत्में बन जावेंगी जो कि प्रायः १ मास तक अपना प्रभाव रखेंगी।

स्मरण रखना चाहिये कि मङ्गलकी अस्तावस्थामें तो मन्दियां रहा करती हैं मगर जैसे जैसे बुध, शुक्र, सूर्य सिंह राशि पर मिलते जायेंगे, तेजियां मार्केटमें उसी प्रकार बढ़ती जावेंगी शनिकी पूर्ण दृष्टि होनेसे तेजी मजबूत हो जावेंगी।

मजबूत तेजीके योग

ग्रह बक्री होकर सिंह राशिमें चल रहा हो मङ्गल ग्रह सिंह राशि पर सूर्यके साथ साथ रहता हुआ अंशोंमें पीछे हो तो गेहूं, चना, जौ, मटरा, अरडर, घृत, तेल रसादि पदार्थ तथा रुई, पाट बारदाना, गुड़, सरसों, अलसी, अरण्डी आदि जिन्सें तेज हो जाती हैं। प्रायः वर्षा की कमीसे तेजियां हुआ करती हैं। जैसा कि व्यापार विज्ञानमें इस सम्वत्सर २०१४ वि० के भादोंके महीनेमें बनने वाले योगका उल्लेख है—

बुधो वक्रि भूतो यदा सिंहराशौ
महीजोऽपि सूर्याद् बली पृष्ठगामी।
सधान्यं रसं तूलिका सूत्रपट्टम्
गुडं सर्षपं वृष्टिदोषान्महर्घम् ॥

जब शुक्र ग्रहके योगसे भी उक्त अवसरमें तेजियां बननेके योग मिलते हैं। कन्या राशिमें शुक्र शीघ्र गतिसे चल रहा हो और बृहस्पति ग्रह भी वहां जब कन्या राशि में अंशोंमें शुक्रसे पीछे हो तो धान्यों में, रसोंमें तथा पाट, बारदाना, गुड़, सरसोंमें, अलसी, अरडीमें वृष्टि दोषसे तेजीके योग बन जाते हैं। यह योग भी थोड़े समयके अन्तरसे ही व्यापारियोंको भादोंमें मिलेगा। जैसा कि 'व्यापार-विज्ञान'में स्पष्ट लिखा है—

यदा कन्यकायां सितः शीघ्रगामी
गुरुः पृष्ठगामि सितात्कन्यकायाम्।
सधान्यं रसं तूलिका सूत्रपट्टम्
गुडं सर्षपं वृष्टिदोषान्महर्घम् ॥

सातवां योग इस तेजी के बाद सं० २०१४ वि० में ही फिर अन्तमें मन्दीका व्यापारिक जिन्सोंमें बन रहा है। वहां दो योग प्रायः मन्दीकी पुष्टीके हैं, इन दोनों योगोंको भी 'व्यापार-विज्ञान'में स्पष्ट किया गया है—

गुरुः कन्यकायां यदा वाऽस्तमेति
महीजोऽपि तत्र स्थितः सूर्यखेटः।
महीजात्पुरो याति सूर्यः स्वगत्या
तथैवापि मान्द्यं भवेद् वृष्टियोगात् ॥७॥
अमान्ते यदा सूर्य भोमेज्यचन्द्राः
ग्रहाः विद्यामानाः यदा कन्यकायाम्।
अमान्तं च सोमस्य वारान्वितं चेत्
तदा स्याच्च मांद्यं बहोः वृष्टियोगात् ॥८॥

अर्थ साफ है कि गुरु ग्रह कन्या राशिमें अस्त हो जावे और मङ्गल ग्रह सूर्यके साथ कन्या राशिमें विद्यमान हो, मङ्गलसे आगे जैसे जैसे सूर्य अपनी गतिसे बढ़ेगा, वैसे वैसे व्यापारिक जिन्सोंमें मन्दियां भी बनेंगी। वर्षाके योगसे मन्दियां संभव होंगी। जबकि अमावस्यामें सूर्य, मङ्गल, गुरु, चन्द्रमा चार ग्रह कन्या राशिमें एकत्र हों और वह अमावस्या सोमवारकी हो तो वर्षाके योगसे व्यापारिक जिन्सोंमें व्यापक मन्दियोंके योग बना करते हैं। ये योग आश्विन मासमें विज्ञ व्यापारियोंको मिलेंगे। जहां मन्दीमें माल खरीदना भी ठीक रहेगा।

नवां योग पौष मासमें तेजीका व्यापारियोंको मिलेगा जिसका भी पूरा ब्योरा 'व्यापार-विज्ञान'में दिया है।

तुलायां यदा राहु देवेज्य योगः,
तथा वृश्चिके सूर्यजो भौमयुक्तः।
ग्रहाः सौम्य सूर्येन्दवश्चापगाः स्युः
महर्घं महत्स्यात् सिते नक्रगेऽपि ॥९॥
अमान्ते गतौ सूर्यचन्द्रौ च चापे
बुधो वक्रि भूतो गतश्चापि तत्र।
अमान्तं च मन्दस्य वारान्वितं चेत्
महर्घं महत्स्यात्सिते नक्रगेऽपि ॥१०॥

अर्थ साफ है कि तुला राशिमें जब बृहस्पति राहुका योग हो तुलासे अगली वृश्चिक राशिमें शनि मंगल दोनों बैठे हों और वृश्चिकसे अगली राशि धनुमें बुध, सूर्य, चन्द्रमा बैठे हों और धनुसे अगली मकर राशिमें शुक्र हो तो लगातार सभी ग्रहोंके क्रमशः इस प्रकारके योगमें व्यापार सम्बन्धी प्रत्येक वस्तुमें अच्छी तेजीके योग बन जाया करते हैं।

यदि वा अमावस्यामें सूर्य, चन्द्रमा जब एक साथ योग करते हों, ये धनुः राशिमें जब मिलते हैं वहां यदि बुध ग्रह धनुः राशिमें बक्री चल रहा हो, और अमावस्या पौषकी शनिवारी अथवा मंगलवारी हो तो बहुत अच्छी तेजीके योग बन जाया करते हैं। मकरके शुक्रमें भी ऐसा ही होता है। ये दोनों ही योग तेजीकारक पौष मासमें १४ जनवरी ५८ से पूर्व व्यापारियोंको मिलेंगे। इस तेजीके योगमें पिछले खरीदे मालको बेच देना चाहिये और भाव मन्दीके वास्ते ज्येष्ठ वायदोंका बेचान भी फालतू करना व्यापारियों को वहां लाभदायक रहेगा। स्मरण रखना चाहिये कि यहां तेजीके अवसरमें अलसी, अरडी, सरसों, गल्लेमें मटरा,

अरहर, चना वायदोंका बेचान किया जा सकता है। गुड़ वायदा फागुन भी बेचना अच्छा रहेगा १४ जनवरी ५८ के बाद लम्बी व्यापारिक लाइन मन्दीकी चालू हो जाती है।

रुई, पाट, बारदाना

रुई—इस वर्षमें रुईके शुक्र और गुरु ग्रहोंकी स्थिति से सम्वत्के आरम्भमें प्रायः भाव सुधरे हुवे ही रहेंगे। ता० १७ अप्रैल सन् १९५७ ई० से ही काटन मार्केटमें ग्रह चाल द्वारा मन्दीकी लाइन बन रही है। आकाशमें चढ़े हुये भावोंमें आश्चर्यजनक मन्दीके योग बन रहे हैं। विजय जून वायदा ८२३) रु०, विजय अप्रैल ८६७॥) आसरेमें अब मार्च सन् १९५७ ई० के द्वितीय सप्ताहमें भाव हैं। जबकि जरीला मई ६८०) आसरे है, जो ऊँचे भाव ही हैं। किसी समय १००), १२०) टकेकी मन्दी रुईमें १४ मई तक ग्रह चालकी मन्दीके योगसे यहाँ बननी पूर्ण संभव होगी। बादमें इसमें भी मन्दीके बाद तेजियां बनेंगी। स्मरण रखना चाहिये कि अगस्त वायदों में भी काटन मार्केट में बड़ी जबरदस्त घटाबढ़ी होंगी। एक २ दिन मे २०) २५) रु०, खण्डी तक घटा बढ़ी चलेगी।

कलकत्ता मार्केटमें—

विठ्ठल—ऊँचेमें सम्वत्सर २०१४ वि० में १२५) नीचे में ८०) बनेगा। टाटा तैयार ऊँचेमें ५५) नीचेमें ३५, फिर भी १२ अक्टूबरके बाद अच्छी तेजियां जूट मार्के[illegible] में मिलेंगी। पाट बारदानेमें भी अच्छे चांस बनेंगे। वैशाख श्रावण आश्विन मन्दीके मास होंगे, बाकी समयमें तेजियां बनेंगी।

गुड़, शक्कर, चीनी, देशी खाण्ड

गुड़ नीचेमें ९) ऊँचेमें १४) रु० खाण्डसारी नीचे १८) ऊँचे में २५) चीनी ऊँचे में ३२) नीचे में २७) हापुड़ मण्डी में बिकेगी।

सूती, ऊनी, रेशमी कपड़ा

जूनमें तथा सितम्बरसे नवम्बर तक विशेष तेजियां रहेंगी। १४ मई तक खरीदे मालमें नफेके योग होंगे।

शेयर्स आर्डनरी आइरन

शेयर मार्केटमें इस सम्बत्सरमें भी बड़ा ही हेरफेर होगा। आर्डीनरी ऊँचे में २००), नीचेमें १९०), आइरन नीचेमें १८) ऊँचेमें २८), सेंचुरी ऊँचेमें ४८०) नीचेमें ४५०), इसी प्रकारसे अन्य विभिन्न शेयरोंमें भी तेजी मन्दियां चलेंगी। विशेष कर तेजी मन्दियां अप्रैल, जून, अगस्त, अक्टूबर मासोंमें निकलेंगी।

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय पंचांग' से]

अप्रैल १९५७ ई०

ता० १० बुधवार—कामदा एकादशीव्रत स्मार्त्त गृहस्थियोंका

११ गुरुवार—एकादशीव्रत वैष्णवसम्प्रदायका।

१२ शुक्रवार—प्रदोषव्रत अनङ्ग १३ श्रीमहावीर (जैन) जयन्ती

१३ शनिवार—मेषसंक्रान्ति पुण्यकाल मु० ३० मेला वैशाखी।

१४ रविवार—चैत्री १५ सत्यव्रत वैशाख स्नानारम्भः।

१७ बुधवार—श्रीगणेशचौथ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० रात्रि ९।४८

२५ गुरुवार—वरूथिनी एकादशी व्रत श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती।

२७ शनिवार - शनिप्रदोष व्रत।

२९ सोमवार—सोमवती अमावस।

मई १९५७ ई०

ता० १ बुधवार—चन्द्रदर्शन श्रीशिवाजी जयन्ती।

२ गुरुवार—अक्षया ३ श्रीपरशुराम जयन्ती।

४ शनिवार—श्रीशङ्कराचार्य जयन्ती।

५ रविवार—श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती।

६ सोमवार—श्रीगंगा ७।

१० शुक्रवार—मोहिनी एकादशी व्रत।

११ शनिवार—शनिप्रदोष व्रत।

१२ रविवार—श्रीनृसिंह १४ जयन्ती व्रत।

१३ सोमवार—वैशाखी १५ सत्यव्रत बुद्धजयन्ती चन्द्रग्रहण उज्जैनसिंहस्थ (कुम्भपर्व) स्नान वैशाखस्नान समाप्ति।

१४ मंगलवार—वृषभसंक्रान्ति पुण्यकाल मु० ३०।

१७ शुक्रवार—श्रीगणेशचौथ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० रात्रि १०।९।

२५ शनिवार—अप रा (भद्रकाली) एकादशी व्रत।

२६ रविवार— प्रदोषव्रत।

२९ बुधवार—वटसावित्री अमावस वटपूजन।

३० गुरुवार—चन्द्रदर्शन मु० ३०

जून १९५७ ई०

ता० १ शनिवार—श्रीमहाराणाप्रताप जयन्ती।

७ शुक्रवार—श्रीगंगा दशहरा।

८ शनिवार—निर्जला एकादशी व्रत।

९ रविवार—प्रदोष व्रत।

११ मंगलवार—सत्य व्रत।

१२ बुधवार—ज्येष्ठी पूर्णिमा कबीरजयन्ती।

१४ शुक्रवार—मिथुन संक्रान्ति पुण्यकाल मु० ३०।

१५ शनिवार—श्रीगणेशचौथ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० रात्रि ९।२७

२४ सोमवार—योगिनी एकादशी व्रत।

२५ मंगलवार—भौमप्रदोष व्रत।

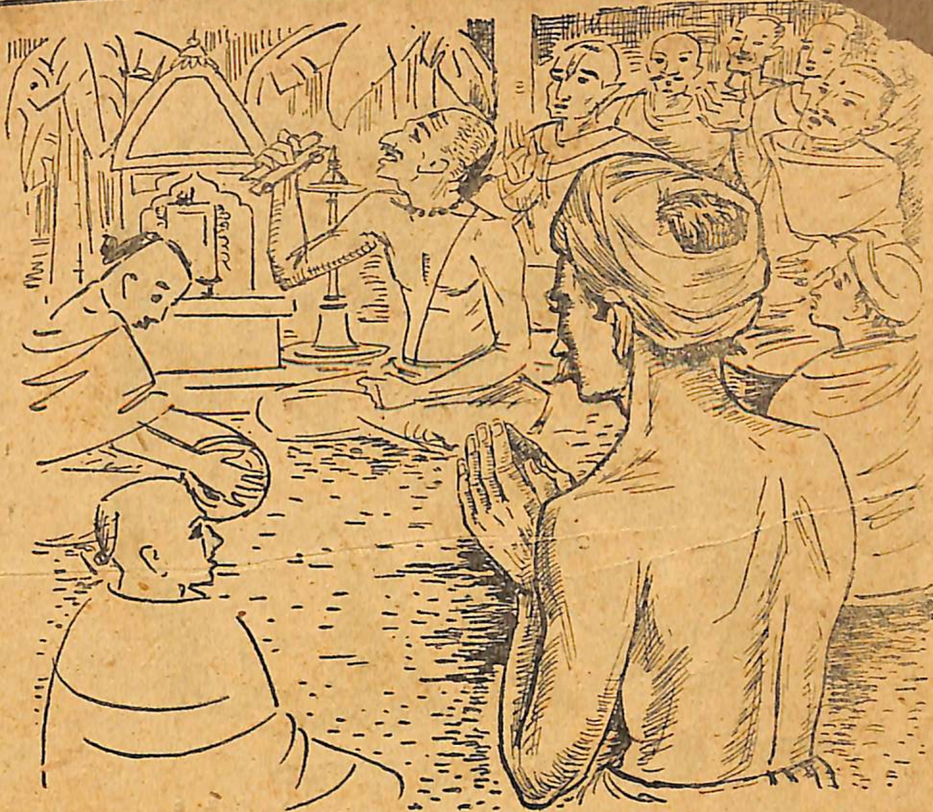
२७ गुरुवार—अमावस्या।

२९ शनिवार—चन्द्रदर्शन श्रीजगदीश रथयात्रा उत्सव

५ जुलाई शुक्रवार—भड्डुली ९

सूर्यबुध भेद-युति

बैशाख शुक्ला ७ सोमवार ता० ६ मई १९५७ ई० को प्रातः ७।५० पर सूर्य बुधकी भेदयुति ,होगी। यों तो प्रायः बुध सूर्यके समीप ही रहता है और वर्षमें कई बार सूर्य बुधका योग होता रहता है, परन्तु भेद युति कई वर्षोंके बाद होती है। जब बुधका दक्षिणोत्तर शर सूर्य-बिम्बार्धसे कम हो उस समय बुध तारा ठीक सूर्य बिम्बके नीचे होकर निकलता है उसे भेद-युति कहते हैं। जिस प्रकार जिस अमावस्याको सूर्यबिम्बके ठीक नीचे जिस भूभाग पर चन्द्र बिम्ब आकर सूर्यको ढक देता है वहां सूर्यग्रहण दिखाई देता है, इसी प्रकार बुध, भेद युतिके समय भी सूर्य-बिम्बमें प्रवेश करता हुआ बुधका तारा छोटे काले बिन्दु (सूर्य बिम्बमें मक्खी) जैसा दूरवीक्षण यंत्र (दूरबीन) से दिखाई देता है। बुध बिम्ब बहुत छोटा होनेसे बिना यंत्रोंकी सहायताके यह खगोलीय चमत्कार नेत्रोंसे दिखाई नहीं देता। यह बुध भेदयुति गत सन् १९२७ ई० में १० नवम्बरको हुई थी। आगे ता० ९ मई १९७०, ता० १० नवम्बर १९७३, ता० १३ नवम्बर १९८६ और ता० ६ नवम्बर १९९३ को भारतमें बुधकृत भेदयुति दृष्टिगोचर होगी।



यह उनका अधिकार है . . .

"मंदिर में प्रवेश करना आध्यात्मिक क्रिया है जो अछूतों को स्वतंत्रता का सन्देश देगी और उन्हें विश्वास दिलाएगी कि वे परमात्मा के सम्मुख जातिभ्रष्ट नहीं हैं।"

—महात्मा गांधी

भारतीय संविधान ने अस्पृश्यता का उन्मूलन कर सब व्यक्तियों को समान नागरिक और सामाजिक अधिकार दिए हैं।

छूतछात को छोड़ो
दिल को दिल से जोड़ो

DA 56/243



ईश्वर के सम्मुख सब बराबर . . .

"मंदिर में प्रवेश करना आध्यात्मिक क्रिया है जो अछूतों को स्वतंत्रता का सन्देश देगी और उन्हें विश्वास दिलाएगी कि वे परमात्मा के सम्मुख जातिभ्रष्ट नहीं हैं।"

महात्मा गांधी

भारतीय संविधान ने अस्पृश्यता का उन्मूलन कर सब व्यक्तियों को नागरिक और सामाजिक अधिकार समान दिए हैं।

कोई भी व्यक्ति किसी को सार्वजनिक पूजा के स्थान में जो कि उसी धर्म के अनुयायी अन्य व्यक्तियों के लिए खुले हैं, प्रवेश करने से मना नहीं कर सकता। अथवा वह सार्वजनिक पूजा के स्थान पर पूजा करने, प्रार्थना करने, या कोई अन्य धार्मिक सेवा के कार्य करने के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता, क्योंकि ये अधिकार एक ही धर्म के सब अनुयायियों के लिए समान हैं।

छूत छात को छोड़ो—दिल को दिल से जोड़ो

DA-56/208